मासिक ई-पत्रिका
भोजपुरी
2015 अक्टूबर,अंक: 9

आखर

एगो डेग भोजपुरी साहित्य खाति

लोकनायक

आखर
दू
बरिस facebook
पेज के

ISSN 2395-7255

प्रकाशन / संपादन मंडल :
संजय सिंह , सिवान
देवेंद्र नाथ तिवारी , वर्धा
शशि रंजन मिश्र , नई दिल्ली
नबीन कुमार , दुबई

तकनीकी -एडिटिंग, कम्पोजिंग
अश्विनी रूद्र , न्यू यॉर्क
अनिमेष कुमार वर्मा , अबू धाबी
छाया चित्र सहयोग
स्वयम्बरा बक्सी , पी. राज सिंह,

आखर पता
ग्राम पोस्ट- पंजवार (पोखरी)
सिवान , बिहार 841509
क़ानूनी सलाहकार
ललितेश्वर नाथ तिवारी , पटना

ISSN: 2395 –7255

आखर

वर्ष: 2015, अक्टूबर। अंक 9। **ई - पत्रिका**
सब पद अवैतनिक बा।

बतकूचन
सौरभ पाण्डेय
5

सिताब -दियारा
पी॰ राज सिंह
12

सम्पूर्ण विकास के प्रणोता : जयप्रकाश नारायण
नैय्यर इमाम सिद्दीकी
9

महेंदर बाबा के जाली नोट– एगो विवेचना
उदय नारायण सिंह
22

कहे के त सभे केहू आपन !
सुमन सिंह
41

भोजपुरी में सांस्कृतिक कार्यक्रम
अतुल कुमार राय
51

भोजपुरी के दूकान
जितेंद्र वर्मा
55

दू गो लघुकथा
केशव मोहन पाण्डेय
45

परामर्श मंडल
प्रभाष मिश्र , नासिक
अतुल कुमार राय , बनारस
धनंजय तिवारी , मुंबई
चंदन सिंह , पटना
बृज किशोर तिवारी , सोनभद्र
सुधीर पाण्डेय , दुबई
पंडित राजीव , फ़रीदाबाद
अजित तिवारी , दिल्ली
अमित मिश्र, डुमरांव

आखर में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरुरी नइखे की संपादक के विचार लेखक के विचार से मिले । लेख पे विवाद के जिम्मेदारी लेखक के बा।

संपर्क : आपन मौलिक रचना , लेख ,कविता , फोटो , विचार आखर के ईमेल-आईडी aakharbhojpuri@gmail.com पे भेज सकेनीं। सुविधा खातिर रचना हिंदी यूनिकोड में ही भेजीं।
मुख्य पृष्ठ छाया/आवरण : फोटो साभार : Life Magazine , अनिमेष कुमार वर्मा , अश्विनी रूद्र

www.aakhar.com | facebook/Aakhar | Twitter : @aakharbhojpuri

www.bhojpurisahityangan.com

आखर के फुलवारी

आपन बात : आखर जमात 4
बतकूचन : सौरभ पाण्डेय 5
सम्पूर्ण विकास के प्रणोता... : नैय्यर इमाम सिद्दकी 9
जेपी : सम्पूर्ण क्रांति के सूत्रधार : कुणाल गौरव 11
सिताब-दियारा : लोकनायक के गाँव : पी.राज सिंह 12
जयप्रकाश नारायण : मनोरमा सिंह 15
जेपी आंदोलन के सांस्कृतिक पक्ष : सरोज सिंह 17
मुनादी(अनुवादित) : धर्मवीर भारती 18
लोकगीत : विजया भारती 20
माटी में खेले के मन करता : आलोक पाण्डेय 21
महेंदर बाबा के जाली नोट –एगो 22
विवेचना: उदय नारायण सिंह
महेंदर मिसिर के लोग गीतन में नारी : सुस्मित सौरभ 25
लोक के दिल में बाकी इतिहास के कगरी
पऽ-महेंदर मिसिर : मुन्ना पाण्डेय 27
महेंदर मिसिर : चंदन तिवारी 31
एगो अनमोल प्रेम कथा : समता सहाय 32
फोक के झोंप में भुलाइल लोक के तलाश
भाग 2 : प्रमोद कुमार तिवारी 33
दू गो ग़जल : सूर्यदेव पाठक 36
सांसत में बा जान : मंजुला उपाध्याय 37
दिशाहीन : अनिल प्रसाद 37
भरोसा : हृषिकेश चतुर्वेदी 38
मंजिल मिलहीं के बा : प्रभाष मिश्र 38
गीत : पंकज यादव 39
शास्त्रीय संगीत आ हमरा जइसन अनूप श्रीवास्तव 40
पुरबिया :
कहे के त सभे केहू आपन : सुमन सिंह 41
कहाँ जा रहल बिया भोजपुरी : पंकज भारद्वाज 43
दू गो लघु कथा : केशव मोहन पाण्डेय 45
छनुकी : अरविंद पाठक 46
बिदेसिया के पाती : निराला जी 47
बचपन : जलज कुमार 50
भोजपुरी में सांस्कृतिक कार्यक्रम : अतुल कुमार राय 51
रावण से संवाद : अनिमेष कुमार वर्मा 53
सत्ता सुख के गणित : बेकल बेकार 54
भोजपुरी के दूकान : जीतेंद्र वर्मा 55
लघु कथा : कफ़न : डॉ. उमेश जी ओझा 56
भोजपुरी के उत्पत्ति : रीता सिन्हा 56
भोजपुरी त्याग करे वाली भाषा
हियऽ : अर्जुन तिवारी 57
दू गो गीत : नुरैन अंसारी 59
दिल, जब बच्चा था जी : ब्रिज किशोर तिवारी 60
जेपी आंदोलन आ भारतीय 61
राजनीति : गौरव सिंह
आरा : धरोहर के बचावे के पहल : आस-पास 64
बचपन के गंगुवा : मनोज कुमार 65
आखर फेसबुक के दू साल : आखर 70
घोड़ा : अनन्या प्रसाद 71
ख़ुशी : ज्योस्तना प्रसाद 71
राउर बात : आखर के ओर से 72
निहोरा : आखर के ओर से 73

आपन बात

15 अगस्त 1947 के देश आजाद भइल । उमंग आ उल्लास परवान चढ़ल रहे । काहें ना चढ़ो ? बरिसन के संघर्ष फलिभूत भइल रहे । संघर्ष के घरी देखल गइल सपना साँच होखे वाला रहे । स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उपजल सारा मूल्यन के जमीन मिले वाला रहे । आपन शासनाध्यक्ष, आपन राष्ट्राध्यक्ष, आपन संविधान, आपन संसद आ आपन सरकार आइल । नेहरु के नेतृत्व रहे, राजेंद्र बाबू के बरगद अस छाया रहे, आजादी के लड़ाई में योगदान देबे वाला लोग सरकार में मंत्री रहे आ सबसे बढ़के महात्मा गांधी के आशीर्वाद रहे । देश प्रगति पथ पर चल पड़ल । संसाधन के अभाव राजनीतिक ईच्छाशक्ति के आड़े ना आइल । देश के निर्माण होखे लागल । हमनी के सामने कइ गो सामरिक चुनौती अइली सन । 1948 के युद्ध, 1962 के चीन के आक्रमण आ पाकिस्तान के साथे 1965 आ 1971 के युद्ध में भारतीय सेना अपना बलिदानी परम्परा के बेर- बेर देखवलस । 1971 के युद्ध में भारत एगो राजनीतिक, कूटनीतिक आ सामरिक ताकत के रुप में उभर के सामने आइल । दुनिया भर के देशन में भारत के चर्चा होखे लागल । देश के जनमानस एकर सारा श्रेय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के दिहलस । देवी दुर्गा के रुप में देखल गइल इंदिरा जी के । व्यक्ति-पूजा के माहौल में इंदिरा जी भी अपना में देवत्व देखे लगली । बात संविधान से टकराव तक आइल । मूल अधिकार के मर्यादा ना रह गइल । दमन के दौर चलल । राजनीतिक विरोधियन के निशाना बनावल गइल । समय एगो उद्धारक मांगत रहे । एहि समय में लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी परिवर्तन के शंखनाद कइनी । चारो ओर एकही आवाज गूँजे लागल -

"अन्हरिया में एकही प्रकाश,
जयप्रकाश ! जयप्रकाश !!"

युवा जयप्रकाश के मन पर समाजवादी विचारधारा के जबरदस्त असर रहे । ई स्वाभाविक भी रहे । विपरीत परिस्थितियन में अमेरिका से उच्च शिक्षा प्राप्त करत घरी पूंजीवादी जमीन के बहुत करीब से देखले रहनी जयप्रकाश जी । सामाजिक ,आर्थिक आ राजनीतिक विषमता के निरखले रहनी जयप्रकाश जी । जवना समय में अमेरिका में पढ़ाई करत रहनी, ओहिघरी विश्वव्यापी आर्थिक मंदी आपन पैर पसरले रहे । पुरा यूरोप तबाह हो गइल रहे । एह मंदी में भी दुनिया के एकमात्र देश सोवियत रुस अपना के सम्हरले रहे । रुस के आर्थिक स्थिरता के वजह समाजवादी विचारधारा के मानल गइल । युवा जेपी पर एकर एतना गहिर असर भइल कि समाजवाद के ओढ़ना-बिछौना बना के समाजवादी राज्य के स्थापना खातिर संघर्ष करे में जीवन आहूत हो गइल । 1970 के दशक देश में भारी बदलाव ले आइल । इंदिरा गांधी के नेतृत्व चमत्कारिक रहे । पाकिस्तान विजय के बाद पोखरण परमाणु परीक्षण देश के सिर उँचा क देले रहे । पता ना काहें, इंदिरा जी देश सुधारत-सुधारत देशवासी लोग के सुधारे पर भीड़ गइली । गुणात्मक सुधार ना वैचारिक सुधार । जे उनका साथे रहे से निमन, जे विरोध कइल उ कारागार में । आपातकाल के आँच में जर के देश लहूलुहान हो गइल । समानता, स्वतंत्रता, न्याय आ बंधुता चित्कार करे लागल । एह घाव पर मरहम लगावे खातिर एगो मसीहा सामने आइल । ओकर संघर्ष ओकरा के लोकनायक बना दिहलस । राजनीतिक परिवर्तन के आंधी में सारा घमण्ड उधिया गइल सताधारी दल के । तय हो गइल रहे कि भारत लुई चौदहवाँ के राह पर नइखे चल सकत । ओकर राह पूर्व निर्धारित बा । लिच्छवी गणराज्य के राह, चोल साम्राज्य के राह, गांधी के रामराज्य के राह ही भारत के नैसर्गिक राह रहल बा, आ आगे भी रही । अक्टूबर महीना में लोकनायक के जन्मतिथि आ पुण्यतिथि दुनू पड़ेला । कोटि -कोटि नमन एह महामानव के ।

महेंदर मिसिर के नाम से शायदे कवनो भोजपुरिया अनजान होई । बिरहिन के मन के हलचल के जवना उँचाई पर ले जाके बइठा देले बानी मिसिर जी, उ भोजपुरी साहित्य के धरोहर बा । पति-पत्नी, ननद-भौजाई आ गोतिनी सन के बीच के संवाद जब गीत बन के मिसिर बाबा के कंठ से फुटे त स्वर्ग जमीन पर उतर आवे । अप्सरा लो नाचे लागे । ढेला बाई एगो अप्सरा हीं त रहली । महेंदर मिसिर आ ढेला बाई के प्रेम आजुओ रहस्य के पर्दा में बा, लेकिन ओह प्रेम से उपजल विरह, दरद, आ व्यथा के भोजपुरिया समाज अपना लेले बा । आजुओ जब नायिका परदेस बसल अपना प्रेमी के याद करेले त "ओकरा अँगुरी में नागिन डँसेले ।" आजुओ हरसिंगार से सजल बिस्तर पिया बिना सुन लागेला त "कोयल कुहूकेले ।" मिसिर जी के जीवन के दूसरका पहलू उँहा के स्वतंत्रता संग्राम के एगो नायक के रुप में स्थापित करेला । मानल जाला कि नोट छापे वाला मशीन से जेतना नोट छपाव ओकर हिसाब उँहा के अपने राखीं । व्यक्तिगत काम में एक रुपया भी खर्च ना होखे । सारा पइसा स्वतंत्रता संघर्ष खातिर अर्पित क दियाव । सरदार भगत सिंह के हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी सो लेके मास्टर सूर्यसेन दा के संगठन तक पइसा पहुँचे । इतिहास एह नायक के प्रति चुप्पी सधले बा लेकिन भोजपुरिया समाज खुद सामने आइल बा अपना नायक के व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनिया के सोझा राखे खातिर । नमन एह पवित्र हृदय के ।

आज से दू साल पहिले "**आखर**" अस्तित्व में आइल । सोशल मीडिया पर भोजपुरी में बहुत कम लिखाव । जवन सामने आवे ओमे से अधिकांश पद्य शैली में रहे । भोजपुरी में गद्य लेखन के महान परम्परा रहल बा । आखर के सोच रहे कि ई परम्परा तबे आगे बढ़ी जब युवा पीढ़ी भोजपुरी लिखे खातिर प्रेरित होई । "आखर" एगो अभियान शुरु कइलस । भोजपुरी गद्य लेखन प्रतियोगिता शुरु भइल । पुरस्कार के रूप में भोजपुरी के स्थापित साहित्यकार लोग के किताब डाक से विजेता लोग तक पहुँचावल जाव । ई एगो क्रांतिकारी पहल रहे । देश-दुनिया के कोना-कोना से युवा साहित्यकारन के रचना आवे लगली सन । फेसबुक पर भोजपुरी लिखल अब "लाज" के विषय ना रह गइल । भोजपुरी साहित्य के मजबूत करे के मुहिम में "आखर" लगातार लागल बा । फेसबुक, ट्वीटर, यू ट्यूब, वेब आ ई -पत्रिका के माध्यम से भोजपुरी साहित्य के डिजिटलाइज्ड कइल जाता । **हर साल 3 दिसम्बर के भोजपुरिया स्वाभिमान सम्मेलन के माध्यम से भोजपुरिया समाज के बीचे अपना कमी बेसी के मूल्यांकन कइल जाता** । पिछला दू साल के यात्रा के उपलब्धि कल्पना से परे बा । "आखर" के उपलब्धि ई बता रहल बा कि भोजपुरिया मन से जवन भी ठान ली उ पूरा कर के रही ।

साहित्य के हर विधा से लैस, अपना महान लोग के याद करत "आखर" ई-पत्रिका के नवका अंक रउरा हवाले बा । सुझाव आ प्रतिक्रिया खातिर पलक बिछवले-

- आखर टीम

बतकूचन...

सौरभ पाण्डेय

कमाण्डर भरि चलल रहे । भरल का 'ठुँसाइल' कहल सही रही । शीशमहल के 'रुपहला परदा' आला हॉल के तिमुहानी से ऊ गड़िया अब चलहीं के रहे । ड्राइवर 'शिखर' के भरभरात पुड़िया अपना मुँहें ओड़लस आ इस्टेरिंग धऽ के उहँवें अँड़सि गइल ! ऊहो अइसना तरे जे ओकर बइठाढ़ी के अधवा टेकन बहिरी हावा में लटकल रहि गइल । ओह ड्राइवर के लेले अगवा आला सीट प तीन अउर जाना बइठल रहले ।

"गोड़ ना होने करऽ काका.. आकि तूँहीं इस्स्लेटर चाँपे प बाड़ऽ ?.." - ड्राइवर अपना बगल के काका अस लउकत गँवई प चिहुँकल - "..उमिर निकल गइल, बाकी बान ना गइल ?.. "

गाड़ी के भितरी अँउझाइल-लोक अचके में हँसलोक भ गइल । काका बेचारू कछात आपन गोड़ हाल्दे का घिंचले, गीयर के मूँठा उनका जाँघे खोभा गइल - "आह्याऽऽहि.. प्रान त ले लिहलऽ ए बबुआ !.."

"होस धरऽ काका होस धरऽ ! अपनहीं प अत्याचार करबऽ का अब ?"

ड्रइवरवा के हइसना फिकरा प काका से ना बोलत बने ना अब चुपात बने । लोगन के हँसी में उनकर पीड़ा बिसबिसाइ के रहि गइल ।

कमाण्डर के बीचवा वाला सीट 'महराजा' सीट होला । अपना के बड़ मनई बूझत लोग ओही प चोट मारेला । बाकिर, एहू में पाँच जाना अस्थिराहे कोंचाले । तबहूँ छठवाँ के जोगाड़ बनल रहेला ! बशर्ते ऊ छठवाँ दिलेर होखो ! दबङ होखो ! छरफर होखो ! छरफर अइसन, जे हेने ड्राइवर गाड़ी चँपले होखे, आ होने ऊ आपन मूड़ी के गाड़ी से हाथ भर उप्पर कइले झोंकत-झँकारत हावा में आपन फहरत बार के सोहरावत-सम्हारत झूलत रहो ! राहता के लउकत मरद-मेहरारू प 'का हो बाबाऽऽ.. कटी नूऽऽ', भा, 'का हो भउजीऽऽ.. इयाद बानीं नूऽऽ..' करत टिटकारी पारत रहो । रउआ बेंवत में अगर ई कूल्हि नइखे त रउआ रहे दीहीं । आ रउआ कुछऊ कहत रहीं, ईहे आजु के भोजपुरिया जवानन के 'अंदाज' कहाता ।

कमाण्डर के पाछा आला दूनो सीटन प जइसे एगो अलगे दुनिया के लोग अस्थान बना लेले । ऊ लोग देहिये ना बिचारो से बिसुद्ध सवारी होले । आठ के जगहा अठारह मनई काहें ना कोंचा जाओ, लोग कुरुकत रहि जइहें, बाकी केहू मुँह उठाइ के बोली ना । सोझबग बकरी-बोका अस ऊ मनई-मेहरारू, बन्हाये आ पगुराये का आगा सोचबो ना करे । आपन-आपन गाँव ले चहुँपे भर से मतलब रहेला सभके - "एह गड़िया प कवनो बथान साजे के बा जी, जे बखेरा कइल जाओ ? अइसहूँ मुँह ढेर ना बावेके, आ नाहीं ढेर गोड़ फइलावे के.."

गाड़ी अबहीं निकहा हिललो ना रहे कि इस्पीकर से घोर बिस्फोटक अवाज में 'करेजऊ-करेजऊ.." के गोहार फूटि चलल ।

"बन्न करऽ महाराज.. " - बीचवा आला सीट प के लहीम-सहीम एगो फरहर बुजुर्ग ओही ताव में अनमनइले ।

"का बाबाऽ, काहें ? एह जमाना के जवानी रूचत नइखे ?.."

एह टिटकरी प जवन ना ठहाका लागल कि गाड़ी बढ़ला के 'मौसम' खूलल अस भ गइल ।

"बन करु रेः ! बन कऽ दे !.. साँझि भइला प दुपहरिया के चरफरई रूचे ना.. " - पाछा से केहू टीसत अवाज में फेंकरल ।

गाड़ी दुबहड़ ना चहुँपल रहे, तले फेंटा बन्हले सात-आठ गो जवान ररेठा के तीन-साढ़े तीन हाथ के डाँठ लेले, जाने केने से अचके में बीच सड़किये प आ गइलन सऽ । गाड़ी एकदम से झटका खात, चेंचियात थम गइल । ड्राइवर के बोली भाव कूल्हि बदल गइल रहे - "का ए भइयाजी, जीये ना देबऽ जा ? अबगे नू जात खा पचास गो रोपया दिहनीं हाँ । दुर्गा माई हमनियो के हई महराज !"

"कवना के गाड़ी हऽ रे ? के हऽ तोर मालिक ?" - एगो तींत घिंचात आवाज काने परल ।

"सोनबरसा के पधियाजी के हऽ भइया ! बाकि का कहब हम हे

सौरभ पाण्डेय

सौरभ पाण्डेय जी के पैतृकभूमि उत्तरप्रदेश के बलिया जनपद के द्वाबा परिक्षेत्र हऽ । रउआ पचीस बरीस से सपरिवार इलाहाबाद में बानीं । पिछला बाइस बरीस से राष्ट्रीय स्तर के अलग-अलग कॉपोरेट इकाई में कार्यरत रहल बानी । आजकाल केन्द्रीय सरकार के परियोजना आ स्कीम के संचालन खातिर एगो व्यावसायिक इकाई में नेशनल-हेड के पद पर कार्यरत बानी । परों को खोलते हुए (सम्पादन), इकड़ियाँ जेबी से (काव्य-संग्रह), छन्द-मञ्जरी (छन्द-विधान) नाँव से राउर किताब प्रकाशित हो चुकल बाडी स । साहित्य के लगभग हर विधा में रउआ रचनारत बानीं आ हिन्दी आ भोजपुरी दूनो भासा में समान रूप से रचनाकर्म जारी बा । साहित्यिक संलिप्तता के दोसर क्षेत्र बा - सदस्य प्रबन्धन समूह ई-पत्रिका,"ओपनबुक्सऑनलाइन डॉट कॉम' ; सदस्य परामर्शदात्री मण्डल त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वगाथा' ।

चन्दा प उनका से ? हमरे में से कटाई नूऽ.."

"तोर पधियाजी बिदेस के फरल हवे का रे ? उनका अतना ज्ञान नइखे जे दसहरा अब कपारे लटकल लउकऽता ?.. आ ई कूल्हि सवरिया.. जे बइठवले बाड़े, का ओही पारी वाली हऽ ? आकि बे भाड़ा के एह लोगन के घुमावऽतारे ?" - ओह जवान के एक साँस में अतने सवाल अमा सकल। बाकि, एह सवालन से जतना रुआब बुझवावे के रहे, ऊ सभके बुझा गइल। तले छब्बीस-सताइस बरिस के भुअरअँक्खा जवान ड्राइवर प छनकल गारी पढ़त, लागल चिकरे - "चोऽऽप्प.. स्साला बकइती कइले बा ! जाके कहि दीहे अपना बाप से.. जे जेपी भेंटाइल रहले.. आ हर खेप प पचास रोपया ले तारे.."

"काल्हुए भइया काल्हुए ! सङहीं लेले आइब उनका। सलटा लेब रउआ कूल्हि उनके से. बाकी अबहीं ना सकब ए महराज !.."

"काल्हु के काल्हु देखल जाई, अबहीं हाथ में पचास गो धरु, आ जो.. आ ना.. त कगरिये ठाढ़ कर गाड़ी.." - कहत ना कहत जेपी गाड़ी के बोनट पर ठायँ-ठायँ दू फट्टा घींच दिहले - "का हो लालूऽऽ ? रसीदवा के पर्चियन में गाँजा पियबऽ का ? ना धरावेला एकरा हाथे ! सुशीऽऽल.. ! निकालऽ रसीद महराज !" - ऊ जेपी फेर ड्राइवर के घुरियवले - "चल रे तें.. चन्दा दे आ आगा बढ़ु.."

ई कहत ना कहत जेपी बलाते ड्राइवर के बगली में हाथ डाल दिहले आ टोअत कूल्हि कागज-पत्तर, नोट बहिरी घींच लिहले। नोटियन में से पचास के एगो पत्ता आपना बगली में चमुड़ियावत धऽ के कूल्हि कागज-पत्तर आ बकिया नोट वापस ड्राइवर के बगली में ठूँसि दिहले। एही चीखम्चिल्ली में बिचका सीट प के ओही बूढ़ के आँख खूलि गइल - "का भइल हो ?"

"कुछऊ ना जी, लइका हवे सऽ, दुर्गा पूजा के चन्दा असुले में लागल बाड़े सऽ" - पाछा से ऊहे अवाज में जवाब आइल।

"दुर्गा पूजा ? इहवाँ ?"

"काहें बाबा ? कौ बरिस प पलटल बानीं रउआ ? अब ई कूल्हि सालेसाल ना, हर महिनवे के बात भ गइल बा ! कवना नाँवे चन्दा नइखे असुलात ?! बलुक अब त कीर्तन आ जगरना तक के चन्दा असुलाए लागल बा !"

"राम भजीं !.." - बाबाजी जइसे उसाँसी भरले। फेरु सँकारत बोले लगले - "हँ बबुआ हम कदमकुआँ के बन के रहि गइल बानीं अब.."

बाबा के मुँह के सोआद बुला बदल गइल दु का, दहिने अलङर ओठङत, अपना के लमहर घींचत, गाड़ी के बहिरी फच्च दे थूकि दिहले आ अस्थिराहे खँखारत लगले पूछे - "ई कैंजी आँखिया वाला के हऽ, भाये ?"

"बसरिकापुर के पाछा के गाँव के हऽ ई। आजकाल एकरे रङ आ हावा बनल बा एने.." - कहत-कहत पाछा बइठल ऊ मनई लागल ड्राइवर के खोदे - "का हो नमूना ! नया हवऽ का एह लाइन में ? एह जेपिया के नाँव अबहीं ले तहरा काने परल नइखे काऽऽ ?"

"खूब परल बा भइया.." - ऊ ड्राइवरो एक हाली फेर से जइसे उचिरे के छपिटाइल रहुए - "हमहूँ भइया हावा से नइखीं आइल, मुरारपट्टी के हईं हम। खूबे जानऽतानी जे एह लाइन के ई नवका 'कीरा' हऽ, अउरी कुछऊ ना। कुछ महिना भा कुछ बरिस.. ई अइसहीं फरफराई। आ फेर रउओ देखब, ईहो कवनो बाइक का पाछा बैसाखी थमले आवत-जात लउके लागी ! इन्हनीं के गर्मी नू भइया, दू बरिस ना तीन बरिस, बस ! आ नाहीं, त कवनो बरियार मजगर 'बाप' के हाथ होखो कान्हा-मूड़ी प, त ढेर आगा निकल जाले सऽ। फेरु इन्हनीं के इहवाँ, एह जवार में ना.. लखनऊ भा दिल्ली में लउके लागेले सऽ ! आ कुछ बरिस बाद अपना नाँव के पालिस करौले.. फुलेल चोपववले.. लवट अइहें सऽ.. फलाना 'नेताजी' कहात !.. "

बुझा गइल जे ई ड्राइवरवा अबहीं ले जतना हलुक आ मुँहफट लउकत रहे, ओतना रहुए ना। एही प कहाला, दोआबा के कवनो निर्बुधियो अन्हका जवार में पंडित गिनाए लागेला ! ईहो का निकहे ढङ से कहल बा ! हेने बिचका सीट वाला बाबाजी अबहीं ले अपने बतिया में घुर्री पारत अनमनाइल रहले - "बताईंऽऽ.. ई जवान जेपी हऽ !.."

"त का हऽ ए बाबाजी.. कवनो बिसेस परोजन गूनऽतानी का इन्हनीं खातिर ?"

"नाऽऽ परोजन का गुनाई, बस भागि आ करम के फेर देखि रहल बानी। जेपी, लालू आ सुशील जइसन नाँव सुननी हाँ, एही से पूछऽतानी" - बाबाजी दोहरियवले।

"त का रउआ जयप्रकाश नरायन आ उनकर विद्यार्थी नेता लोगन से एह मनबढ़ुवन के तउलऽतानी का ?"

बाबाजी के मुँह प तिरछे मुस्की घिंचा गइल - "हम कदमकुआँ के ओही गली में बानी बबुआ, जवना में 'प्रभा इस्मृति' बा.."

"अरे बाह ! तब तऽ रउआ जेपी के सचकी में देखले होखब बाबा !"

"हम जेपी के, उनकर आन्दोलन के.. दिन-रात, सुबह-साँझ, पल-घड़ी जियले बानी। आजुओ जियेनीं, बाकिर अब जमाना बदल गइल ! गाँधी मैदान के ऐतिहासिक भासन, जेपी के 'सम्पूर्ण क्रान्ति' के नारा.. लोगन के हुजुम्म.. सभ हमरा आँखी देखल हऽ.. अबहियों ऊ कूल्हि हमरा मऽन में टटका बा।"

ई सुनते पाछा आला मनई के मुँह चिंहात बवा गइल, बाकिर ऊ सम्हरत आपन जानकारी के दम प पूछे लागल - "बाबा, ई बताईं रउआ, जे जेपी अपनहीं ओह 'क्रान्ति' के कवनो तार्किक भा ठोस आधार दे पवले ? सुनेनीं जे अपना आखिरी बेरा में ऊ देस के हाल आ हालात प हेने पटने में कहँरसु, आ होने दिल्ली में उनकर केऽहु सुननिहार ना रहे। 'दिल्ली में बसल, बाकि पटना ना आवत' नेतवन प सुनेनीं जे उहाँ का तंज कससु, जे 'पवनार गइल लोगन के जतना रूचेला, ओतना पटना आवल ना रूचे !"

इयाद होई, पवनार बिनोबाजी के रिहाइश रहे जिनका भूदान आंदोलन से जेपी के मोह भंग भ गइल रहे। बाबाजी एकटक सोझा तिकवत लउकले। ओह घरी उनका सायेदे कुछऊ सुनात भा

लउकत होखी, बाकिर आँखि खूलल रहे । बुझाए जे उहाँ का सन चौहत्तर-पचहत्तर आ सन उनासी के बीचे पँवरत रहनीं । तले रोड प के गड़हा से गाड़ी में बरियार हचका भइल । अचके में सभके तन्द्रा टूटि गइल । बाबाजी बुदबुदात अपनहीं में जइसे बोले लगले - "जेपी के 'सम्पूर्ण क्रान्ति' एगो गहिराह विचार हऽ, फलसफा हऽ ! बेवस्था में आमूलचूल परिवर्तन खातिर आवाहन रहे ऊ ! खलसा सत्ता परिवर्तन के आवाहन ना रहुए.."

"बाकि ई केकरा बुझाइल बाबा ? भा अबहियों ई केकरा बुझाता ? उनकरे लोग, ओही घरी, उनकरे सोझा 'कांग्रेस मुक्त भारत' के जाप करे लागल रहे । बुझाए जे कांग्रेस देस के परिदृश्य से हटि जाई त सभ बुध सुध हो जइहें । मजगर बेवस्था आ दमगर लोकतंत्र के त बतिये जइसे हावा हो गइल रहे । महराज, लोगन के मतसुन्नी नानू भइल रहे कबो ! आ नाहींऽ, त काहें अढ़ाइये बरिस में देस ओही इन्द्राजी के फेर से बोला लिहलस, जिनकरा नाँव प चार-पाँच बरीस हतना बवाल मचल रहे ?"

"बबुआ, भारत के धुर देहात तक के लोग एगो मनई के तौर प भलहीं अनपढ़-गँवार अस लउको आ बुझाओ, बाकिर एगो समूह के तौर प एह देस के गँवई के कवनो सानी नइखे । एहीसे कवनो बिदेसी आ बिदेसी-फलसफा कुछ समय खातिर लोगन के 'मनलुभावन' भलहीं लागो, 'मनबसिया' त एह देस के अपने परम्परा आ ओहसे निकलत बिचार आ बनत बेवहार रहल बा । सत्ता चाहे केहू के होखो.. कवनो पाटी के ! एह बात प कान-ध्यान जवन पाटी के सरकार ना दीही, ऊ छन में दूध में के माँछी हो जाई । जनता पाटी के ढेर नेता-मंतरी लोगन के ई मूल बतिया भोर परि गइल रहे । कवनो 'आपन बुझात' से उमेद-भरोसा टूटल कवनो 'आन्ह' के लूट आ ठगई ले ढेर छनछनात बुझाला । जनता पाटी के बेवहार आ बरताव से सउँसे देस के एगो 'आपन' से 'भरोसा टूटल' अस बुझाइल रहे आ एह कारने दरद भइल रहे । एही से जब इन्द्राजी अढ़ाई बरिस प दोहरियाइ के बोलावल गइली त देस उनका से 'प्रायस्चित कइनीं' के मनुहार ना कऽके 'अब होसगर शासन करऽ' के आदेस देले रहे । आ इन्द्राजी खातिर उत्प्रेरक भइल रहे बिहार के गाँव 'बेलछी' के जात्रा !.. गाड़ी ना भेंटाइल त हाथी प गइल रहली इन्द्राजी !.. त ई रहे उनकर जनता से जुड़ाव !.. अब का ऊहे रहि गइल बा ? ना.. अब जनता से जुड़ाव के नाँव प नाटक आ ड्रामा होता.."

"बाबा एकरा आगा के नतीजा त हमनी के जानते बानी जा, ओह चार-पाँच बरिस के कुछऊ बताईं.. का भइल रहे ? आ रउआ का बुझाता, काहें बिहार के करम मसखरा आ मतलबी बुझात नेता लोग कूटत आ रहल बा ? एकरा अइसहूँ सूनीं, जे काहें एह राज्य के भागि में आजादी का बाद एक सुरुए से सरल-पाकल वर्तमान आइल बा ?"

"ई कवना बात प कहलऽ हऽ ?" - बाबाजी मूड़ी तिरछा करत पाछा बइठल मनई से आँखि मिलावत पूछले आ ओही रौ में बोलत गइले - "बबुआ, जब बिचार फूहर-पातर भा फाँफर होखे लागे नू, त अहंकार ढेर बड़ हो जाला ! ढेर बऽड़ ! बिहार के सतहत्तर ना पचास के दशक से लेके आजु ले देखि जा, ईहे लउकी, ईहे बुझाई । जेही आइल, जनता के मन के फुलौना अस बरतलस, आ एह फुलौना में खलसा अहंकार के हावा भरे के काम कइलस । अपवाद के तौर प एक-दू नेता लोगन के नाँव भले गिनवावत रहऽ, बाकि ढेर अंतर ना परी । एही नीतीशजी के पहिलका पाँच बरिस अइसने जादुई बेवहार के अचंभा गीनि सकेलऽ.."

"त एकर माने का.. रउआ कूल्हि दोस बिहार के जनता के दे रहल बानीं ?"

"जनता प ओइसने राजा नू शासन करी बबुआ, जवना के पात्र ऊ जनता होई ! लोक-प्रशासन के आँखी देखल जाओ त नेता आ जनता में अठारह-बीस के फरक चलेला । बिहार में ई फरक एक सुरुए से बारह-बीस के, भा एकरो ले ढेर बड़ होत आइल बा ! आ तवना प बिहार के जनता एगो इकाई के तौर पर बेवहार करे सीखे के बा ! एह प का कहीं, ई सोचे आ गूने के बिन्दू हऽ.. तूँहो सोचिहऽ.."

"माने ?.. एहके तनिका खोलि के बुझवाईं बाबा.." - अगवा आला सीट के मनई टोकलस ।

"खोल के ? ई त खुलले बा.. मिथिला पूरब में बा नू ? त भोजपुर कहवाँ बा ? .. पच्छिम में ! तिरहुत उत्तर परी निहाल बा त मगध दक्खिन में अलगे दुनिया बसवले बा ! एक मन बनो त एक रङ में सोचाओ.."

"आह्हाह, सचकी !.." - पाछा आला सीट प के मनई के अवाज में दू-तीन गो अउरी अवाज मीलल बुझाइल ।

होला का जे एह क्षेत्र में बिहार राजनीतिक रूप से अलगा राज्य होइयो के अलगा जीवन के ना बुझाये । होइयो ना सके । बिहार के ढेर कूल्हि भइलका, यूपी के एह क्षेत्र में बड़ा प्रभावी हो जाला ।

"बाबा, राउर एह बिन्दू से त हमार 'बीसीएसएस' के देखे के नजरिये बदल गइल ! ई त एगो बड़हन बात रउआ सोचवा दिहनीं जी !.."

"ना, बड़हन भा नया बात ना हऽ ई.. बलुक सोच के ईहे मूल हऽ.."

"ई 'बीसीएसएस' का हऽ जी ?" - अगवा आली सीट से बड़ा मन से सूनत अवाज आइल ।

"बिहार छात्र संघर्ष समिति, माने 'बीसीएसएस'.. ई चौहत्तर में बनल एगो संगठन रहुए जवना में बिहार के सभ जगहा के छात्र-नेतन के गजबे जुटान भइल रहे । आ ईहो जानीं जे अइसन कवनो प्रयोग पहिला हाली देस में भइल रहे, जे अलगा-अलगा बिचारधारा आ संगठन के छात्र-नेता बिहार में कुबेवस्था के विरोध में एके मंच प आइल रहे लोग ।"

"का बात बा ! वाऽऽह !.." - अगवा आला सीट के ओह मनई के अचम्भा लागल - "तनिका खोल के कहीं ए बाबा.. कहवाँ रउआ अस मनई रोजीना भेंटाए के बाड़े ?"

"हूँऽऽ.. त सूनऽ.. गुजरात के 'नव निर्माण' क्रान्तिदल के आन्दोलन

का चलते कांग्रेस के आपन मुख्यमंत्री बदले के परल रहे। आ हेने बिहारो में आन्दोलन गरमा चुकल रहे। देस के माहौल इन्द्राजी के पूरा खिलाफ रहे। 'नव निर्माण आन्दोलन' में राजनीतिक दलन के ओतना प्रभाव ना रहुए। जबकि बिहार में जयप्रकाशजी के आन्दोलन में आवे के पहिलहीं पटना यूनिवर्सिटी में एगो छात्र संगठन बनल जवना में बिहार के कूल्हि विद्यार्थी संगठनन के नेता लोगन के जुटान भइल रहे.. जनसंघ के विद्यार्थी चेहरा 'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद', समाजवादी आ लोकदल के विद्यार्थी चेहरा 'समाजवादी युवजन सभा', कोमनिस्ट के विद्यार्थी चेहरा 'ऑल इण्डिया स्टूडेण्ट्स फ़ेडेरेशन' जइसन संगठनन के टेकन लागल रहे। एही मंच बा संगठन के नाँव धराइल 'बिहार छात्र संघर्ष समिति' भा 'बीसीएसएस'। एकर प्रमुख माँग रहे बिहार में शिक्षा-बेवस्था में सुधार आ कूल्हि छात्रावासन में नीमन भोजन के बेवस्था। एहके नवका मंच कहऽ भा संगठन कहऽ, एकर अध्यक्ष बनावल गइल रहले ओह घरी छब्बीस-सताइस बरिस के एगो प्रखर युवा नेता - लालू प्रसाद यादव !"

"का ? हई लालूजी ?.." - कौ गो ना मुँह अचके में बवा गइल - "आजीऽऽ ! ईहे लालूजी मुख्यमंत्री बनले त बिहार में इस्कूल आ शिक्षा बेवस्था के हऊ नतीजा भइल रहुए ? .. आहियाहि !.." - एह गाड़ी में ढेर कऽ के नये उमिर के लोग रहुए, एही से ढेर जाना ई सुनि के चिंहा गइल लोग।

"अतने ना, आगा सूनऽ ! एह अध्यच्छ के सङहतिया-गोद्धा रहले सुशील मोदी, नरेन्दर सिंह, बसिष्ठ नरायन सिंह, रामविलास पसवान, नीतीश कुमार, रघुवंश सिंह जइसन लइका, जे अलगा-अलगा संगठनन से जुड़ल रहले। ई संगठन आगा शिक्षा आ छात्रावास में बेहतरी खातिर मांग में खलसा ना अझुराइल रहल, बलुक ओह से कतहीं आगा बढ़त बिहार असेम्बली के घेराव कऽ के अपना संगठन के राजनीतिक रङ देवे लागल रहे.. आ आगहूँ धरना -प्रदर्सन से बिहार में आपन हुँमच मचावे लागल रहे। तब बिहार में एगो खाँटी भोजपुरिया, जमीनी, ईमानदार मुख्यमंत्री बनावल गइल रहले - अब्दुल ग़फ़ूर। इन्द्राजी बड़ा सोच-बिचार के एह अमदी के छपरा से ले आ के मुख्यमंत्री बनवले रहली। इन्द्राजी के छात्र आन्दोलन का मारे गुजरात में आपन मुख्यमंत्री बदले के परल रहे। अब अब्दुल ग़फ़ूर के सोझगिरी प केहू का कहित, ई सोच के ऊ अचके में मुख्यमंत्री बना दिहल गइले। बाकि आन्दोलन रूकल ना बढ़ते गइल। पटना में कौ गो ना मंत्री लोगन के घर आ सरकारी सम्पत्ति फुँकाइल रहुए। आगा संगठन के अइसन कवनो अराजकता से बचावे खातिर 'बीसीएसएस' लालू के अगुआई में जेपी से झण्डा थामे के निहोरा कइलस.. आ जेपी मान गइले।"

"माने कहल बेजायँ ना होई बाबा, जे जबले अमदी युवा रहेला, ओकर दिमाग 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' आ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के लाइन प निकहे सोचत बढ़ेला.." - गाड़ी में पाछा से ओही मनई के बिचारपरक बोली सुनाइल - "बाकिर, जइसहीं ओकर दिमाग प्रोफेसनल लाइन प चलल सुरु ना कइलस, कि ऊहो ओतने, भा ओहू ले बाउर 'घोर-मट्ठा' कइल सुरु कऽ देला। आजु देख लीही ओही छात्र-नेता लोगन के लीला !.. बिहार के बचावे से सुरु भइल हइसन-हइसन लइका-जवान आ उनकर सात्विक बिचार आजु कवना-कवना परपंच में उफनात अझुराइल बा !.. मन घिनाइल जाता महराज.. ओह्होह.. !"

अगवा सीट प के भाई साहब एही में आगा जोरले - "बाबा, कवनो आन्दोलन के सफलता का कहाई ? आन्दोलन के सम्पन्न भइल, आकि ओकर दूरगामी नतीजा आइल ?" - आ अपनहीं जवाब देत जोरले - "दूरगामी नतीजे पर नू ओकर सफलता कहाई ?" - आपन कहलका के ऊ तनी अउरी सोझ करत बोलले - "चौहत्तर-पचहत्तर के ओह आन्दोलन के जवन सतहत्तर में 'दोसरकी आजादी' के कारन बनल.. नतीजा का भइल ? हइहे नेता लोग नू ? जा ए देवता ! .. रउआ एकदम सही कहि रहल बानीं बाबा, बिहार के जनता के ई दुर्भाग्य बा, अबहीं एह लोगन के ढेर सँइताये के बा.. आ सँइताये के परी.. तबहीं ऊ समाज आ ओह समाज के बेवहार बदली.."

"तूँ ना मनबऽ.." - बाबा टोकत बोलले - "बिहार के बहुसंख्य लोग, जे गाँव-देहात में रहेले, अथक कार्मिक होले.. एह बात प कायदे से कबो ना सोचल गइल। ई जबहीं बुझा जाई जे जवन कहाता भा कइल जाता ऊ बिहार के अपने होखे आला बा, बिहार के लोगन के भागि, करम आ बेवहार सभ एकदम से बदल जाई। अबहीं बिहार के जनता आपन कइलका, चाहें ऊ बाउर होखो भा नीमन, बिहार के ना बलुक आपन बेक्तिगत मानेले.. बिसेस कऽ के कूल्हि निमनका हमार ! आ जवन बाउर ऊ पड़ोसी के !.."

"हा हा हा.... " - बतियावत मनई से ढेर कण्ठ से हँसी के अवाज फूटल।

"हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता.." - बाबा कील ठोंकत लेखा बोलले - "बुझाता बैरिया आ गइल.."

"बड़ा मन से रउआ बतियावत-सुनावत रहनीं हाँ बाबा ! बाकि देखीं.. ईहे भागि हऽ... बिहार के चर्चा सुरु का भइल बिचहीं में रुक गइल.. हमरो ढेर रिस्तेदारी बिहार में बा.."

"नाः, एकरा रुकल ना कहाए ! ई चर्चा तहरो मन में सोचे आ गूने के बिन्दू जुटा दिहलस। आगा सोचल आ गूनल जाओ.." - बाबा उतरत बोलत गइले - "अबहियों सम्हरल जा सकेला.. नवम्बर से देखीं, ऊँट कवना करवट बइठऽता.."

"का ऊँटराम बइठिहें बाबा ?.. सगरे त पाँकि भइल बा !.. आछा, गोड़ लागऽतानी..."

"जीयऽ.."

सम्पूर्ण विकास के प्रणोता : जयप्रकाश नारायण

नैय्यर इमाम सिद्दिकी

बिहार के माटी से कई गो गाँधीवादी विचार के पुरोधा लोग पैदा भईल बा । जईसे डॉ॰ अनुग्रह नारायण सिन्हा, डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण आदि-इत्यादि । जयप्रकाश नारायण जी आम जन-मानस में जेपी आ लोक नायक के नाम से जानल जानीं । डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद आ जयप्रकाश नारायण में गाँधीवादी होखे के अलावे भी एगो दुसर रिश्ता बा । राजेन्द्र बाबू के बेटा मृत्युंजय प्रसाद और जेपी में आपस में साढ़ू भाई के रिश्ता रहे ।

जेपी के जनम ब्रिटिश इंडिया के बंगाल प्रेसीडेंसी के सारण जिला के सिताब दियरा में 11 अक्टूबर 1902 में भईल रहे जवन अब भारतीय गणराज्य के बिहार राज्य के छपरा जिला में पड़े ला । सिताब दियरा गाँव गँगा आ सरयू नदी के बीच पड़ेला । रास्ता भा आपन मुहाना बदलल नदी के धर्म हवे आ ओही धर्म के निबाह के चलते सिताब दियरा गाँव कबो बिहार में रहे लेकिन अब उत्तर प्रदेश में बा । अइसन जमीन के हमनी इहाँ भवाली कहल जाला जवन हमेशा लड़ाई-झगड़ा आ विवाद के जड़ बनल रहेला । दियर ऊ इलाका कहाला जवन नदियन के छोडल जमीन से बनेला । एह गाँव के कहे वाला लोग त ईहो कहे ला कि भले ई गाँव उत्तर प्रदेश में बा बाकिर ऐह गाँव के राजस्व के वसूली बिहार सरकार ही करेले । अगर रऊवा सड़क के रास्ता से सिताब दियरा जाए के मन बा त छपरा-बलिया रोड से रऊवा बाएँ मुड़ जाईं । आधा किलोमीटर चलला के बाद गाँव शुरू हो जाला । दियर के शांत इलाका । दूर-दूर तक सपाट खेत । खेत से तकला पर कमर के ऊँचाई पर चिकन-चाकन नीमन रोड लेकिन भीड़-भाड़ से दूर । सिताब दियरा गाँव बहुत बड़हन बा, लगभग 27-28 गो टोला आ आबादी एतना कम कि दिन-दुपहरिया ही केहू लूट के चल जाओ त पता ना चली । जेपी चम्बल में जब डकईतन के आत्मसमर्पण करईलन तब बहुते वाहवाही भईल बाकिर अब उनकरे गाँव दियर में होखे के वजह से चोर-लुटेरन के आतंक से परेशान बा ।

सिताब दियरा के जवन टोला में जेपी का घर बा पाहिले ओह टोला के नाम बाबुरवानी रहल । बबुर के ढेर पेड़ के वजह से ऐह इलाका के ई नाम पड़ल । जेपी के जन्म से बहुत पहले जब सिताब दीयरा में प्लेग फईलल तब जान बचावे खातिर जेपी के पिताजी बाबुरवानी आ गईनी आ घर बना के रहे लगनी । बलिया से सांसद रहत चंद्रशेखर जेपी के प्रति आपन प्रेम, आपन भक्ति के नीमन से साकार कईले आ ई उन्हां के ही कोशिश ह कि बाबुरवानी आज जयप्रकाश नगर के नाम से जानल जात बा । जेपी संग्रहालय में

राष्ट्रीय नेता के फोटो, खत और जेपी के जाती चीज़ के संगे-संगे डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद के राष्ट्रपति रहत भोजपुरी भाषा में लिखल गईल पत्र भी शामिल बा जवन भोजपुरिया माटी के पहचान आ ऐ भाषा के बरियार समर्थन करत बा ।

जेपी के बाबा दरोगा रहले आ बाबूजी नहर विभाग में अधिकारी। ज़मीन-जायदाद, रुपया-पईसा के कौनो कमी ना रहे । आजादी के बाद भी काफी जमीन बच गईल लेकिन जब उन्हा के 19 अप्रैल 1954 में बिहार के गया जिला में विनोवा भावे के सर्वोदय आन्दोलन से जुड़े के फैसला कईनी त बहुते जमीन ग़रीब-गुरबा में दान कई देनी । स्वतंत्रता-मुक्ति के तलाश में जेपी साम्यवाद, समाजवाद और सर्वोदय के रास्ता से गुजरत संपूर्ण क्रांति तक पहुंचनीं । उन्हां के देख लेहले रहनी कि संपूर्ण क्रांति के बिना ना त साम्य होई ना ही समाज के हित सधाई अऊर ना सर्व-उदय के लक्ष्य पूरा होई ।

भारत में पढ़ाई के बाद उन्हा के अमरीका गईनी जहाँ से समाजवाद के शिक्षा लेहनी । एम॰ ए॰ के बाद पीएचडी में दाखिला मिलल पर माई के बेमारी के वजह से पढ़ाई बीच में ही छोड़ के देश वापस लवटे के पड़ल । 1929 में जब उन्हा के अमरीका से लवट के अईनी तब भारत में आजादी के लड़ाई जोर पर रहल । उन्हा के संपर्क गाँधी जी के साथ काम करत नेहरु जी से भईल आ आजादी के लड़ाई में शामिल हो गईनी । 1932 में गाँधी जी, नेहरु आ कई गो महत्वपूर्ण कांग्रेसी नेता के जेल गईला के बाद देश के अलग-

www.bhojpurisahityangan.com

अलग हिस्सा में उन्हा के आजादी के लड़ाई के नेतृत्व कईनी । 1939 मे उन्हा के दुसरका विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेज सरकार के खिलाफ लोक आंदोलन के नेतृत्व कईनी । टाटा स्टील प्लांट में हड़ताल करा के ई कोशिश कईल गईल की अंग्रेज सरकार तक इस्पात ना पहुँचे । ऐ घटना के भी नेतृत्व जेपी कईनी जवना वजह से अग्रेज सरकार नाराज हो के उन्हा गिरफ्तार कर लेहलस आ 9 महीना कैद के सज़ा भईल। 1942 में भारत छोडो आंदोलन के दौरान उन्हा के आर्थर जेल से फरार हो गईनी. 1974 में बिहार के किसानन के 'बिहार आन्दोलन' के समर्थन कईनी आ तत्कालीन राज्य सरकार से इस्तीफा मंगनी।

5 जून 1974 के बिहार के राजधानी पटना में लोक-नायक जयप्रकाश ने नेतृत्व में एगो विराट आ बढ़हन जुलुस निकलल। जुलुस में शामिल लाखन लोग विधान सभा भंग करे के माँग करत रहे। बिहार के कोना-कोना से हस्ताक्षर कईल आवेदन पत्र लेले लोग पटना पहुँचे और सगरी आवेदन एगो ट्रक में धराईल जवन जुलुस के आगे-आगे चलत रहे आ ओकरा पीछे जीप में रहनीं जेपी जी। लाखन छात्र आ युवा के ओह जुलुस में भीड़ रहल । तीन घंटा में जुलुस राजभवन पहुँचल । जेपी हस्ताक्षर कईल आवेदन राज्यपाल के सौंप के कहनीं कि वर्तमान विधानसभा जनता के विश्वास खो चुकल बिया आ एकरा सरकार में रहे के कवनो अधिकार नइखे सो एके भंग कईला में ही जनता आ राज्य के भलाई बा। ऊ जुलुस साँझ होते-होते आमसभा में बदल गईल। जेपी कहनीं कि ई आन्दोलन विधानसभा भंग करे के माँग तक ही सीमित ना रही बाकिर ई छात्र लोगन के माँग के समर्थन भी करी आ ई जनता के माँग की लड़ाई लड़े ख़ातिर सम्पूर्ण क्रांति के रूप ले ली।

सम्पूर्ण क्रांति में सात गो क्रांति शामिल रहे - राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, शैक्षणिक आ आध्यात्मिक क्रांति । ई सातों क्रांति मिलाके बनल सम्पूर्ण क्रान्ति। सम्पूर्ण क्रान्ति जेपी के सिर्फ विचार आ नारा ना रहल बाकिर ई जनता से उनुकर एगो आह्वान रहल जवना से उन्हां के इंदिरा गाँधी के सरकार के सत्ता से उखाड़े खातिर जनता के बीच क्रांति कईनी। ई क्रांति के पूरा जोर छात्र आ युवा के कन्धा पर रहला से एकरा के सफल बनावे खातिर छात्र के जिम्मेदारी दिहल गईल आ एक साल तक पढाई छोड़े के भी कहल गईल। आज के राजनीति में चमकत लालू यादव, नीतीश कुमार, रामविलास पासवान, सुशील कुमार मोदी आ अऊरी कई गो छोट-बढ़ नेता सम्पूर्ण क्रांति के छात्र युवा संघर्ष वाहिनी के देन हवे लो।

लाखन लोग के शांतिपूर्ण जुलुस पर कांग्रेसी लोग डंडा चलवावल, गोली बरसावल पर भीड़ के तरफ से एगो ढेला भी ना फेंकाईल. भीड़ में आईल जनता आ छात्र से जेपी वचन लेहनी की हमला चाहे जईसन होई हमनी के हाथ ना उठी । हमनी के उत्तेजित हो के हिंसक नईखे होखे के आ ना बदला लेबे के सोचे के बा । पटना के ऐतिहासिक गाँधी मैदान में जेपी के नेतृत्व में लाखन लोग जात-पात, तिलक-दहेज आ भेद-भाव छोड़े के संकल्प लेहल । हजारों लोग ऐ नारा के साथ आपन जनेऊ तक तोड़ देले रहे ।

जात-पात तोड़ दो, तिलक-दहेज छोड़ दो,
समाज के प्रवाह को नयी दिशा में मोड़ दो ।

जेपी एह क्रांति के बारे में कहत रहनीं के "सम्पूर्ण क्रांति से मेरा तात्पर्य समाज के सबसे अधिक दबे-कुचले व्यक्ति को सत्ता के शिखर पर देखना है" आ उनकर सपना पूरा भी भईल जब लालू यादव, कर्पूरी ठाकुर, अब्दुल गफूर आ माँझी जी जईसन लोग बिहार के सत्ता के शिखर पर बईठल । दू गो शब्द 'सम्पूर्ण क्रांति' भारत के राजनीतिक दशा आ दिशा बदल देहलस। इंदिरा जी चुनाव हार गईली आ पहली बार केंद्र में गैर-कांग्रेसी सरकार बनल । जयप्रकाश नारायण के निधन उन्हा के निवास स्थान पर पटना में 8 अक्टूबर 1979 के दिल के बेमारी आ मधुमेह के कारण भईल । उन्हा के सम्मान में तबके प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी ७ दिन के राष्ट्रीय शोक के घोषणा कईनी । उन्हा के सम्मान में कई हजार लोग शोक यात्रा में शामिल भईल । पटना में उन्हा के अंतिम दर्शन खातिर कई गो विशेष रेलगाड़ी तक चलावल गईल । उन्हा के मैग्ससे अवार्ड आ भारत रत्न से नवाजल गईल बानी । उन्हा के योगदान खातिर देश हमेशा उँहा के करजदार रही ।

नैय्यर इमाम सिद्दिकी

गोपालगंज , बिहार के रहे वाला नैय्यर इमाम सिद्दिकी जी उर्दू , हिन्दी , अंग्रेजी मे लिखेनी , आखर से बहुत पहिले से जुड़ल बानी । आईआईटी से पढल बानी आ वर्तमान मे एन आई टी रायपुर मे लेक्चरर बानी । रायपुर , छत्तीसगढ मे रह रहल बानी ।

जेपी- सम्पूर्ण क्रांति के सूत्रधार

कुणाल गौरव

जयप्रकाश नारायण इजराइल के प्रधानमत्री डेविड बेन के साथ, 1958

जयप्रकाश... एगो आदमी ना, यात्रा के नाम ह। एह यात्रा में विचार भी बा, रचना भी बा, संघर्ष भी बा। एह मे कई गो मोड़ आइल, ठहराव आइल, रास्ता बदलल, लेकिन लक्ष्य हमेशा एक ही बनल रहल। जेपी के जीवन अपना आप में बीसवीं सदी के भारत के मय सामाजिक राजनीतिक प्रयोग के समेटले बा। आ आखिर में 'सम्पूर्ण क्रांति' के रूप में भविष्य ला कुछ नया सूत्र भी दे रहल बा।

जेपी के वैचारिक परिधि में सबसे पहिले मार्क्सवादी समाजवाद आइल। बीसवीं सदी के शुरुआती दौर में वैसे भी समाजवाद के विचार बड़ा रूमानी रहे, सोवियत रूस के ज़माना रहे। जेपी खुद एह संबंध में 'समाजवाद क्यों?' नाम के पुस्तक में लिखले बानी। जेपी में मार्क्सवाद के साथे साथे राष्ट्रवाद भी खूब रहे। देश में आज़ादी के लड़ाई जारी रहे, सन ब्यालीस में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन शुरू भइल। जेपी जेल में बंद। हज़ारीबाग जेल के दीवार फांन के भूमिगत जेपी आन्दोलन के अगुआ बन के निकललन। मार्क्सवादी रणनीति से मोहभंग के शुरआत भईल आ जेपी के विचार में लोकतान्त्रिक समाजवाद जगह लेवे लागल। आगे चल के समाजवाद के लक्ष्य के साथ गांधीजी के साधन आ साध्य के पवित्रता के आग्रह भी खींचे लागल।

आज़ादी के बाद जेपी के जीवन में नया अध्याय जुड़ल। भूदान आन्दोलन से जुडाव भईल। समाजवाद के लक्ष्य के सर्वोदय के रूप में नया अभिव्यक्ति मिल गईल। एकरा बारे में जेपी एगो चिट्ठी लिखले बनी 'समाजवाद से सर्वोदय की ओर'। तब जेपी कहतानी कि 'सर्वोदय समाजवाद के ही सच्चा आ शुद्ध रूप ह'। यानि जेपी खातिर लक्ष्य हमेशा से एक रहे, हासिल करे के रास्ता भले अलग हो गईल। मार्क्सवाद से ले के सर्वोदय तक के यात्रा में बीसवीं सदी के पूरा क्रन्तिकारी विचार जेपी अपना जीवन में उतार देहनी।

फेरु उ दौर आइल जब सर्वोदय के खलिहा रचनात्मक आन्दोलन नाकाफ़ी होखे लागल। तब जेपी द्वारा 'सम्पूर्ण क्रान्ति' के सूत्रपात भइल। सम्पूर्ण क्रांति में जेपी के समूचा जीवन के अनुभव, विचार आ संघर्ष के निचोड़ बा। जेपी सम्पूर्ण क्रांति के पांच आयाम बतवनी – सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक। एह में व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण आ व्यवस्था निर्माण सब समाहित बा। जेपी के जीवन में कबो संघर्ष हावी रहे त कबो रचना। सम्पूर्ण क्रांति में संघर्ष आ रचना के एक साथ खड़ा कर देहल गईल। जेपी जाते जाते सम्पूर्ण क्रांति के रूप में कुछ सूत्र थमा गइनि।

आज जे लोग जेपी के अनुआयी बनल सत्ता सुख भोग रहल बा, उ त कब के जेपी के साथ छोड़ देहलख, सम्पूर्ण क्रांति के विचार छोड़ देहलख। जेपी आज अकेला बानी। सम्पूर्ण क्रांति के क्रांति-विचार सब जैसे सुसुप्तावस्था में चल गईल बा। कहियो कोई झाड़-पोंछ के निकाली आ जेपी के बतावल सूत्र से संघर्ष के नया प्रमेय लिखी तब फेरु जेपी के यात्रा गतिमान हो जाई, सम्पूर्ण क्रांति के सपना साकार हो जाई।

कुणाल गौरव

मूलतः छपरा, बिहार के रहेवाला कुणाल जी वर्तमान में गुडगाँव में रिसर्च इंजिनियर के तौर पर कार्यरत बानी। आपन माटी-भाषा से लगाव राखे के साथे इंहा के स्वराज अभियान के वैकल्पिक राजनीति के आन्दोलन और जय किसान आन्दोलन से भी जुडल बानी।

सिताब -दियारा : लोकनायक के गाँव

पी. राज सिंह

गाँव के नाम ह सिताब दियारा जहां 11 अक्टूबर 1902 के लोकनायक जयप्रकाश के जन्म भईल रहे। गंगा जी आ सरजू जी के मिलन स्थल वाला ई गाँव त्रिभुज के शीर्ष नियर बा जेकर एगो बाहँ के रूप में गंगा बाड़ी त दोसरका बाँह के रूप में सरजू जी। जे पी के जन्म स्थल के नाम पर पूरा स्पष्टता नइखे। जे पी के पिताजी के नाम रहल ह लाला हरसुदयाल जी। ईहाँ के एगो बड़ खेतिहर आ जमींदार रनी हाँ। जे पी के पुश्तैनी मकान बिहार के छपरा जिला में रहे। ई लगभग सैकडन बरिस पहिले सरजू जी के ढाही में बिला गईल। पूरा परिवार आज के लाला टोला में आ के रहे लागल। बाद में प्लेग के चलते आ बाढ़ से बचे खातिर आज के बलिया जिला के भाग जयप्रकाश नगर में भी परिवार के रहे के व्यवस्था भईल। आज के जय प्रकाश नगर में परिवार के छावनी रहल ह आ गाँव में ऊ बबुरवानी कहात रहल ह।

छपरा जिला के लोग जे पी के बचपन आ प्रारंभिक शिक्षा के स्थान लाला टोला में बतावेला। आज के तारीख में लाला टोला में मात्र एक घर लाला / कायस्थ परिवार रह गईल बा। जे पी के पर पाटीदार भा अउर बंशज लोग जहां तहाँ देश के दोसर भागन में आपन नोकरी व्यवसाय में लागल बा आ गाँव ना आवे।

एगो खपरइल टूटत ढहत मकान जहाँ जे पी के बचपन बीतल बतावल जाला ओह स्थान पर जाये के हमरा दू बार सौभाग्य मिलल। पहिलका बेरि आज के दिल्ली वाला आप पार्टी के मनीष सिसोदिया , गोपाल राय , संजय सिंह आदि लोग आईल रहे तब। ओह घरी ओह टूटत ढहत घर में दू गो वृद्ध प्राणी से भेंट भईल रहे।

नाक नक्श आ ऊँच लीलार से बुझा जात रहे कि बूढ़ जीव जे पी के खानदान के ही हवें । अबकी बेरि 17.मई 2015 के खाली वृद्ध महिला से भेंट भईल । बुढवू गुजर गईल बानी । वृद्ध महिला के आपन गाँव से विशेष लगाव बा एह से बीच बीच में आवत रहेनी । फूनी देवी के उमिर 77 बरिस बा । नाता में उहाँ के जे पी के भवे हईं, एहि स्थान पर बिहार सरकार द्वारा लगभग 5.05 एकड़ जमीन अधिग्रहण कईल गईल बा । एहिजा जे पी स्मृति भवन आ पुस्तकालय बनावे खातिर नेंव कोड़े के काम चलत हम देखनी । हाल फिलहाल में भारत सरकार द्वारा भी एह स्थल के राष्ट्रीय धरोहर के रूप में घोषणा कईल गईल बा। भारत सरकार के न्यास द्वारा भी विकास के काम शुरू कईल जाई । एकरा अलावा स्थानीय सांसद श्री राजीव प्रताप रूडी द्वारा भी प्रभुनाथ नगर आ लाला टोला के सांसद विकास योजना के अधीन अंगीकृत कईल गईल बा । आवे वाला 2 -3 बरिसन में ई तीनों एजेंसियन के सहजोग से एह स्थान के रूप बदल जाई । बाकिर अभी उहाँ एक लोटा पानी भी पीये के होखे त गाँव के केहू आदमी से निहोरा करे के परी ।

एह स्थान पर बिहार आ देश के नेता लोग आवत रहेला । आडवाणी जी के रथ यात्रा के कार्यक्रम जे पी के फोटो पर माल्यार्पण के बाद एहिजा से शुरू भईल रहे । जवना में सुषमा स्वराज सहित कई नेता लोग भी आईल रहे ।

सिताब दियारा के लाला टोला बहुते पिछड़ल इलाका ह । टोला के आबादी के 85 % से अधिका भाग पिछड़ा भा अति पिछड़ा वर्ग के बा । कायस्थ / लाला लोग में से मात्र एक घर बाँचल बा । राजपूत जाति के लोग 10 घर ले होई । ई लोग धनबाद में कोईला के डी ओ आदि धंधा में लागल बा । सटले एगो छोट बजार भी बा जहाँ गंगा सरजू के धार के अलावा पानी के तीसरकी धार भी बहत रहेला ऊ भी सरकार से प्राप्त लाइसेंस के आधार पर । ठेका शराब के दोकान पर भीड़ हमेशा देखल जा सकेला। स्थानीय सांसद के मदद से कुछे दिन पहिले गाँव में बिजली आईल ह । पाइप से पानी भेजे खातिर जल मीनार बनल ह । बाकिर विभिन्न सरकारी योजना जइसे कि आवास योजना आदि में घपलाबाजी आदि के लेके गाँव वालन के हजार गो शिकायत रहेला ।

प्रशासनिक दृष्टि से ई भाग छपरा में बा बाकिर भौगोलिक दृष्टि से कटल बा । छपरा से एहिजा सड़क मार्ग से ही आवे जाये के साधन बा । यू पी के बलिया जिला में 10-12 कि० मी० चलला के बाद ही ई सड़क सिताब दियारा पहुंचावे ले । जे पी के बचपन के गाँव लाला टोला के ओटा पर से छपरा जिला के ब्रह्मपुर , रिविलगंज , मांझी के ऊँच भवनन के आ जल मीनार के देखल जा सकेला । बीच में सरजू जी के विशाल पाट बा । जे पी के जमाना में कभी नाव चलत रहे । अब नाव ना चले । आज छपरा आवे जाए खातिर सड़क मार्ग ही सहारा बा । बलिया जनपद के मुख्यालय से सिताब दियारा 60 की मी दूर बा । छपरा से दूरी 30 कि० मी० बा ।

जेपी के प्रारंभिक शिक्षा गाँव के ही स्कुल में भईल । ओकरा आगे के पढाई रिविलगंज के एगो स्कूल में भईल । ओह घरी नाव चलत रहे । जे पी के अउरि आगे के पढाई पटना आ अमेरिका से भईल । जे पी के भवे फूनी देवी के स्रोत से, जब जे पी के विवाह प्रभावती देवी से भईल तब प्रभावती जी के उमिर रहे 16 बरिस आ जे पी के उमिर रहे 18 बरिस । दीयर होखे के कारण परिवार आ समूचा गाँव के मातृभाषा भोजपुरी ही रहे । दोसर कवनो प्राथमिक भाषा के ओह घरी कल्पना भी ना कईल जा सकत रहे ।

क्रांति मैदान गाँव में ही बा जहां से जनेऊ तोड़ो अभियान जेपी के शुरू भईल रहे । अंतिम बार ओह मैदान में जे पी के आगमन छात्र आंदोलन में जेल से छूटला के बाद भईल रहे । तब उनकर किडनी खराब हो चुकल रहे । ऊ डायलिसिस पर रहस ।

कटाव -एह गाँव के सबसे बड़ समस्या बा सरजू के लगातार जारी कटाव । हर साल बीघा के बीघा जमीन सरजू जी के ढाही में पर जा रहल बा । छपरा बलिया मुख्य मार्ग से सिताब दियारा काओरि जात समय सैकडन परिवार के सड़क पर ही फूस पलानी के डेरा में देखल जा सकेला । ई सब बलिया के लोग ह ।

लाला टोला काओरि त सरजू जी के मुख्य धार घूम गईल बा । एहि से ऊ सीधा कटाव के क्षेत्र में बा । यदि समय रहते बरियार कंक्रीट के बान्ह ना बनावल गईल त सिताबदियारा के अउरी दस टोलवन नियर जे पी के स्मृति गाँव लाला टोला भी बिला जाई ।

जयप्रकाश नगर - जेपी के स्मृति के बचावल राखे खातिर पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर जी द्वारा विकसित कईल गईल सिताबदियारा के भाग आज जयप्रकाश नगर के नाम से जानल जाला । लाला

पी. राज सिंह

छपरा , बिहार के रहे वाला पी०राज सिंह जी आर०एस० कालेज सिवान मे एसोसियेट प्रोफेसर बानी । नया तकनीकी से जुड़ल अपना मातृभाषा खाति हर तरह से लागल भीड़ल , अपना विशेष कैमरा से जवार के हर पहलू के कैद करत भोजपुरी भाषा के एगो साहित्यिक कलात्मक उंचाई दे रहल बानी । एह घरी इँहा के छपरा मे बानी ।

टोला से एक की मी आगे चारों इयोर से बाढ़ से सुरक्षित स्थान पर एह नगर के बड़ा जतन से आ सुनियोजित ढंग से विकसित कईल गईल बा। जयप्रकाश नगर उत्तर प्रदेश के बलिया जनपद के भाग ह । 1953 के पहिले ले एह भाग के नाम बबूर वानी (सिताब दियारा) रहल ह। जेपी परिवार के ईहां छावनी रहल ह। उनकर परिवार के लोग 1902 के प्लेग से बांचे खातिर इहाँ आ के रहत रहे लोग। बरसात के बाढ़ से बचे खातिर भी ऊ लोग बबुरवानी / छावनी में चल आवत रहे। बाद में 1951 में जे पी इहाँ अपना खातिर घर बनवले। *1954 में एह स्थान पर विनोबा भावे के आगमन भईल आ गाँव के लोग एह स्थान के नाम जयप्रकाश नगर राखि देहल। 8 अक्टूबर 1979 के जेपी के निधन हो गईल। तब 1985 में स्व 0 चंद्रशेखर जी , स्व 0 जगदीश भाई , स्व 0 मैनेजर सिंह आ जे पी के भतीजा श्री राज रत्नेश्वर प्रसाद (अनिल जी) के प्रयास से जयप्रकाश नारायण स्मारक प्रतिष्ठान (ट्रस्ट) के गठन कईल गईल। इहे ट्रस्ट 7 नवम्बर 1994 के सोसाइटी एक्ट 1860 के अंतर्गत एगो सोसाइटी के रूप में पंजीकृत भईल*। तब से एह स्थान के विकसित करे खातिर बहुत सारा प्रयास भईल बा। सबसे पहिले प्रभावती जी के नाम से पुस्तकालय , फेरु जेपी स्मारक के निर्माण भईल।

प्रभावती देवी राजकीय बालिका इंटर कालेज, 1993 में; आचार्य नरेंद्र देव बाल विद्या मंदिर, 1993 में; जयप्रकाश नारायण ग्रामीण प्रोद्यगिकी केंद्र , 1999 में स्थापित भईल। नगर नाम के सार्थकता प्रमाणित करत इहाँ 150 तक ले लोग के ठहरे लायक युसूफ मेहर अली अतिथि गृह बा। 50 छात्रन लायक संत रविदास छात्रावास भी बा। एकरा अलावा 4 - 5 गो अतिथि निवास आ VIP गेस्ट हाउस बा। VVIP खातिर भी सुसज्जित 5 गो कमरा बा। एगो सामुदायिक भवन भी बा। संस्था के आपन अलगा बिजली ग्रिड , बैंक ,पोस्ट आफिस भी बा। प्रथम दृष्टि में ओह स्थान के रख रखाव , साफ सफाई देख के केहू भी आकर्षित हो सकेला।

जयप्रकाश नगर में सबसे बड़ जुटान 2001 में भईल रहे जब जेपी जन्म शताब्दी वर्ष समारोह पुर्वक मनावल गईल। देश के सब नेता आ सब प्रकार के सामाजिक कार्यकर्ता लोग जे पी के आपन श्रद्धा अर्पण करे खातिर आईल रहे लोग।

साँच कहल जाव त , जेपी के स्मृति से जुडल ई दूनो पुण्य स्थल जीवन में एक बार जरूर घूम आवे लायक बा। जदि कुछ अउर आगा जिज्ञासा बा , देश के हाल के लोकतंत्र के चाल विचाल पर कुछ अधिका अध्ययन करे में रूचि बा त जयप्रकाश नगर आदर्श जगह बा। गंगा आ सरजू जी के धारा के हिलोर से बहत प्राणवायु राउर साँस में नया जीवन के भी संचार करी। पृष्ठभूमि में चिरयुवा लोकनायक जय प्रकाश के स्मृति त रहबे करी।

जयप्रकाश नारायण

मनोरमा सिंह

जयप्रकाश नारायण के नाम लिहते सत्तर के दसक दिमाग में घूम जाला, जब पूरा देश राजनीतिक उथल—पुथल में रहुए, इमरजेंसी, इंदिरा गांधी, मीसा एक्ट, गरीबी हटाओ, नसबंदी अभियान, संजय गांधी के तानाशाही अंदाज सब इहे दशक के बात ह। जेपी तब 'संपूर्ण क्रांति' के नारा दिहले रहन, पूरा देश में बदलाव के बयार रहे, 1974 के बिहार आंदोलन से देश के राजनीतिक इतिहास में एगो नया अध्याय लिखाईल। जेपी के असर खाली बिहार आ गुजराते में ना रहे जहां से इ आंदोलन के सोर जामल रहे बलुक धीरे धीरे उड़ीसा, तमिलनाडू, कर्नाटक, आन्ध्र धईने सब राज्य में फैल गईल रहे। जेपी कहत रहुअन संपूर्ण क्रांति खाली राजनीतिक नईखे, संपूर्ण क्रांति तब्बे हो सकी जब भारत के समाज आ परिवार सब सामाजिक बुराई आ पिछड़ापन से मुक्त हो जायी जैसे, तिलक—दहेज, जांत—पात, छुआछूत, हिन्दु—मुसलमान के बीच सांप्रदायिकता आदि। सन सैंतालीस में आजादी मिलला के बाद दस—पन्द्रह साल लोग के उत्साह रहुए कि देश के निर्माण होता आ एक दिन सब आदमी के किस्मत ठीक हो जायी। रोटी—रोजी, माथा पे छत, कपड़ा—लत्ता अउर पढे लिखे के मौका सबके नसीब में होखि। लेकिन 1974 आवत आवत लोग के नेता आ राजनीति से उम्मीद खत्म होखे लागल रहुए, एही समय में गांधीवादी जयप्रकाश नारायण सबकर उम्मीद बन गईलन।

1973 में गुजरात के अहमदाबाद के एल डी कॉलेज आफ इंजीनियरिंग के विद्यार्थी लोग हॉस्टल के खाना के फीस 20 परतिसत बढ़ गईला के कारण हड़ताल शुरू कर दिहले, एकरा अलावे तत्कालीन मुख्यमंत्री चिम्मनभाई मेहता प भ्रष्टाचार के आरोप भी रहे। सब मिला के तब के हालात बारूद के ढेर पर बईठल देस आ समाज के रहुए, एही से कुच्छे दिन में गुजरात के एगो शहर से 33 शहर के कॉलेज के विद्यार्थी लोग हड़ताल शुरू भ गईल, फेर पूरा देश में। सत्तर के आंदोलन के सब कहानी सबके मालूमें होई आ जेपी के युवा लो प असर के बात भी,जेपी आंदोलन के कारण युवा नेता लो के एगो पूरा पीढ़ी तैयार भईल, बिहार, यूपी के राजनीति

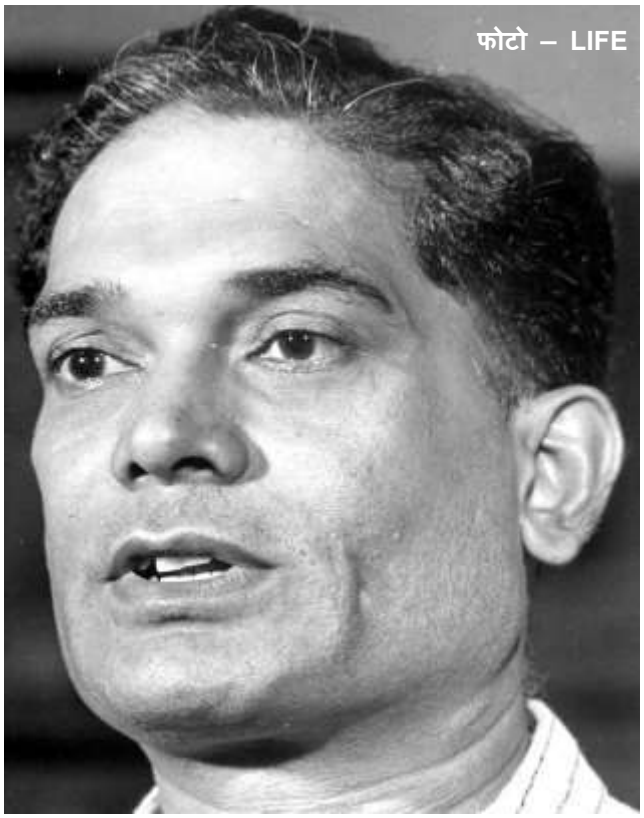
फोटो – LIFE

पर आजों उहे दौर के नेता लो राजनीति करता, चाहे लालू, नीतिश होखस भा मुलायम। इ अलग बात बा कि आज आपातकाल के 41 बरस के बाद इ मूल्यांकन होता कि जेपी आंदोलन के सबसे बड़हन असफलता शायइ इ आंदोलन से निकलल छात्र नेता ही हउअन, जे बाद में आपन प्रदेश के मुख्यमंत्री आ बड़ बड़हन नेता बनले बाकि उनकर आपन राज्य के तस्वीर बहुत ना बदल पाइल। लेकिन इ बात भी सांच बा कि जेपी के प्रभाव आ असर आजुओ ओतने गहिर बा ऐन्ने दक्षिण भारत में भी, खासकरके कर्नाटक में, कांग्रेस आ भाजपा से अलग जौन राजनीतिक विकल्प के बात इहां कईल जाला आजुओं ओकरा खातिर जेपी के नाम आगे कईल जाला। कर्नाटक में।

मनोरमा सिंह

सिवान , बिहार के रहे वाली मनोरमा जी , स्वतंत्र पत्रकार के रुप मे अपना लेखन शैली से बहुते प्रभावित कईले बानी । कई गो पत्र पत्रिका आ अखबार खाति इँहा के लगातार लिख रहल बानी । एह समय इँहा के बंगलोर मे बानी ।

जनता पार्टी के विरासत जनता दल सेक्यूलर के लगे बा जेकर बड़ नेता पूर्व प्रधानमंत्री एच डी देवगौड़ा आ उनकर बेटा कुमारस्वामी बाड़े, बाकि जेडीएस के सबसे बड़ नेता जयप्रकाश नारायण हउअन, जेडीएस आजों जेपी के सिद्धांत में चले के बात करेले। जेडीएस के जड़ 1977 के ह, जब जेपी कांग्रेस आ इंदिरा गांधी के तानाशाही के खिलाफ बाकी सब राजनीतिक दल के जनता पार्टी के नाम से एगो मंच पर कईले रहुअन, बाद में 1988 में वीपी सिंह के समय में बंगलूरू में जनता दल बनल आ 1996 में एचडी देवगौड़ा जनता दल के नेता रहले प देश के प्रधानमंत्री बनल रहुअन।

1999 में जनता दल टूट गईल, देवगौड़ा के धड़ा जनता दल सेक्यूलर भा जेडीएस हो गईल आ भाजपा आ एनडीए के संगे मिल गईल धड़ा जनता दल संयुक्त भा जेडीयू कहाए लागल। कर्नाटक के बारे में इहो एगो बहुत रोचक बात बा कि इहां हमेशा देश से उलट राजनीतिक लहर चलेला। सत्तर बे दशक में जब चारू ओर जेपी के लहर रहुए तब इहां से कांग्रेस जीतल रहुए, इंदिरा गांधी आपातकाल के हार के बाद कर्नाटक में चिकमगलूरू से उपचुनाव जीत लेले रहली। एही तरह 1980 में इंदिरा गांधी के हत्या के बाद जब पूरा देश में राजीव गांधी आ कांग्रेस लहर रहे त कर्नाटक में रामकृष्ण हेगड़े के जनता पार्टी के सरकार बनल रहुए। फेर 1989 में राजीव गांधी जब बोफोर्स दलाली के नाम पर पूरा देश में चुनाव हार गईल रहुअन त कर्नाटक में कांग्रेस के दु—तिहाई बहुमत मिलल रहे। 1999 में वाजपेई जी आ भाजपा के लहर रहे त कर्नाटक में कांग्रेस के एसएम कृष्णा के सरकार बनल। 2004 से 2009 में कांग्रेस पूरा देश में मजबूत भईल, मनमोहन सिंह लागातार दू बार प्रधानमंत्री बनलन तब कर्नाटक में दुनु बार भाजपा जीत गईल। आ अब देश में मोदी लहर बा, केन्द्र में भाजपा सरकार बिया त कर्नाटक में कांग्रेस के शासन बा।

देखल जाओ त जेपी आंदोलन के सबसे दुखद पक्ष इहे ह कि सोच, संकल्पना में इ आंदोलन जेतना महान आ बदलाव के संभावना वाला रहुए, असलियत के जमीन में सब चकनाचूर हो गईल, कर्नाटक में भी जेपी के संपूर्ण क्रांति के बात करेवाली जेडीएस जब मौका पड़ल, जहां फायदा बुझाईल ओकरे साथ हो गईल, कर्नाटक में कांग्रेस, भाजपा दुनू के संगे जेडीएस सरकार बनवले रहे। खैर, जेपी के असर के एगो और पक्ष बा उ इ कि हम बंगलूरू में रहेनी अउर बिहार यूपी लेखा एईजुगियों जेपी नगर बा। साथे साथे बीदर, गुलबर्गा आ कर्नाटक हर जिला में ढ़ेर छोट बड़ अईसन संस्थान बा जेकर नाम जेपी प बा। एह में नीक बात इ ह कि जेपी के नाम सरकारी औपचारिकता नईखे बलिक आजुओं लोग के बीच उनकर लोकप्रियता बा, 1974 के संपूर्ण क्रांति भले कामयाब ना भईल बाकि लोग अबहियों राजनीतिक, सामाजिक बदलाव के सवाल प जेपी के संदर्भ राखिए के चलेला।

जे.पी. आंदोलन के सांस्कृतिक पक्ष

सरोज सिंह

कवनो क्रांति असहिं ना सुरु होला, एकाएक त कब्बो ना । सत्तर के दसक के सुरु में ही महंगाई, भ्रष्टाचार, बेकारी के जोर एतना बढ़ल कि, एकरा बिरोध में जय प्रकाश जी "युथ फॉर डेमोक्रेसी" के अभियान चलSइले। परिणामतः इ आंदोलन के आग बिहार से उठ के सगरो देस में फईल गईल । ए जनांदोलन में साहित्यकार अउर संस्कृतिकर्मी लोग के भी एगो नया आयाम मिलल। फणीश्वर नाथ रेणु, नागार्जुन, काशीनाथ पाण्डे, रविन्द्र भारती, राज इंकलाब जइसन विद्रोही साहित्यकार, चित्रकार, रंगकर्मी के नया भूमिका में अवतरित भईल लोग अउर जनआन्दोलन में बढ़चढ़ के हिस्सा लिहलस लोग। जगह-जगह नुक्कड़ कविता ,गीत ,नारा ,पोस्टर अउर अनशन , आन्दोलन के आग में घीव के काम कईलस !

1974 में आन्दोलन के कवि लोग के कविता के संग्रह "समर शेष है" के लोकार्पण भईल जेकर भूमिका में डा. रघुवंश लिखले बाड़े कि "निश्चित ही ई एगो अजीब दृश्य रहल जब कवि अउर रचनाकार आन्दोलन के अंग बन गईल रहे लोग । इतिहास में पहला बेर इतना ब्यापक स्तर पर आन्दोलन के साथ रचनाकार लोग एकरस हो गईल ! ई एगो नया अनुभव अउर कविता के नया भूमिका रहे ("समर शेष है" के भूमिका से)

बिहार आन्दोलन के सांस्कृतिक पक्ष से निकलल मूल्य अउर बिचार आज भी ओतने सजीव और सकारात्मक बा । एकर सबसे महत्वपूर्ण अवदान बा प्रतिरोध के स्वर जवन ई चालीस साल में प्रखर से प्रखरतर होत गईल । नुक्कड़ नाटक आज के समय के जरुरत बन गईल बा । इ कुल जे पी जनांदोलन के देन हS !

कुछ नुक्कड़ कविता (अनुवादित)

निमक मिर्च चिनिया बेदाम

खा पियS करS आराम

पाचक बा जनता के नाम

पच जाला मुलुक तमाम

नेता लोग के करS प्रणाम ।

(स्व.गोपिबल्लभ सहाय)

...

एगो बूढ़ आदमी मुलुक में भा ई कहीं

ई अन्हार कोठरी में एगो रोसनदान बा

एगो गुड़ीया के कई गो कठपुतली में जान बा

एगो शायर इ तमासा देख के हैरान बा !

...

(दुष्यंत कुमार)

महकी बिन बाजे भी बजापते करीब हो

चन्दन के एगो सितार बा एगो बूढ़ आदमी

जनक्रांति झुग्गियन से जब तक न होई सुरु

ई मुल्क पर उधार बा एगो बूढ़ आदमी !

(सूर्यभानु गुप्त)

सरोज सिंह

बलिया , युपी के रहे वाली सरोज सिंह जी , हिन्दी भोजपुरी आ बंगला साहित्य मे उभरत एगो बरिआर नाव बानी । हाले मे इँहा के लिखल हिन्दी काव्यसंग्रह " तुम तो आकाश हो " आईल ह । भोजपुरी मे सैकड़न गीत गजल कविता कहानी के रचना कई चुकल बानी । पाक कला मे दक्ष सरोज जी एह घरी गाजियाबाद मे बानी ।

धर्मवीर भारती जी के "जेपी बाबू" पर लिखल प्रसिद्द हिंदी कविता "मुनादी" के भोजपुरी रूपांतरण ! - सरोज सिंह

मुनादी

Jayaprakash Narayan

खलक खुदा के मुलुक बाश्शा के
हुकुम शहर कोतवाल के
हर खास-ओ-आम के आगाह कइल जाता
कि खबरदार रहS
 अउर आपन केंवाड़ी के भीतर से
सिटकिनी चढ़ा के बंद कर ल
खिड़की के पर्दा कुल गिरा ल
अउर लईकन के बाहर सड़की पर मत भेजS
काहे से कि
एगो बहत्तर बरिस के बूढ़ आपन
कांपत कमजोर आवाज़ में
सड़क पर सांच बोलत निकल पड़ल बा
 शहर के हर आदमी ई जानSता
की पच्चीस साल से तकलीफदेह बा ई
कि हालात के हालात के तरह बयान कईल जाओ
की चोर के चोर अउर हत्यारा के हत्यारा कहल जाओ
के मार खात भला आदमी के
अउर इज्जत लूटात औरत के
अउर भूख से पेट दबवले ढाँचा के
अउर जीप के नीचे कुचलात बच्चा के
बचावे के बेअदबी कईल जाओ
जीप अगर बाश्शा के ह तब
उ बच्चा के पेट पर से गुजरे के हक काहे नइखे ?
आखिर सड़क भी त बाश्शा के बनावल ह
बूढ़ के पीछे भागे वाला अहसान फारमोस लोग!
का तू लोग भुला गईला कि बाश्शा
हमनी के बढ़िया माहौल देले बा
भूख से सही ,तु लोग के दिन में तारा नजर आवेला
अउर फूटपाथ पर फ़रिश्ता के पंख
तु लोग प छांह कईले रहेला
अउर हर लेम्प-पोस्ट के नीचे खड़ा हूर
मोटर वालन के तरफ लपकेले
जईसे जन्नत उतर आईल बा जमीन पर;
तू लोगके ई बूढ़ के पीछे दउड़ला से
भला अउर का हासिल होई ?
 आखिर का दुश्मनी बा तहार ओ लोग से
जे भलमनसाहत से आपन कुर्सी प चुपचाप
बईठल-बईठल मुलुक के भलाई खातिर
रात-रात भर जागेलन सं
अउर गाँवन के नाली के मरम्मत खातिर
मास्को,न्यूयार्क,टोकियो,लन्दन के ख़ाक
छानत फकीरन के तरह बउड़ीआत फिरेलन सं
तूड़ दिहल जाई गोड़
अउर फोड़ दिहल जाई आँख
अगर तू आपन गोड़ से चलके
महल के चार दिवारी फलांग के
भीतर झांके के कोसिस कईला
का तू न देखला उ लाठी ?
जेसे हमनि के एगो पलंठ जवान
ई निहत्था कांपत बूढ़ के ढेर कर देहलस ?
उ लाठी हमनी के समय बीतला के साथ
गहराई में गाड़ देले बानी जा
ताकि आये वाला नसल देखे
अउर हमनी के जवांमर्दी के दाद दे
अब पूछS कि कहाँ बा उ सांच जवन
ई बूढ़ सड़की पर बकल सुरु कइलस
हमनि के रेडिओ के आवाज ऊँचा करा देले बानी जा
अउर कहल गईल बा कि फ़िल्मी गाना जोर से बजावS

ताकि थिरकत धुन के दिलकस बुलंदी में
ई बूढ़ के बकवास दब जाये
बुरबक बच्चा सब पटक देले बाड़न सं पोथी और बस्ता
फेंक देले बाड़न सं स्लेट अउर खड़िया
ई नामाकूल जादूगर के पीछे मूस जइसन
फदर-फदर भागत चलल आवSतारे सं
अउर जेकर लईका परसो मारल गईल
उ सड़की प निकल आईल बीया
खबरदार ई मुलुक तहार ह
पर जहाँ बाड़S उहें रहS
ई बगावत बरदास्त ना कईल जाई कि
तू रास्ता तय करS अउर मंजिल तक पहुचS
ऐ बार रेल के चक्का हमनिका खुद जाम कर देब जा
नाई कुल बीच धार में रोक दिहल जाई
बैलगाड़ी सड़क-किनारे नीम तर खड़ा कर दिहल जाई
ट्रक कुल नुक्कड़ से लौटा दिहल जाई
सब आपन-आपन जगह ठप
काहे से कि इयाद राखS कि मुलुक के आगे बढे के बा
अऊर ओकरा खातिर जरुरी बा कि
जे जहाँ बा उहें ठप कर दिहल जाओ; अगुता मत

तोहके जलसा-जुलुस,हल्ला-गुल्ला,
भीड़-भड़कका के सवख बा
बाश्शा के ख़ास हुकुम से
ओकर आपन दरबार जुलुस के रूप में निकली ; दर्शन करS!
उ रेलगाड़ी तोहें मुफुत में लाद के ले जाइ
बैलगाड़ी वालन के दोहरवनी बख्शीश मिली
ट्रक कुल के झंड़ी से सजावल जाई
नुक्कड़-नुक्कड़ प प्याऊ बईठावल जाई
अउर जे पानी मांगी, ओके इतर वाला सरबत पेस
कईल जाई
लाखन के संख्या में सामिल होके उ जुलुस में
सड़की प पैर घिसत चलS
ताकि उ खून जवन ई बूढ़ के वजह से बहल बा
उ पोछा जाय
बाश्शा सलामत के खूनखराबा पसंद नइखे।
.....
बाश्शा= बादशाह
खलक = सृष्टि

1980 में अमर चित्र कथा छोट लइकन के पढे खातिर जयप्रकाश नारायण जी के जीवनी चित्र-कथा के रूप में निकलल रहे। आजो उनकर इ चित्र-कथा उपलब्ध बा जवना के अमर-चित्र कथा के वेबसाइट से किनल जा सके ला चाहे डाक से मंगावल जा सके ला । लिंक नीचे बा -

http://www.amarchitrakatha.com/in/jayaprakash-narayan

www.bhojpurisahityangan.com

विजया भारती : लोक गीत

विजया भारती

व्यथा गीत

बिना नोकरिया वाला दुलहा लइलऽ बाबूजी
हमर करमवां कहंवां धंसइलऽ बाबूजी
हमरा के कुइंयां में भंसइलऽ बाबूजी

चट मंगनी पट बियाह करइलऽ, कइ दिहलऽ बेगाना
छूट गइल बगिया में ई चिरई के आना जाना
तनिको ममता मोह ना देखवलऽ बाबूजी
हमर करमवां कहंवां धंसइलऽ बाबूजी

कामकाज ना मिलल पिया के बदलल ना तकदीर
देखि देखि के सुन ए बाबूजी उठे करेजवा पीर
तूं त आपन बोझवा हटइलऽ बाबूजी
हमर करमवां कहंवां धंसइलऽ बाबूजी

ससुरा नइहर मान बा ओकर, जेकर पिया नोकरिया
सेनुर टिकुलियो कीने खाती ताकीं चारों ओरिया
एक एक पइसा खाती तरसइलऽ बाबूजी
हमर करमवां कहवां धंसइलऽ बाबूजी

(रचना तिथि-16-04-1997)

प्रणय गीत

हमका लोगवा कहेला बांवरिया हो
समझा दऽ न जी
काहे सजनी के सजना फकीरवा हो
समझा दऽ न जी

हमार तपसी भिखरिया से मनवा जुड़ल
हमरी टूटली मढ़इया में नेहिया बसल
हमका ना चाही महल अटरिया हो
समझा दऽ न जी

अजी निर्धन के नेहिया में नाथ बसे
नहीं समझे ई जगवा त काहे हंसे
नाता बंधले गगन के मदरिया हो
समझा दऽ न जी

अजी सुख दुख के मोर पिया संगिया
जइसे गउरा के निर्धन भोला भंगिया
अर्धंगी के जगवा पुजरिया हो
समझा दऽ न जी

(रचना तिथि-13-06-1989)

भारतीय लोक संगीत के क्षेत्र में श्रीमती विजया भारती के नाम कवनो परिचय के मोहताज नइखे। विजया जी संगीत के मंचन से लिहले ऑडियो-वीडियो एलबम आ टेलीविजन चैनलन के अलावे फिल्म में भी आपन कला के जादू बिखले बाड़ी। 'भारतीय सास्कृतिक संबधं परिषद' (आई सी सी आर) विजया भारती के दुनिया के 20 देशन में भोजपुरी गायन करे खाति भेजले रहे जवना से उनका प्रतिभा के अंर्तराष्ट्रीय पहचान मिलल। हिन्दी आ संगीत में डबल एम. ए. करे के अलावा, विद्यावाचस्पति के उपाधि प्राप्त विजया जी ज्यादातर अपने लिखल आ पारंपरिक गीत गावेली। विजया जी के अबहिन ले 'राष्ट्रीय संस्कृति सम्मान' 'स्पर्धा श्री पुरस्कार' 'कला साधिका सम्मान' आ बिहार सरकार के 'राजभाषा पुरस्कार', 'भिखारी ठाकुर सम्मान' सहित राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार/सम्मान मिलल बा।

गोदना गीत

गोदना गोदा दS हमरा आठों रे बरनवां जान
मान लS न एगो अरजिया सुनS सुनS ए परान
बंहिया प बाजूबंद हाथ में कंगनवा रे जान
गरवा में गोदा दS हमरा मोती मटर माला जान
गोदना गोदा दS ....

अंखिया में बसे सांवर तोहरी सुरतिया रे जान
छतिया बीच गोदा दS हमरा आपन सुरतिया जान
गोदना गोदा दS ....

नवां में रस घोले तोहरी बंसुरिया रे जान
रधिका बना द हमरा तू बन जा मोहनवा जान
गोदना गोदा दS ....

(रचना तिथि-24-11-1994)

कजरी

हरी - हरी चूड़िया आ हरियर टिकुलिया रामा
हरि हरि पियवा लइलन हरियर चुनरिया ए हरि

चूड़िया चुनरिया टिकुलिया हम जे पेन्हलीं रामा
हरि हरि बरसे लागल सावन के बदरिया ए हरि

पनिया जे बरसेले संगे संगे भींजे रामा
हरि हरि राजा जी के हरियर पगड़िया ए हरि

सावन भादो के हरियर महीनवा रामा
हरि हरि हरियाइल बाटे सबके मनवा ए हरि

दमके दमिनिया कारे मेघवा जे गरजे रामा
हरि हरि ताके सइंयां तिरछी नजरिया ए हरि

(रचना तिथि-24-06-2002)

माटी में खेले के मन करता

आलोक पाण्डेय

माटी माटी खेले के मन करता
फेन आपन बचपन मन परता

ताक दुरा खेलल रेंडी लड़ावल
फेन से हारे जीते के मन करता

देख के तहरा के मन बढ़ गइल
अब फेन से रूसे के मन करता

फोन पर बात त ढ़ेर भइल लेकिन
अब तहरा के देखे के मन करता

केहू के कंधा खाली बा का
सर रख के रोए के मन करता

www.bhojpurisahityangan.com

महेंदर बाबा के जाली नोट: एगो विवेचना

उदय नारायण सिंह

लंका पर चढाई करे खातिर पुल बनावे के तईयारी में सभे बानरी सेना लागल रहे आ प्रभू राम एक जगहा ओठंग के अपना देखरेख में एह काम के निपटावत रहनीं।तबले उहां के नजर पडल एगो रुखी (गिलहरी)पर,जवन छुल्ल से पातर राह के ओह पार जाय फेर छुल्ल से एह पार आया।एने बानरी सेना मूडी पर भारी-भारी चकार ढोवे में अझुराईल रहे, जवना के समंदर में डालल जरूरी रहे।प्रभू के बुझाईल-ई रुखी त कचरा जाई। उहां के घबडा के ओह रुखिया के बोलवईनीं आ पहिले कहनीं-तहरा बुझात नईखे कि सभे बानर लोग मूडी पर पाथर ढोअता।एह में केहू के ई थोरहीं लऊकता कि तू कब एह राह के ओह पार से एह पार आवतारू आ ओह पार जा तारू ! दबा जईबू-मर जईबू त ई पाप हमरा माथे आई, आखिर तू करत का बारूS? ऊ जवाब देहलख- "भगवान ! हम छोट जीव,हमार औकात का बा बाकिर एह सत आ असत के लडाई में हमरो ई कर्तब्य बा कि हमहुं सहयोग करीं।हम देखनीं ह कि एह रहिया पर,जवना पर पत्थर के बडहन-बडहन चकार ले के बानर लोग ढोअता,ओह पर छोट-छोट अँकरऊरी(पत्थर के छोट-छोट,महीन टुकडा) गिरल बा । हमरा लागल ह कि ई अँकरऊरी ओह लोग के गोर में गडी,त दरद होई आ काम में देर होई । हम ओहि अँकरऊरिया के मुँह में उठा-उठा के फेंकत रहनीं हS! "भगवान के आँख में स्नेह से लोर भर गईल । उहाँ के बडी प्यार आ दुलार से ओह रुखी के पीठ पर हाथ फेरनीं आ कहनीं कि जा तहार पीठ पर हम चिन्ह पार देहनीं (सर्टिफिकेट भेंट कईनीं) आ आजो सब रुखी लोग के पीठ पर ओह सेवा के चिन्ह लऊकेला।ई चिन्ह भगवान राम के ही देहल ह। (भोजपुरिया बधार में प्रचलित एगो कथा) ।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के लडाई में जे फाँसी पर चढल,जे पिटाईल-खाली उहे लोग आंदोलनकारी कहाए के हक राखताS, आऊर लोग के सहयोग,जवन तरहा-तरहा से लोग निबहलख,ऊ लोग आंदोलनकारी ना हS ?उपर के दंत कथा लिखे के पाछे हमरा कहे के इहे परजोजन बा कि महेन्दर बाबा के ओकर सर्टिफिकेट मिले के चाहीं, जवन उहाँ के अपना स्तर पर स्वतंत्रता आंदोलन खातिर कईनीं,भलहीं ऊ जाली नोट छापे के कामे काहे ना होखो।

साँच पुछाव त महेन्दर बाबा के भोजपुरिया समाज ऊ पुरस्कार,ऊ इज्जत ना देहलख,जवना के उहां के हकदार रहीं आ एकरा पाछे एकलौता कारण उहां के संगे जुडल"ढेला बाई"के नाम बा।आज के एह लेख में हमनीं के एहु परिस्थिति पर थोडा-बहुत विचार करे के पड़ी ।

आजादी के पहिले भोजपुरिया समाज में मरद लोग खातिर भी एतना आजादी ना रहे कि ऊ लोग कवनो दोसर मेहरारुअन संगे आपन रिश्ता राखो।एकरा के पाप मानल जात रहे आ एक तरह से अऊसन लोग के सामाजिक बहिष्कार कर देहल जात रहे। (एकर प्रभाव कुंवर सिंह के उपर भी पडल बा,जब उहां के धर्मन बीबी के संगे जुडल रही।) समाज के एगो तबका एकर विरोध करत रहल बा आ ई कारन महेन्दरो बाबा के साथे रहे। दरअसल महेन्दर बाबा के बाबु जी हलवंत सहाय जी के पुरोहित रहीं आ बुढा गईल रहीं।अईसनका स्थिति में उहां के पुरोहतई के जिम्मेवारी महेन्दर बाबा के देहनीं, जे एगो पहलवान, घोरवईया, गवईया, गीत लिखवईया के संगे शोख-नवहा आ चोख मरद के रूप में प्रसिद्धि पा चुकल रहस । आपन बाबुजी के बात टालल संभव ना रहे बाबा के।एने हलवंतो सहाय के, जे विधुर के जिंदगी जीअत रहस,एगो मनमाफिक पुरोहित के जरूरत रहे, जे हलवंत जी के दुख-सुख के संघाती भी बन सके आ पुरोहतई भी कर सको।मजबूरी जवन ना करावे,ऊ हो गईल,जवना के चटके के इंतजार ना जाने कहिया से करत रहे।एगो विधुर के दरद, एगो साहित्यकार के ना बुझाई त केकरा बुझाई? महेन्दर बाबा के लेखनी के तूती पुरा बधार में बोलत रहे आ उहां के साहित्यिक प्रसिद्धि पूरा पूर्वांचल के बधार में

उदय नारायण सिंह

संगीत के शिक्षक , लोकगायक आ भोजपुरी संगीत में नवीन प्रयोग करे खातिर उदय नारायण सिंह जी जानल जानी । छपरा , बिहार के रहे वाला हईं। इँहा के भोजपुरी भाषा साहित्य आ संगीत में हरदम कुछ नया, कुछ अलग करे खातिर प्रयासरत रहेनी । अभी छपरा में बानी ।

फईल चुकल रहेlई संजोगे रहे कि गया के बाई जी-ढेला बाई-नाचे आईल रही मुजफ्फरपुर आ ओह नाच में हलवंत सहाय अपना पुरोहित संगे गईल रहींlमन डोल गईल सहाय जी के ढेला बाई के देख के आ उहां के निहोरा कईनीं अपना पुरोहित आ दुख-दरद बुझे वाला साहित्यिक इयार से-"बाबा,टंगवा दीं ना एकरा के हमला खातिर!हमार जिनगी के बाकी दिन कट जाई। "बाबा के सोझा पुरोहित के ना बल्कि एगो विधुर दोस्त के साथी बन के साथ निभावे के मजबूरी आ गईल।

बाबा आपन लठुधर के भिडवनी ढेला बाई के टांगे खातिरlलठुधर के देखते ढेला बाई पुछली-"ई केकरा खातिर हमरा के टांगत बानीं लोगिन?"जवाब मिलल- "महेन्दर मिसिर खातिर"।अब लठैतन के का पता रहे कि सहाय जी के लफडा बा? एने ई नाम सुनते ढेला बाई एडी से मूडी ले झनझना गईलीlरोवां-रोवां गिनगिनाए लागल आ ऊ राजी-खुसी एह नाम पर चले के तईयार हो गईली आखिर उनका सपना के राजकुमार,जेकर सपना,जेकर चर्चा ऊ केतना दिन से देखत-सुनत रही,उहे ओकरा के आपन बनावे के तईयार बा त देर काहे?बेचारे महेन्दर बाबा! उनका त इ पता भी ना रहे कि हम जवन ढेला बाई के हलवंत सहाय के ब्याहता बनावे खातिर टंगवावत बानीं,ऊ हमार भक्त हई आ हमरा के आपन प्रेमी मान चुकल बारीl

समय काल के लिखल केहु कईसे मिटावो-आखिर उहे भईल,जवन देव चाहत रहसlहलवंत सहाय जब ढेला बाई लगे प्रणय-निवेदन ले के गईलें त ऊ चऊँकली आ पुछली- "रऊरा के हईं? ""हम हलवंत सहाय आ हमरे खातिर महेन्दर बाबा तहरा के टंगवईले हंऽ ! "ऊ आपन कपार ध ले ली-"ई का भईल रे दादा,हमरा संगे एतना बडहन षडयंत्र?" ढेला बाई जिद्दीआ गईली- "महेन्दर मिसीर जी आएम तबहीं हम खाएम भा पानी पिएम"।बोलावल गईनीं बाबा आ सोझा गईनीं उहां के ढेला बाई केlऊ बेचारी गोड धऽ लेहलीlकह उठली-"हमरा से कवन जनम के बदला लेहनीं ह?हम त रऊरा के आपन मननींlरऊरा नाम पर जिनगी के दांव पर लगा देहनींlरऊरा हमरा के हऊ बूढ संगे कईसे बान्ह सकतानीं? हम त जब बिआह करेब भा केहु के होखब त ऊ एकमात्र नाम राऊरे रही।" बाबा के चेहरा फक्क हो गईलlउहां के कह उठनीं-"देखऽ ढेला!हम त आजतक तहरा के देखले तक ना रहनीं हlहम इहो ना जानत रहनीं ह कि तू भीतरे भीतर हमरा के आपन मान चुकल बारूlअब ई पाप त हमरा से हो गईल कि तहरा के टंगवा लेहनीं जजमान के कहला परlइहां त जजमान आ पुरोहित के रिश्ता पर अंगूरी उठे लागी,ई त नमकहरामी कहाई कि हम जजमानिन संगे रिश्ता बनाईं। "ढेला जिदिअईली आ कहली- "त हम भूखे पिआसे जान दे देहब आ इहो पाप रऊरे माथे आईlअब रऊरे एकर राह निकालीं । "एगो अजीब निर्णय लेहनीं

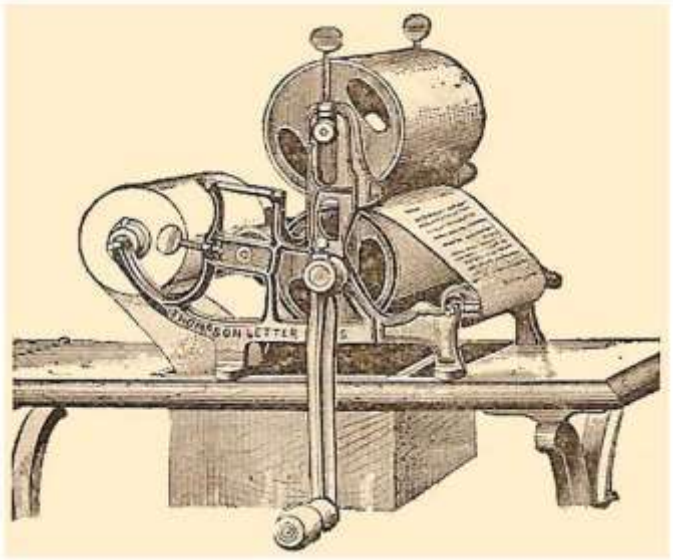

बाबा,कह उठनीं-"जा ढेला, तहरा के नाम त हम आपन देहब बाकिर देह ना छुएबlतू मन से हमार बाकिर तन से हलवन्त बाबू के रहबू।" आ साँचहुं बाबा एह बात के निबहनीं हलवंत बाबु के मुअला के बादो आ अपना भा ढेला बाई के मुअला तकlई ऊ परिस्थिति रहे के एगो साफ-सुथरा,आम आदमी के रुप में जीअत महेन्दर बाबा के पुरा जिनगी बदनामी के बोझा ढोए के पडलl

"स्वतंत्रता आंदोलन में कोठावालियों की भूमिका", जईसन मुद्दा पर लेखक रविराज पाटिल के एगो शोधपरक लेख छपल बा,ओह में उहां के लिखले बानीं-तब नगर वधुओं के भवन,नगरों के सांस्कृतिक-राजनीतिक गतिविधियों के केंद्र हुआ करते थेlलखनऊ की तवायफों ने नवाबों को तहजीब सिखलाए, स्वतंत्रता आंदोलन में बागियों को शरणगाह भी उपलब्ध कराएlबिहार के लोक गायक महेन्द्र मिश्र और उनकी राजनैतिक गतिविधियों का खैरख्वाह मुजफ्फरपुर की वेश्याएं भी मानी जाती रही हैं।" अनामिका ने अपने उपन्यास- 'तिनके तिनके पास' में मुजफ्फरपुर के कोठों के राजनीतिक सक्रियता का उल्लेख किया है-"जीवन का रस और मजा तो संघर्ष की धार में है।-यह उसकी माँ ने उसे घुट्टियों में पिलाया था और माँ की नानी ढेला बाई को,उसकी नानी अफसाना बेगम ने,जो 1857 के गदर में अपने आशिक-पीर जी घसियारे-की नृशंस हत्या के बाद दिल्ली से बचते -बचते कानपुर और फिर कानपुर से मुजफ्फरपुरlमुजफ्फरपुर में क्रांतिकारियों की शरणस्थली उनका कोठा रहाlएक अर्से तक क्रांतिकारी वेश्याओं का एक अखिल भारतीय मुखपत्र भी वहां से निकालती रहींlपं. रमाबाई ने जब पुणे में'शारदा सदन'खोला,तब वेश्याओं के गुरु महेंद्र मिश्र की पहल पर उनकी नवासी-ढेला बाई-वहां ठुमरी शिक्षिका नियुक्त हुई।"

एह शोधपरक लेख में ढेला बाई के चर्चा का पाछे हमार ई

उद्देश्य छुपल बा कि आखिर जब ढेला बाई एतना सक्रिय रहलीं,उनकर माईऽ,माई के नानी सक्रिय रहली तऽ हमनीं के महेन्दर बाबा कवनो मुँहचोर रहस काऽ कि डेराऽस?उनका शरणगाह मिलले रहे,"मेंस पावर के बदले ओमेंस पावर"ही सही,उपलब्ध रहे,त एह आंदोलन के हवा देवे में का दिक्कत रहे?
बाकिर ना ! एगो दिक्कत रहे आ ऊ रहे अर्थ के;पईसा के ! एकरा खातिर उनकरा कवनो ना कवनो उपाय करे के रहे आ ई उपाय भईल जाली नोट छाप के ब्रिटिश साम्राज्य के रीढ तूडे के,ओकर छटपटी छोडा देवे के।संजोग से ई कारोबार बिना कवनो रोक टोक के ढेर दिन तक चलल।कलकत्ता से धईले गाजीपुर आ बनारस तक महेन्दर बाबा के ई भूमिका निर्विघ्न रुप से फलत-फूलत रहल।हल्ला त होखहीं के रहे आ ऊ भईल । गोपीचंद जासूस बन के सी आई डी के इंसपेक्टर,जे पटना के एगो लाला रहस (दुर्भाग्यवश नाम नईखे इयाद पडत), एगो नौकर बन के महेंदर बाबा इहां गोबर सानी करे वाला नौकर के रूप में बहाल भईलें।साल-डेढ साल के बाद थाह-पता ले के ऊ छापा पडवईलें आ एह कहानी के एगो नया रुप भी देखे के मिलल कि जब ऊ जेल में रहलें त छपरा के सब तवायफ जज लगे जाके आपन गहना -गुडिया राख के कहलस लोग-"रऊरा एक तरफ महेन्दर बाबा के तरजुई पर राखीं आ दोसरा तरफ हमनीं के गहना-गुडिया।उनकरा के तऊल के ऊ सब गहना ले लीं बाकिर हमनीं के बाबा के छोड दीं।"अईसन मुहब्बत,अईसन समर्पण, अईसन दिवानगी कवनो लफुआ,गुंडा खातिर ना हो सके।साँचहुं हमनीं के बाबा स्वतंत्रता सेनानी रहीं,तबहीं नूं-भोजपुरी फिल्मों का सफरनामा-में लेखक कहले बाडें-"जद्दन बाई/नसीर खान ने महबूब खान की फिल्म तकदीर में नर्गिस की भूमिका पर फिल्माए जाने के लिए,पूरे बधार में तब चर्चित ठुमरी-बाबू दरोगा जी,कवने कसूर पर धर लियो पियवा मोर-के वास्तविक धुन को ज्यूं का त्यूं रखवाने की जिद्द की । इस गीत के कारण हिट हुई फिल्म में भोजपुरी के महत्व को रेखांकित कर ही भोजपुरी में फिल्म बनाए जाने की योजना का बीजारोपण हुआ।

बाबा के हऊ चर्चित गीत-हँसी हँसी पानवा खिअवले गोपीचनवा,पनवा खिआ के भेजले जेहल खानवा-अइसहीं थोडे लिकाईल रहे। गोपीचंद जासूस के बेटा आजो पटना में जिंदा बाडें,जे छपरा आईल रहस त अपना बाबूजी के मुँहे सुनल किस्सा के एगो प्रेस कॉन्फ्रेंस में रखले रहस। जेकर बडी चर्चा भईल रहे।ओईसे भी राजेन्द्र बाबू अपना किताब-चंपारण में गाँधी जी-लिखले रहीं,ओह में एगो गवाही देवे खातिर 1917 में महेन्दर बाबा के 18वाँ नंबर गवाह के रुप में पेशी के चर्चा कईले बानीं।

वास्तविकता त ई बा कि महेन्दर बाबा पर ईमानदारी से कवनो शोधपरक काम नईखे भईल।एगो एतना बडहन व्यक्तित्व के धनी आदमी के खिस्सा अन्हरिये में रह जाव,ई रऊरा लोगिन चाहेब?आईं!नया सिरा से उहां के इतिहास के आग के खऊरल जाव,जवना में स्वतंत्रता के जोत जरत रहे।शायद आवे वाला काल्ह में एगो आऊर कहानी उपटो।

भोजपुरी फिल्मों का सफरनामा एक किताब में

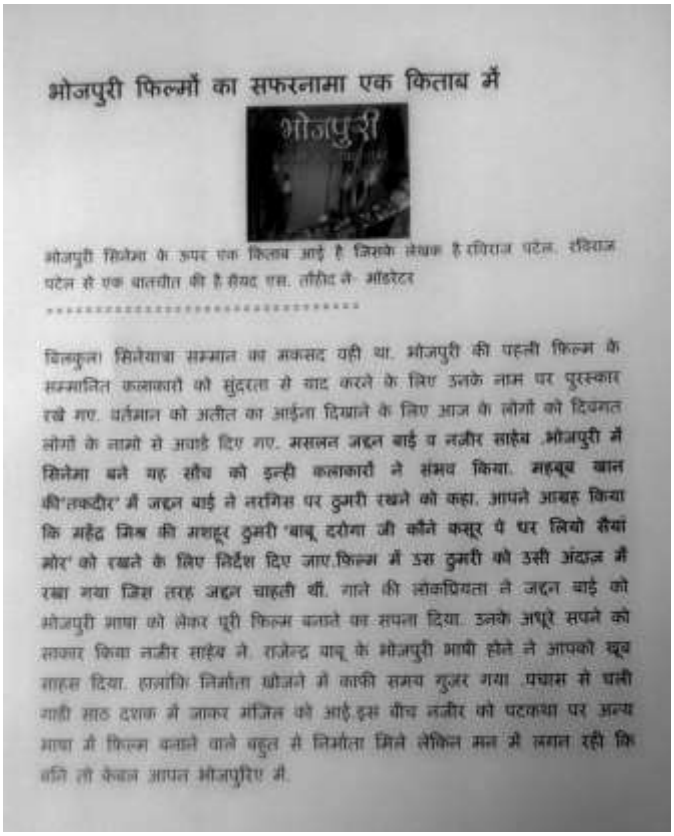

भोजपुरी सिनेमा के ऊपर एक किताब आई है जिसके लेखक है रविराज पटेल. रविराज पटेल से एक बातचीत की है सैयद एस. तौहीद ने- ऑडरेटर

****

बिल्कुल। सिनेयात्रा सम्मान का मकसद यही था. भोजपुरी की पहली फिल्म के सम्मानित कलाकारों को सुंदरता से याद करने के लिए उनके नाम पर पुरस्कार रखे गए. वर्तमान को अतीत का आईना दिखाने के लिए आज के लोगों को दिवगत लोगों के नामों से अवार्ड दिए गए. मसलन जद्दन बाई व नज़ीर साहेब .भोजपुरी में सिनेमा बने यह सोच को इन्हीं कलाकारों ने संभव किया. महबूब खान की 'तकदीर' में जद्दन बाई ने नरगिस पर ठुमरी रखने को कहा. आपने आग्रह किया कि महेंद्र मिश्र की मशहूर ठुमरी 'बाबू दरोगा जी कौने कसूर पे धर लियो सैयां मोर' को रखने के लिए निर्देश दिए जाए.फिल्म में उस ठुमरी को उसी अंदाज़ में रखा गया जिस तरह जद्दन चाहती थीं. गाने की लोकप्रियता ने जद्दन बाई को भोजपुरी भाषा को लेकर पूरी फिल्म बनाने का सपना दिया. उनके अधूरे सपने को साकार किया नज़ीर साहेब ने. राजेन्द्र बाबू के भोजपुरी भाषी होने ने आपको खूब साहस दिया. हालांकि निर्माता खोजने में काफी समय गुजर गया .पचास से चली गाड़ी साठ दशक में जाकर मंजिल को आई.इस बीच नज़ीर को पटकथा पर अन्य भाषा में फिल्म बनाने वाले बहुत से निर्माता मिले लेकिन मन में लगन रही कि बनि तो केवल आपन भोजपुरिए में.

[illegible]

1. Champaran Mein Mahatma Gandhi
https://books.google.co.in/books?isbn=8173156789
Rajendra Prasad

[illegible]

महेंदर मिसिर के लोक गीतन में नारी

सुस्मित सौरभ

भोजपुरी लोकगीतन के परंपरा में पूरबी विधा के जनक महेंदर मिसिर जी के नाम आज भारत में ही ना बलुक बिदेसो में भी कवनो पहचान के मोहताज नईखे। बिहार के छपरा जिला के मिश्रवलिया के माटी में जन्मल मिसिर जी के गीतन में पूरबी, निर्गुण, भजन, प्रेम-विरह गीत के एगो पुरान परंपरा देखे के मिलेला। निर्गुण संत साहित्य के गहन अध्ययन कइला प ई बुझाला कि महेंदर मिसिर के पहिले भी इ संत लोग पूरबी के नांव से कई गो पद लिखले रहे बाक़िर मिसिर जी के पूरबी गीतन के तासीर ही कुछ अलग रहे। जहाँ निर्गुणिया संतन के पूरबी पद रसहीन, रुखर आ अध्यात्मिक रहे ओहिजे मिसिर जी के पूरबी में भक्ति, प्रेम, विरह आ सिंगार के समावेस प्रमुख रूप से मिलेला। इ गीत ना त कवनो परंपरा के उपज हवन स ना ही केकरो नकल। मिसिर जी के शास्त्रीय संगीत के ज्ञान भी बेजोड़ आ गंभीर रहे आ इहाँ के लोक गीतन के लगभग हर विधा के रचना चाहे उ पूरबी होखे भा निर्गुण भा भजन सफल रूप मे कइले बानी। इहे ना उनका रचनाक्रम में गीतात्मक काव्य रचना के गुण बड़ा ही सुगमता से दृष्टिगत होला। उहाँ के गीत अर्थ आ अनुभव के परत दर परत उघारत चल जालन स आ अक्षर तथा ध्वनि के सामंजस्य से सब ही संगीत के सरिता बहे लागेले। पूरबी राग उनका स्वर लहरी में हिलोरा लेला त ओहिजे गीतन में पहाड़ी नदी के वेग के तेजी देखे के मिलेला साथ ही झर-झर बहत ठंढा बेयार के सुहावन छुअन भी। भाखा के सहजता आ भाव के गहराई उहाँ के गीतन के असली पहचान बनेला। बोल आ भाव के मिश्री में पागल उहाँ के गीत केहु के अन्तर्मन के छुवे, सहलावे के क्षमता राखेला। मिसिर जी के गीतन के इहे खासियत ही उहाँ के एगो समर्थ कवि आ गीतकार के रूप में स्थापित कइले बा। उहाँ के गीत आम जनजीवन के गीत ह जेकरा माध्यम से लोक जीवन के दर्द, प्रेम, पीड़ा, खुसी जइसन भाव के सजीव अभिव्यक्ति मिलेला। आम जनता के रुचि आ संस्कार के परिस्कार करे के क्रम में मिसिर जी अपना खातिर आपन एगो मंच भी अपनहीं बनवनी। हाँ, इहाँ के गीतन में गंवारुपन भा भदेसपन, ठेंठपन के आग्रह ना देखे के मिले आ इ गीत आज भी लोककण्ठ के माध्यम से बिस्तार पा रहल बाड़न स आ वाचिक परंपरा के पोसक भी बनल बाड़न स। दुनिया के प्रेम नगरिया बतावे वाला महेंदर मिसिर के पहचान कई गो रूप में बनल जइसे गीतकार, देशप्रेमी, गवैया, बजवनिहार जइसन कई गो रूप में बाक़िर उहाँ के कवनो एगो पहचान साठे जिनगी बितावे खातिर तइयार ना भइनी।

महेंदर मिसिर के गीतन के बोल, ओकर एक एक गो शब्द लोक मानस से बतियावत, बतकुचन करत सीधे करेजा के गहराई में उतर जालन स। उहाँ के गीतन के आकलन कइला प हमनी के मिलेला कि मिसिर जी आपन रचना में नारी चरित्र के प्रमुखता से चित्रित करे के प्रयास कइले बानी। चाहे उहाँ के पूरबी होखे, चाहे निर्गुण भा विरह गीत होखे हर जगह नारी के टूटन, दर्द, पीड़ा, प्रेम, पहचान के स्वर देबे के भरपूर कोसिस कइल गइल बा। एकरा मूल में चाहे उहाँ के व्यक्तिगत जीवन में औरतन के महत्वपूर्ण भूमिका होखे भा उहाँ के रचना पर ओह समय के साहित्यिक देसकाल के प्रभाव चाहे विभिन्न नजदीकी नारी कलाकारन के दसा देखके मन में उठत समाज सुधार के भावना। उहाँ के रचित लोक गीत समाज में फैलल कुरीति, दुर्व्यवस्था के चलते मन में उमड़ल खीझ के सहज परिचायक बनल। कुल्टा नारी, बेमेल बियाह, भरठ आचरन, ससुरा में सास-ननद द्वारा कनिया प कइल अत्याचार आदि के माध्यम से स्त्री मन के सघन अभिव्यक्ति मिसिर जी के गीतन में सहजता से देखे के मिलेला। मिसिर जी के गीतन में नारी चरित्र के प्रमुखता से चित्रण के संभावित कारन पर बिस्तार से चर्चा कइल एहिजा जरूरी बुझा रहल बा आ एकरा क्रम में-

पहिलका कारन के रूप में मिसिर जी के जीवन में ए गो से अधिक नारी के उपस्थिति रहल बा। मिसिर जी के बारे में कहल जाला कि उहाँ के मुजफ्फरपुर के रहेवाली गायिका-तवायफ ढेलाबाई के प्रेम में डुबल गहिराह प्रेमी रहीं। उहाँ के एगो अइसन गीतकार रहीं जे देशभक्त लोग के मदद देशभक्ति गीत के बल पर ना बलुक ओह पईसा से करत रहीं जवन स्त्री मन के समझे आ प्रेम के जरिये दुनिया के खूबसूरत गीतन के माध्यम से आवत रहे। एही क्रम में उहाँ के जिनगी में केसरबाई, विद्याधरीबाई, सोनाबाई जइसन कई गो तवायफ, नर्तकी आ गायिका आइल लोग

सुस्मित सौरभ

करनौल भोजपुर के रहे वाला सुस्मित सौरभ जी वायुसेना में कार्यरत बानी। इहाँ के कविता, कहानी, निबंध आदि लिखत रहेनी। अनेक पत्र-पत्रिका में भी इहाँ लिखल प्रकाशित होत रहेला। ए घरी इहाँ के नागपूर में कार्यरत बानी।

। कहल जाला कि एक बेर जब मिसिर जी जेल में डालल गइनी त बनारस से लेके कलकत्ता तक ले कई गो गायिका आ नर्तकी आपन पूरा कमाई लेके पहुँच गइल लोग कि जमानत में जवन चाहीं, जेतना रूपिया-पइसा चाहीं सब ले लेल जाव बाक़िर मिसिर बाबा के छोड़ दे जाव। इ घटना बतावे ला कि मिसिर जी से ओह नर्तकी आ गायिका लोग के केतना नेह, छोह भा प्रेम रहे आ इ कहीं ना कहीं मिसिर जी के गीतन में उभर के आवेला।

दोसरका आ प्रमुख कारन महेंदर मिसिर के गीत रचना पर तात्कालिक साहित्यिक देसकाल के प्रभाव के रूप में देखल जा सकेला। मिसिर जी के रचनाकाल (1910-1935) के समय हिन्दी साहित्य के छायावाद काल के समय रहे । हिन्दी साहित्य में छायावादी काल के स्त्री मुक्ति भा नारी काव्य के काल के रूप में भी जानल जाला । एह समय में हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श के भावना अत्यधिक तीव्र रहे आ ओह पर आधारित काव्य के रचना के स्वर बुलंद रहे। जाहिर बा कि देसकाल के प्रभाव से त हर रचनाकार प्रभावित होला आ मिसिर जी भी अपना के एह मोह से ना बचावे पाइल होखब।

तीसरका कारन के रूप में मिसिर जी के साहित्यिक मंडली, रंगमंच, समाज आ उनका मंच से जुड़ल महिला नर्तकी लोग के जीवन के अनुभव के रूप में देखल जा सकेला। अपना मंडली के हर महिला कलाकार, नर्तकी के जीवन के दर्द के मिसिर जी बड़ा नजदीक से महसूस कईनी। ओह कलाकारन के गरीबी, मजबूरी, सामाजिक सम्मान के मिसिर जी बड़ा करीब से जियल रहीं आ ओह दर्द से उठल भाव उहाँ के हृदय से गीत के रूप में बाहर निकले लागल। मिसिर जी के स्त्री प्रधान गीतन से गुजरला प इहे बुझाला कि उहाँ के खुद एगो स्त्री के जीवन के जियल होखब। सोचला पर बुझाला कि केतना कठिन होई एगो पुरुष होके स्त्री मन के भीतर के बात के ओही भाव में सब्द के रूप दिहल?

नारी अभिव्यक्ति के गीतन के सैकड़ों उदाहरण महेंदर मिसिर जी के रचना जगत से लिहल जा सकेला। चाहे उ पिया-मिलन के विरह से अकुलाइल नायिका होखस चाहे सास आ ननद के जुलुम सहत पतोह भा अपना पिया से समाज, कल्याण के चर्चा करत कवनो कनिया। नारी मन के चित्रण के संदर्भ में मिसिर जी राम-सीता आ राधा-कृष्ण के भी अपना गीतन में आश्रय आ आलम्ब के रूप में प्रयोग कइले बानी। विरही नायिका के विकलता आ ओकर सास के कठकरेजापन के मर्मस्पर्शी चित्रण एह गीत में देखे के मिल जाला-

सासु मोरा मारे रामा बांस के छिउकिया,
ए ननदिया मोरी है सुसुकत पनिया के जाए।

लोककण्ठ के गायक मिसिर जी के गीतन में सिंगार आ अध्यात्म दूनों ही रूप प्रधान रहे आ कमाल के बात त इ रहे कि उहाँ के एह दूनों में पारंगत भी रहीं। भले इ जरूर रहे कि उहाँ के गीतन में सिंगार आ विरह ही प्रमुख रूप में मिलेला। गोपी विरह के प्रसंग में मिसिर जी के एगो गीत-

तोरी बिरही बंसुरिया करेजवा साले ना
जाही दिन से अइले कान्हा हमरी नगरिया रे
मोहनिया डारो ना
किन्ही हंसी हंसी बोलिया
मोहनिया डारो ना.

लोक धुन में पागल उहाँ के गीत जब आपन अर्थजाल फैलावे ला त सुने वाला सुनते रह जाला। एगो विरही नायिका के सामाजिक स्थिति के भाव कुछ एह रूप में उभरल बा-

पिया निपटे नदनवा रे सजनी
हमरा भेंटात नईखे कनवा भ अनवा रे सजनी
चाभत होइहें मगही पनवा रे सजनी

एह गीतन के अलावे उहाँ के कई गो नारी केन्द्रित चर्चित गीतन के रचना कईनी जे कि आज के समय में भी लोगन के कंठ आ जबान पर चढ़ल रहेला आ इहे ना आकाशवाणी आ दूरदर्शन से अक्सर प्रसारित भी होत रहेला। एह गीतन में कुछ प्रमुख बा-

- अंगुरी में डंसले बिया नगिनियां हे ननदी दियरा जरा द।
- पटना से बैदा बोलाई द नजरा गइली गुइयाँ।
- हमनी के रहब जानी दुनो परानी।
- आधी आधी रतिया बोले कोयलरिया।

मिसिर जी के लेखनी के माध्यम से स्त्री मन के सरल आ सहज अभिव्यक्ति भावपूर्ण रूप में भइल। एह बात के हम एहिजा प्रमुखता से रेखांकित कइल चाहब कि मिसिर जी काफी संख्या में नारी केन्द्रित सिंगार गीतन के रचना कइनी लेकिन उहाँ के एगो गीत अइसन ना मिली जवना काम-क्रीड़ा चित्रण, अश्लील सब्द भा दू-अर्थी भाखा के प्रयोग भइल होखे। उहाँ के शुद्ध, साहित्यिक, सुंदर गीतन के रचना कईनी आ इहे कारन भइल कि महेंदर मिसिर जी राष्ट्र ही ना बलुक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एगो सम्मानजनक स्थान ग्रहण कइले बानी। मिसिर जी के लिखल भोजपुरी गीतन के आज पूरा विश्व में भी कवनो सानी नईखे आ हमरा पूर्ण विश्वास बा कि पूरा भोजपुरी जगत आवे वाला समय में भी उहाँ के गीतन के माध्यम से जानल जाई।

संदर्भ:-

- समरथ सितंबर-अक्तूबर 2011
- महेंद्र मिश्र की प्रतिनिधि कवितायें
- फूलसूंघी - पांडे कपिल

लोक के दिल में बाकी इतिहास में कगरी पऽ : महेंदर मिसिर

मुन्ना पाण्डेय

संस्कृति के ऊपर इतिहास आ परंपरा के एतना परत बा जे ओकरा के एगो परिभाषा में बान्हल मुश्किल बा । बाकी जीवन जिए के पद्धति के तौर पर संस्कृति के व्याख्या कम बेस सभे कइले बा । वास्तव में, कवनो भी जाति भा अंचल बिसेस के संस्कृति के निर्माण ओइजा के लोक, भांति-भांति के संस्कार गीतन, लोकसाहित्य, जीवन जीए के अलग-अलग शैलियन से होखेला । भोजपुरिया संस्कृति के भी बड़ा समृद्ध बिरासत बा आ एहमे एक से एक साहित्यकार आ कलाकर्मी लोग आपन-आपन योगदान कईले बा । एहि कड़ी में महेंदर मिसिर के नाम उल्लेखनीय बाटे । महेंदर मिसिर भोजपुरी प्रान्त आ भाषा के सबसे लोकप्रसिद्ध आ सम्मानित नाम बाड़ें बाकी एगो बड़ दुर्भाग्य भी उनकरा संगे जुडल बा, जवन आदमी 'पूरबी' के जनक मानल जाला आ भोजपुरिया समाज, साहित्य आ संस्कृति में एगो बड़हन नाम बा । जनता के दिल आ जुबान पर ओकर गीत बसल बा आ जेकरा से ओकरा समकालीन सब कलाकार, साहित्यकार प्रभावित रहे आ जवन आदमी राष्ट्रीय आन्दोलन के ना मालूम केतना सिपाही लोग के मदद कईलस, उ पता ना कवना साजिश भा दुर्भावना से जाने-अनजाने मे मुख्य धारा के भोजपुरी साहित्य आ संस्कृति से कगरिया दिहल गईल । उनकरा के भोजपुरिया भा बिहार केन्द्रित साहित्येतिहास लेखक लोग फुटकर रचनाकार में भी ना रखे जोग बुझलस । रउवा जोहे चलीं त भोजपुरी कवि आ कविता, भोजपुरी लोकसंस्कृति, भोजपुरी लोकसाहित्य, भोजपुरी नाट्य परंपरा, भिखारी ठाकुर आदि पर दर्जन भर शोध आ सैकड़ा भर लेख भेंटा जाई बाकी महेंदर मिसिर पर आजुवो ले एगो ढ़ंगगर शोध नइखे । हालाँकि रवीन्द्र भारती जी 'कंपनी उस्ताद' नाम से बढ़िया नाटक लिखले बानी, एगो महेंदर मिसिर के नाम से ही उपन्यास भी बा, आ एने ओर एगो किताब 'पूरबी के धाह' नेशनल बुक ट्रस्ट आ कुछ और लेखक लोग के किताब आईल बा । बाकी आजुवो महेंदर मिसिर अपना एगो सम्मानित स्थान खातिर संघर्षरत बाड़ें ।

देखे वाला बात इहो बा कि डॉ. उदयनारायण तिवारी के इतिहास-ग्रंथ 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' में भोजपुरी के कवि लोगन के गिनावे आ उनकरा लोगिन पर चर्चा के क्रम में कबीर से लेके गोरखनाथ चौबे ले 'उल्टा जमाना' तक के जिक्र बा बाकी महेंदर मिसिर के ओरी तिवारी जी के नजर कांहे नइखे गईल सोचे वाला बात बा । एही लाइन में एगो अउरी इतिहास-ग्रंथ 'हिंदी साहित्य और बिहार, तृतीय खंड, उन्नीसवीं शती उत्तरार्द्ध : पूर्वांश' बाटे, एह

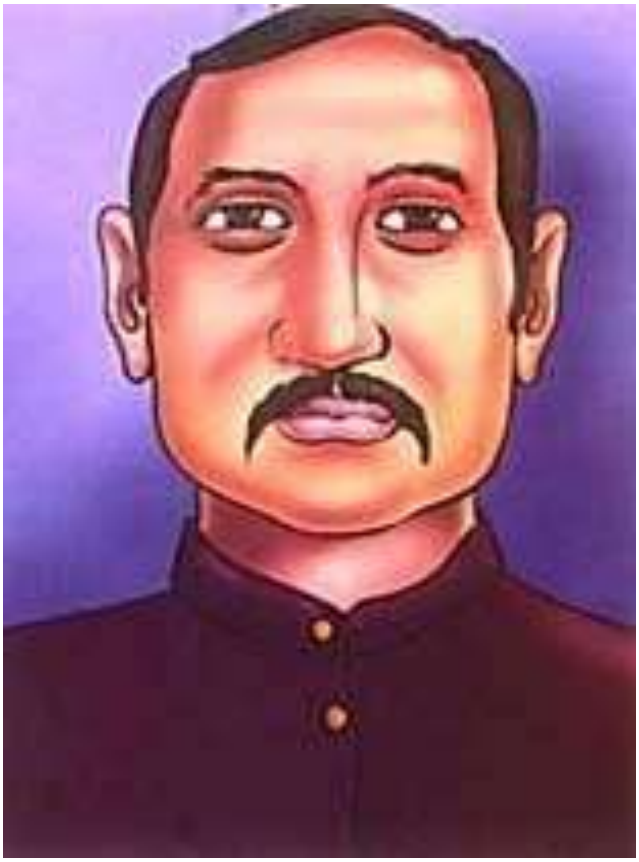

किताब में भोजपुरी के गंगा प्रसाद जायसवाल से लेके सत्यनारायण शरण तक के गिनती आ उपस्थिति बा । एकरा संगे एह किताब में एक खंड लोकसाहित्य पर बा, एह खंड में मुख्य भा फुटकर सब गुण वाला साहित्यकार बा लोग बाकि महेंदर मिसिर के बगलिया दिहल गइल बा । 'भोजपुरी लोक साहित्य' नाम से भी एगो किताब कृष्णदेव उपाध्याय जी के बा, जेमे 'बिसराम' से लेके 'अशांत' तकले के चर्चा बा बाकी महेंदर मिसिर के एहुजा फुटकरो में नइखे रखल गईल । बात एहिजा ले नइखे रुकल, कवि, समीक्षक, साहित्यकार आ भोजपुरी लोकसंस्कृति आ साहित्य के मर्मज्ञ सुनील कुमार पाठक जी के हालिया प्रकाशित किताब 'छवि और छाप राष्ट्रीयता के आलोक में भोजपुरी कविता का पाठ' में भी राम कवि से लेके तोफा राय, हीरा डोम, भिखारी ठाकुर, प्रभाकर पाठक तक ले के कविता आ ओहमे व्याप्त राष्ट्रीयता के स्वर के गहन अध्ययन विश्लेषण कईल गईल बा, बाकि महेंदर मिसिर इहवों गायब बाड़े । चूँकि भोजपुरी कविता आ राष्ट्रीयता पर ई नितांत नया किताब बिआ एहसे कृतिकार पर एकर जिम्मेदारी बहुत रहल कि साँचभाव से महेंदर मिसिर पर भी इचिकियो सा हर्फ़ खर्चा कईल जाईत । 'हमरा नीको ना लागे राम गोरन के करनी' के जिक्र करेके

www.bhojpurisahityangan.com

चाहत रहे । लेकिन एहुजा महेंदर मिसिर के हिस्सा में निराशा ही आईल बा । इ जान सुन के आश्चर्य नइखे होखे वाला कि जेकरा के आल इंडिया रेडियो के पटना प्रसारण से आजु के कई जाना कलाकार आ आम आदमी महेंदर मिसिर के नाम आ गुण सुनल-गुनल उ आज इहो नइखे सोचत कि भोजपुरी के ई नायाब हीरा कहवाँ हेरा गईल बाड़ें भा हेरवा दिहल गईल बाड़ें । एकर जिम्मेदारी खाली इतिहासकार लोग के नइखे हमनियों के बा । हद त ई बा जे जवना महेंदर मिसिर के गीत जाने-अनजाने हमनी के गुनगुनावे नी जा ओकरा बारे में केहुके बतवला पर मालूम होखेला कि ई गीत महेंदर मिसिर के हअ । महेंदर मिसिर के ही समय के महेंदर शास्त्री, भिखारी ठाकुर जइसन बड़का रतन लोग के नाम सब केहू लिखनिहार लिहले बा । लेकिन समय आ इतिहास के कवना झोंका में महेंदर मिसिर बिसरा दिहल गईल बाड़ें ? भोजपुरी अन्य सम्मानित साहित्यकार-कलाकार के चर्चा कइके, भा ई कहला के पीछे के मुख्य बात महेंदर मिसिर से तुलना के नइखे, बाकि लोग के नाम के जिक्र खाली एतने भर जे आखिर साहित्य इतिहास लेखन के क्रम में इतिहासकार लोगिन के मन में उ कवन प्रवृत्ति काम करत रहे जे महेंदर मिसिर हाशिया पर ढाह दिहल गईले ? भोजपुरिया माटी के सारण के रहे वाला आ पूरबी के रचयिता महेंद्र मिसिर, सारण के एगो ब्राह्मण परिवार में जनम लेके लीक से अलगा हटके भोजपुरी कलाकर्म आ काव्य के एगो व्यापक फलक तक पहुँचइले. लोक कहावत '...लीक छोड़ तीन चले शायर, सिंह, सपूत' मिसिर जी पर पकिया बइठेला । उहाँ के लीक छोड़िये के चलल रहनी ओहिसे एगो रहस्यमयी, मिथकीय चरित्र बन गईनी ।

महेंदर मिसिर के प्रसिद्धि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बा । जहाँ-जहाँ भोजपुरी सभ्यता, संस्कृति आ भोजपुरी भाषा पहुँचल बा, ओइजा ले महेंद्र मिसिर के 'पूरबी' गिरमिटिया भोजपुरिया भाई लोग के संगे पाथेय के रूप में गयिल बा । महेंद्र मिसिर के जनम सारण (जिला) के जलालपुर प्रखंड के एगो गाँव कंही मिश्रवलिया में 16 मार्च 1886 के भईल रहे। उनकरा बारे में ईहो प्रसिद्ध बा कि उहाँ के भिखारी ठाकुर के भी कुछ गीत-संगीत सिखवले रहनी । महेंद्र मिसिर के बहुत मौलिक आ कल्पित प्रसंग अउर गीतन के धुन के नेंव पर भिखारी ठाकुर अपना लोकनाटकन के कई गो गीतन के रचलन । हमनी के देख सकिले जा कि भिखारी ठाकुर के कई गो रचना में धुन के नाम के जगह 'धुन-पूर्वी' लिखल मिलेला । एगो लोकप्रचलित किंवदंती के अनुसार भिखारी ठाकुर के सुप्रसिद्ध 'बिदेसिया' के 'केकरा पर छोड़ के जइबअ टूटही पलानी, केकरा से आग मांगब, केकरा से पानी' महेंदर मिसिर के ही रचना बतावल जाला । एगो बहुत जरुरी बात जाने वाला ईहो बा कि भोजपुरी सम्मलेन पत्रिका के फ़रवरी 1990 के अंक में भोजपुरी के महान आलोचक महेश्वराचार्य जी के लिखल एगो निबंध बा जेमे उंहा के लिखले बानी कि 'जे महेंदर ना रहितें त भिखारी ठाकुर ना पनपते । उनकर एक एक कड़ी ले के भिखारी भोजपुरी संगीत रूपक के सृजन कईले बाडन । भिखारी के रंगकर्मिता कलाकारिता के मूल बाडन महेंदर मिसिर जेकर उ कतहीं नाम नईखन लेलें । महेंदर मिसिर भिखारी ठाकुर के रचना-गुरु, शैली गुरु बाडन । लखनऊ से लेके रंगून तक महेंदर मिसिर भोजपुरी के रस माधुरी छींट देले रहलन, उर्वर बना देले रहलन, जवना पर भिखारी ठाकुर पनप गईलन आ जम गईलन ।' एह बात के तस्दीक डॉ. सुरेश मिश्र आ डॉ. रवींद्र त्रिपाठी द्वारा भिखारी ठाकुर के समाजी भदई राम, शिवलाल बारी आ शिवनाथ बारी के लिहल साक्षात्कार भी भा, जंहवाँ दुनो समाजी कहले बा लोग की 'पूरा बरसात भिखारी ठाकुर महेंदर मिसिर के दरवाजा पर बितावत रहलें आ महेंदर मिसिर ही भिखारी ठाकुर के झाल बजावे के सिखवले ।' हमार कहनाम भा कहे के मकसद इ एकदम नइखे जे भिखारी ठाकुर के निचा देखा के भा पिटाई क के महेंदर मिसिर के महानता तय कई दिहल जाए । दुनो जाने भोजपुरी के हीरा ह लोग । दुनु जाने के महानता भोजपुरिया भाई-बहिन लोग खातिर निर्विवादित बा । दुनु जाने अंतर्राष्ट्रीय नेम फेम वाला बा लोग । बाकी इतिहास का सोच के एक जाने के ओरी से एतना आँख फेर लिहलस, आ कवना कारण से एक जाने के भोजपुरी के पर्याय मान लिहल गईल आ एक जाने के बारे में अल-बल फईला के साफे गायब करवा दिहल गईल । ई विचारणीय प्रश्न बा । दूसर एगो बात अउर कि ई मिथ के भी तुरल जरुरी बा जहाँ भोजपुरी माने भिखारी ठाकुर भ गईल बा । ई सोच भोजपुरी के अपना व्यक्तित्व आ साहित्यिक भविष्य खातिर नीक नइखे ।

महेंदर मिसिर जी के रचनाकाल सन् 1910-1935 ई० के ठहरेला । एगो छोट बाकि संपन्न जमींदार घराना में पैदा भईला के कारण उहाँ के अच्छा शिक्षा आ संगत मिलल रहे । एहिसे उहाँ के भोजपुरी के कवनो साहित्यकार, कलाकार भा कवि के तुलना में

डा० मुन्ना कुमार पाण्डेय

गोपालगंज बिहार के रहे वाला मुन्ना कुमार पांडे जी , भोजपुरी भाषा खास कई के भिखारी ठाकुर प बरिआर शोध कईले बानी , इँहा के रिसर्च के विषय ही भिखारी ठाकुर जी रहनी । भोजपुरी नाटक आ भिखारी ठाकुर के नाटकन प गहिराह लेख लिखले बानी । हिन्दी आ भोजपुरी मे इँहा के लगातार लिख रहल बानी । एह घरी असिटेंट प्रोफेसर के रुप मे दिल्ली मे कार्यरत बानी ।

शास्त्रीय संगीत के गहिरा आ गंभीर ज्ञान रहे । महेंदर मिसिर के लगभग बीस गो काव्य-संग्रह के चर्चा मिलेला आ एह सबके जिक्र उनकरा 'अपूर्व रामायण' अउर एकाध स्थान पर आवेला । इंहा के मुख्य रचना में महेंद्र मंजरी, महेंद्र विनोद, महेंद्र दिवाकर, महेंद्र प्रभाकर, महेंद्र रत्नावली, महेंद्र चंद्रिका, महेंद्र कुसुमावती, अपूर्व रामायण सातो कांड, महेंद्र मयंक, भागवत दशम् स्कंध, कृष्ण गीतावली, भीष्म बध नाटक आदि के चर्चा मिलेला बाकि एहुजा दुर्भाग्य से मिसिर जी के अधिकांश रचना आज अनुपलब्ध बा । 'अपूर्व रामायण' में एक जगहा मिसिर जी आपन परिचय दिहले बानी –

'मउजे मिश्रवलिया जहां विप्रन के ठट्ठ बसे,
सुंदर सोहावन जहां बहुते मालिकाना है
गाँव के पश्चिम में बिराजे गंगाधरनाथ,
सुख के स्वरुप ब्रह्मरूप के निधाना हैं।
गाँव के उत्तर से दखिन ले सघन बाँस,
पूरब बहे नारा जहाँ कांही का सिवाना है।
द्विज महेंद्र रामदासपुर के ना छोडो आस,
सुख-दुःख सब सह करके समय को बिताना है।'

महेंदर मिसिर जी अपना जीवनकाल में श्रृंगार, प्रेम आ सौहार्द के बहुत गीत गवले-लिखले बानी, बाकी आम जनता उनकरा के खाली 'अँगुरी में डंसले बिया नगिनिया हो', 'हँसी हँसी पनवा खिअइलस बेइमनवा' आ 'पटना से बैदा बोलाई द अ, नजरा दिहले गुइयाँ' से इयाद करेला । कहे के माने ई बा कि मिसिर जी के ई तीनो गीत बहुत प्रसिद्ध बा । एकरा अलावा देसभक्ति, राम, कृष्ण के भक्ति वाला भी गीत लिखले बाड़ें. 'सारण वाणी' के महेंद्र मिश्र विशेषांक में डॉ. विनोद कुमार सिंह के एक लेख – 'महेंद्र मिश्र और पूरबी लेखन की परंपरा' में लिखले बाड़े कि 'महेंद्र मिश्र के गीतों में आमजन का प्रेम, आमजन की पीड़ा, संघर्ष भोजपुरी जीवन का इतिहास और भोजपुरी संस्कृति के प्रति सजग दृष्टि मिलती है. उनकी एक महान देन है 'पूरबी'. उनके पहले भी पूरबी गीत था, इसका पता नहीं चलता. उनको भोजपुरी भाषी जनता 'पूरबी का जनक' मानती है. उनकी पूरबी गीतों की काफी नक़ल करने की कोशिश हुई, पर असल असल रहा.' महेंदर मिसिर इफरात में श्रृंगारिक आ प्रेम के काव्य रचले बाड़ें. मिसिर जी के कविताई पर हिंदी साहित्य के छायावादी दौर के साहित्य के कवनो ख़ास असर ना पडल रहे । जबकि मिसिर जी छायावाद के ही समकालीन रहले.

महेंदर मिसिर के जीवन में हिरदय आ मस्तिष्क के द्वंद्व हमेशा चलत रहल. हिरदय कहे संगीत आ गीत आ मस्तिष्क कहे देश खातिर कुछु कईल जाव. उनकर एगो अधूरा गीत एह बात के गवाही दे रहल बा –

'हमरा नीको ना लागे राम गोरन के करनी
रूपया ले गईले, पईसा ले गईलें, ले सारा गिन्नी
ओकरा बदला में दे गईले ढल्ली के दुअन्नी'

लेकिन मिसिर जी दुनु में बहुत सुन्दर तालमेल बइठवले । अंग्रेजी सरकार के खिलाफ नोट छापे के दुस्साहसी कारनामा एह के बड़का सबूत बाटे । नोट छापला के कई गो व्याख्या कईल गईल लेकिन समय के संगे लोग बुझ गईल की अपना देशप्रेम आ राष्ट्रवादिता के करते उंहा के जेल गइनी। कवनो शासन-सत्ता के पूरा आर्थिक तंत्र के तबाह करे के खातिर ओ शासन सत्ता के करेंसी के सामने नकली करेंसी चलावे के सोच एगो वैश्विक राजनीतिक दूरदर्शिता के परिणाम रहे। आजुवो भारत में पडोसी मुलुक के द्वारा हमनी के अर्थतंत्र तबाह करे खातिर लगातार भेजवावल नकली नोट के दिन-रात पकडल जा रहल खेप एकर बड़ उदाहरण बा । महेंदर मिसिर के समूचा क्रांतिकारिता के उनकरा गीत-पूरबी-संगीत आदि के चोला पहिरा के ओहि मे जानते -बूझते सीमित कर दिहल गईल लेकिन उहो कागज़ी रूप में बेसी ना । मौखिक परंपरा में, तमाम साहित्यिक दस्तावेजी काम में (जवना के जिक्र शुरू में कईल गइल बा) मिसिर जी के अनुपस्थिति एकर बडका सबूत बा । नोट छपाई आ ओकरा बाद गिरफ़्तारी के दौरान के एगो गीत मशहूर बा -

नोटवा जे छापी छापी गिनिया भंजवलS हो महेंदर मिसिर
ब्रिटिश के कईलS हलकान हो महेंदर मिसिर
सगरी जहानवाँ में कईलS बड़ा नाम हो महेंदर मिसिर
परल बा पुलिसवा के काम हो महेंदर मिसिर
छपरा से पटना ले जुटला परमान हो महेंदर मिसिर
जटाधारी हउएं हमरो नाम हो महेंदर मिसिर

इ जटाधारी प्रसाद जेकर जिक्र गीत में आईल बा उ दरअसल उहे पटनहिया सीआईडी सब-इन्स्पेक्टर रहलें । इनकरे के सन 1920 में सारण में नकली नोट छापे वाला आदमी के गिरफ़्तारी के जिम्मेदारी मिलल रहे । उ गोपीचंद नाम से भेस बदल के महेंदर मिसिर के घर के विश्वस्त नौकर बनी गईले , आ डीएसपी भुवनेश्वर प्रसाद के नेतृत्व में मिसिर जी के घरे छापा मराईल । गनीमत ई रहे के महेंदर मिसिर ओ बेरा सुतल रहले । केस चलल आ लोअर कोर्ट से मिलल सात बारिस के सजाये हाई कोर्ट से तीन साल के रही गईल। जेल जाये के बेरा गोपीचंदवा उर्फ़ जटाधारी प्रसाद रोवत-रोवत ग्लानी में कहले 'बाबा हम ड्यूटी के करते मजबूर रहनी बाकी हम ए बात से बड़ा खुश बानी कि रउवा अपना देश खातिर बहुत कुछ कईली । आ ओही खातिर अब रउवा जेल जा रहल बानी ।' एह बात के बाद ही मिसिर जी कहलें 'पाकल पाकल पनवाँ खियवले गोपीचनवा, पिरितिया लगाके भेजवले जेलखानवाँ'। एह कविता के सुन के जटाधारी महेंदर मिसिर के गोड़ पकड़ लिहले। लोककथन

आ जनश्रुति के विश्वास कईल जाव त मिसिर जी के नोट छापे वाला मशीन/ साँचा एगो अँगरेज़ से ही मिलल रहे । खैर, एकर अलग कहानी बा। मिसिर जी बक्सर जेल भेजईले, आ जेलवा में अपना काव्य प्रतिभा से सब कोई के मोह लिहले । ओइजा के तत्कालीन जेलर मिसिर जी के काव्य-प्रतिभा आ गायकी से प्रभावित होके उनकरा के जेल से निकाल के अपना डेरा पर रख लिहले । कहल जाला ओहिजा मिसिर जी भोजपुरी के प्रथम महाकाव्य 'अपूर्व रामायण' लिखले । जेल से अईला के बाद महेंदर मिसिर जी कीर्तन आ रामकथा कृष्णकथा में रम गईलन । (एह पूरा वृतांत के परिषद् पत्रिका के लोकसंस्कृति वाला विशेषांक में सुरेश मिश्र जी वाला लेख में विस्तार से पढ़ल जा सकेला) । इहो ना भूले के चाहीं की मिसिर जी के साहित्यिक गुणवत्ता केहू से कम ना रहे । एहि लेख में सुरेश मिश्र जी बतवले बानी की विश्वनाथ सिंह (बिहार स्वतंत्रता सेनानी संघ के अध्यक्ष) आ प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री तपसी सिंह (चिरांद, सारण) के एगो लेख में महेंदर मिसिर द्वारा स्वतंत्रता सेनानी लोगिन के मदद कईला के जिक्र बा । छपरा के कांग्रेसी पूर्व सांसद बाबू रामशेखर सिंह के कहनाम मानल जाओ त महेंदर मिसिर उनकरा घरे रेगुलर आवस आ सांसद महोदय के बाबूजी आ चाचा से देश के राजनीतिक स्थिति पर चर्चा करस । महेंदर मिसिर जी के गाँव के बड़-बुजुर्ग आ लोक प्रचलित किंवदंती के मानल जाव त मिसिर जी गरीब-गुरबा, सुराजी आन्दोलनकारी तथा क्रांतिकारी लोग के खुला हाथ से आर्थिक मदद करत रहलें ।

मिसिर जी भोजपुरी के खाली कलाकर्मी आ कवि ना रहले बल्कि उ अपना इलाका में एगो क्रांतिकारी चेतना वाला, जनता में क्रांति के अलख एगो अनूठा रूप में जगावे वाला, गरीबन के रहनुमा वाला प्रतिभा रहलन।

भोजपुरी के एह महान शख्सियत के मृत्यु आज़ादी से लगभग एक बरिस पहिले 26 अक्टूबर 1946 ई. के छपरा में भईल रहे. महेंद्र मिश्र द्वारा लिखित, अलिखित आ लोक में व्याप्त उनकर गावल गीतन के एगो लंबा परंपरा मिलेला । वास्तव में, महेंदर मिसिर जी भोजपुरी साहित्य के अपना काव्य आ जीवन दर्शन से एगो नया ऊँचाई प्रदान कइले बानी । जइसे हिंदी साहित्य खातिर सूर, तुलसी, महादेवी आदि बा लोग, ठीक ओही लो लेखा महेंदर मिसिर जी भोजपुरी खातिर कईले बानी ।

लेकिन एह लेख के लिखे के मकसद मिसिर जी के जीवन के कहानी के एगो और हिस्सा हलिवंत सहाय, ढेलाबाई के कथा कहल नइखे, बल्कि भोजपुरी के पहिलका महाकाव्य लिखे वाला, गुलाम देस में आज़ादी खातिर क्रांति के स्वप्न देखे वाला, दानवीर कवि महेंदर मिसिर के व्यक्तित्व के जानकारी के संगे एह बात के पड़ताल बा कि भोजपुरी साहित्य के इतिहास में मिसिर जी काहे कगरिया दिहल गईल बाड़े । अपना जीवन काल में तमाम तरह के किस्सा-कथा आ घटनाक्रम के चलते महेंदर मिसिर के साथे कई तरह के झूठ-साँच जुटत गईल आ केहू ओकरा के स्पष्ट करेके कोशिश ना कईल । लोक कलाकार अथवा लोक साहित्यकार अपना लेखनी आ वाणी में अपना समाज के हृदयगत उद्गार के स्थान देला। एहमे जवन सजीवता, हृदयस्पर्शी मार्मिकता, निष्कपट सच्चाई, अनुभूति के गहराई आ सामयिकता के छाप लउकेला, ओकर स्पष्ट दर्शन अन्य भाषा संस्कृति नियन भोजपुरी में भी होखेला । ओही भोजपुरी के अनमोल रतन रहले – महेंदर मिश्र । जेकर मूल्यांकन उनकरा एकांगी रूप से अलगा जाके भी कईल जरुरी बा आ ई तबे होई जब भोजपुरिया बुद्धिजीवी आ पढ़ल-लिखल समाज उनकरा के पूरबी के आ खाली गीत गावे लिखे वाला के गांती से बहरी निकाल के उनकर मूल्यांकन उनकरा सामाजिक, सांस्कृतिक-राष्ट्रवादी के नजरिया से भी करी। अगर आजुवो महेंदर मिसिर के अध्ययन-विश्लेषण 'पटना से बैदा बोलाई द' आ 'हँसी हँसी पनवा खिलईलस बेइमनवा' के घेरा बाँध के होई त उनकरा व्यक्तित्व आ कृतित्व की साथ फेर ना-इंसाफी होई, जउन आजु ले होत आ रहल बा। साहित्येतिहास में त खैर ई भईले बा। मिसिर जी खातिर हमरा विजयदेव नारायण साही के एगो कविता इयाद पड़ रहल बा – **'तुम हमारा जिक्र इतिहास में नहीं पाओगे/क्योंकि हमने अपने को इतिहास के विरुद्ध दे दिया है। '** इतिहासकार समूह जवन कईले बा लोग उ त आँखि के आगे बटले बा, एहिसे महेंदर मिसिर जी के व्यक्तित्व आ कृतित्व के पुनर्मूल्यांकन जरुरी बा। **मिसिर जी भोजपुरी के खाली कलाकर्मी आ कवि ना रहले बल्कि उ अपना इलाका में एगो क्रांतिकारी चेतना वाला, जनता में क्रांति के अलख एगो अनूठा रूप में जगावे वाला, गरीबन के रहनुमा वाला प्रतिभा रहलन।** उ जनता के दिल में बाड़े बाकी इतिहास में कगरी पर क दिहल बाड़े। एहमे दोष खाली इतिहासकार लोग के कमबीनी के ही नइखे बल्कि दोष ओह विमर्शात्मक राजनीतिक फोरमेशन के भी बा जहाँ भोजपुरी के एकाध-गो कवि/नाटककार लोग तक सीमित क दिहल बा । रसूल अंसारी बड़ कि भिखारी ठाकुर के लडाई हमनी के पता बटले बा । पहिले भाषा के अस्तित्व खातिर लडाई जरुरी बा, बाद में आपन-आपन नायक चुनके भोजपुरी संस्कृति आ साहित्य के सेवा कईल जाव एहमे कवनो गलत बात नइखे लेकिन फिलहाल आज महत्वपूर्ण ई बा कि भोजपुरी के विद्यापति 'महेंदर मिसिर' के ससम्मान उचित जगह दिहल जाव। ई इमानदार आ सामूहिक परयास से ही संभव होई ।

महेंदर मिसिर

चंदन तिवारी

पुरबियातान अभियान के शुरुआत भइल तो सबसे पहिले महेंदर मिसिर के गीतन से ही गुजरे के मौका मिलल। उनका बारे मे लिखल एगो किताब मिलल – "महेदर मिसिर के गीत संसार " आउर ओही में से सात गीतन के छंटइया कई के पुरबियातान श्रृंखला के पहिलका गीतन के तइयारी शुरू भइल। निरगुण, पुरबी, प्रेम गीत के मिला के गवनई भइल। ओही में एगो गीत गवनी- सभका के देलऽ रामजी अन धन सोनवा, हमरा के लइका भतार हे, लइका भतार ले के सुतली ओसरवा, रहरी मे बोलेला सियार हे... पुरबियातान के एह गीत के लोकप्रियता कम मिलल बाकिर सब गीतन से जादे हम एह गीत के बोल पर ही जा के ठहरलीं। पहिले के समय में एह बात पर तो ढेरे गीत बा कि परानी... देस बिदेसे जालऽ, जालऽ मुलतानी, केकरा पर छोड़ी के जाल टूटही पलानी, सुन दिलजानी, हमनी के रहब जानी, दुनो परानी। शारदाजी के आवाज में एह गीत के भी सुनी। बुझाई कि केतना गहराई से महेंदर मिसिर जी स्त्री मन के पीड़ा के शब्द दे रहल बानी। ई कुल गीतन के भाव से गुजरला के बाद महेंदर मिसिरजी के संक्षिप्त जीवनी पढ़नी। कुछ लोग से उहां के बारे में पूछ के जननी, मालूम भइल कि महेंदर मिसिर जी के जीवन प्रेम के तलाश में भटकल। ढेलाबाई से ले के कई लोगन के प्रेम में। ओही प्रेम के तलाश में रचनाकर्म करत रहले। बात बुझाइल कि महेंदर मिसिरजी कईसे स्त्री मन के बात एतना गहराई से लिखत होखब। जेकरा हिरदय में प्रेम होखी, प्रेम खातिर जगह होखी, उहे स्त्री मन

बड़ आदमी के शादी छोट लइकी से हो गइल त लइकी के मन पर का गुजरत बा। भिखारी ठाकुरजी के बेटी वियोग नाटक में तो एह प्रसंग पर प्रसिद्ध गीत बा- रोपेया गिनाई लेलऽ, पगहा धराई देलऽ, चेरिया के छेरिया बनवल हो बाबूजी... बाकि महेंदर मिसिर के ई गीत उलटा भाव के बा। एगो बड़ उमिर के नवयुवती के शादी छोट लइका से हो जात बा, जे पहिलका जमाना में संपति वगैरह खातिर होखत रहे तो ओह लइकी के मन में का गुजरत बा। एह गीत के बोल जवन बा, ओकर एक- एक शब्द करेजा में धंस जायेवाला बा। एह गीत के साथ ही महेंदर मिसिर के जवन गीतन से गुजरली, मालूम भइल ओह में अधिकांश गीत स्त्री मन के ही बात बा। चाहे उ पुरबी गीत- अंगुरी में डंसले बिया नगिनिया वाला होखे...चाहे बलजोरी रे सइयां मांगे गवना हमार वाला। शारदा सिन्हा जी महेंदर मिसिर के एगो मशहूर गीत गवले बानी- हमनी के रहब जानी, दुनो के बात एतना गहराई से शब्द में बांध सकत बा। स्त्री बन के ही कोई लिख सकत बा ओह गीतन के। तब हमरा बार-बार बिचार आवेवाला कि महेंदर मिसिर जी भा भिखारी ठाकुर जी जइसन लोग आपन समय में का करत रहे लोग। का खाली गीत गवनई! नाही, जवाब होखी ना। ओह समय में महेंदर मिसिर जी समाज से लड़त रहले। प्रेम के हथियार बना के। स्त्री मन के अभिव्यक्ति के तब आजादी ना रहे। ओह घरी महिला लोग कम लिखनिहार रहे। स्त्री के मन में दबल आकांक्षा बाहर ना आ पावत रहे। मन के उमंग, उत्साह, आकांक्षा, पीड़ा सब अंदरे अंदर दब के रह जात रहे। ओह घरी स्त्री जइसन बन के, परकाया प्रवेश कई के महेंदर मिसिरजी जइसन लोग ओह बातन के शब्द अउरी स्वर देत रहे लोग। ई कउनो मामूली काम ना रहे। अपना समय के क्रांति रहे, भले ओह घरी के लोग भा अभियो कुछ लोग महेंदर मिसिर जईसन लोग के

एगो गीतकार, गवइया भर मान के एगो छोट दायरा में बांध देबल चाहेला बाकि उ स्त्री सशक्तिकरण के भी पुरोधा रहले । जवन समाज में खाली पुरुषन के वर्चस्व होखी, ओह में स्त्री के पीड़ा के जगह मिलत होखी, ओकर आकांक्षा के स्वर मिलत होखी ? त स्त्री के अंदर आपन बात कहे के छटपटाहट तो होखते होई न । कई बार लागेला महेंदर मिसिर के गीतन से गुजरत कि ओह घरी एही सोच के एतना सहज धुन में लिखत रहल होखब उहां के, कि काल्हु चल के कउनो स्त्री उनके शब्दन के जरिये आपन भाव व्यक्त करे के होखे तो आसानी से कर लेबे । रउआ देख लीं महेंदर मिसिर के कवनो गीत, बहुत सहज मिली, मात्रा में सजल । आड़ा-तीरछा कउनो गीत नइखे , सब गीत अइसन बा कि नवसिखुआ चाहे त गा लेबे आउर ढेर प्रकांड लोग भी चाहे तो ओकरा में चाहे जेतना संभव होखे प्रयोग कर लेबे । एकर उदाहरण बा उनकर एगो गीत-अंगुरी में डंसले बिया नगिनिया हो... एह गीत पर ना जाने केतना किसिम के प्रयोग हो चुकल बा आउर अब भी जारी बा आउर हर प्रयोग में ई नयापन के ही बोध के लेके आवेला । बाकि आज मिसरवलिया जईसन मामूली गांव में जनम लेके कालजयी काम करेवाला महेंदर मिसिरजी के जयंती पर उहां के इयाद करत हम एगो अउरी सवाल उठावल चाहब । एह के दोसरा रूप में लेबे के जरूरत नइखे । महेंदर मिसिर भा भिखारी ठाकुर जइसन महान लोग के सोच के कि अपना समय में स्त्री के ही गीत जादे लिखत होखी । रउआ देख लीं, महेंदर मिसिर के बारह आना गाना में स्त्री प्रधानता मिली । स्त्री मन के बात । तब काहे जब गीत गवनई के बारी आईल तो महेंदर मिसिर के ही बोली भाषा के लोग स्त्रीयन के आपन अभिव्यक्ति में बाधा पहुंचावत रहल । काहे ना भोजपुरी के समाज से ओतना गायिका भा नायिका लोग के उभार हो सकल, जेतना के नायक आउरी गायक लोगन के भइल । ई एगो सवाल बा । भोजपुरी संगीत अउरी सिनेमा जगत में रउआ नजर दउड़ाईं; स्थिति साफ दिखी । हालांकि अब समय में ढेर बदलाव भइल बा । विंध्यवासिनी देवी जी, शारदा सिन्हा जी जईसन लोग अपना समय में,परिस्थिति से मुठभेड़ कर के लोग लड़कियन आउर महिला खातिर भी जगह बनवले बा जेकरा से मिलल बल के कारण ही आज हमरा लेखा कलाकार लोग आजादी के साथ गावत बा । ओह रास्ता के चौड़ाई भी तेजी से बढ़त बा बाकिर अभी भी बाधा बा ।

लघुकथा : एगो अनमोल प्रेम कथा

समता सहाय

रात गहिराये लागे तब दुःख भी बढ़ जायेला। ओह-घरी जीवनसाथी के बहुत जरूरत होखे ला । हमार सास-ससुर में बेपनाह प्यार रहल। रात खानि सूते के बेरा मच्छरदानी खोंसे जाएब त दूनो आदमी आपन दुःख-दर्द बतियावत रही लोग। बाबूजी कहेब हमार एगो दाँत बथSता त अम्मा जी कहब हमार त दूगो हिलSता। गोड़ के, ठेहुना के दर्द त हमेसा रही। उ लोग के प्यार अउर लड़ाई दुनो अच्छा लागे सुन के। अम्मा जी जब फूलगोबी चीरे बईठी तब बाबूजी की ओर हँस के ताकी अउर इ गीत गाई, मै का करूँ राम मुझे बुड्ढा मिल गया। सब तो लाये फूल बुड्ढा गोभी लेकर आ गया। बाबूजी जी भी हँसते कहत रहनी कि तू कौन मारे जवान बाड़ू कि गीत गावतारु ।

मच्छरदानी उठावे जाएब तब दूनो लोग के लड़ते पाएब। अम्मा जी कहेब कि एक बजे ले बत्ती ज़रा के पढ़त रहेनी नींद खराब हो जाएला,बाबूजी कहेब कि रात भर नाक बजावेली नींद त हमार खराब होखेला। एक दूसरा पर चढ़ाई होत रही, हमही बानी जे निभावत बानी, दूसर कबे छोड़-छाड़ दिहले रहीत। बाबूजी हमेसा कही अरे सुरैय्या हमरे खातीर कुंवार रही गईली। बच्चा लोग भी उ लोग के लड़ाई के गवाह रही अउर कबो -कबो जज भी बन जाई। अम्मा जी के देहान्त के बाद बाबूजी लगे जाके इहे कहनी कि एतना बरीस साथे रहनी जउन दुःख पहुँचवले होखी ओकरा खातीर क्षमा करीह, जउन सुख पहुँचवले बानी ओकरा खातीर भगवान जी से जरूर कहीह कि हमरो के जल्दी से तहरा लगे बुला लेसु काहे कि, "तहरा बिना हमार एजा मन ना लागी " ।

मत मुओ बुढ़वा के बुढ़िया , मत जवनका के जोए ।
मत मुओ बलका के मईया , तीनो कलपना होए ।

'फोक'(folk) के झोंप में भुलाइल लोक के तलाश (भाग 2)

प्रमोद कुमार तिवारी

एगो शब्द हऽ वीआईपी, जवना अंग्रेजी के ई शब्द हऽ उहां एकर केतना उपयोग होला ई हम नइखी कह सकत बाकिर भारत में आ खास कर के भोजपुरिया इलाका में ई जम के चलेला। इंग्लैंड के प्रधानमंत्री के भरल मेट्रो में अकेले खड़ा हो के सफर करत तस्वीर लउक जाला आ उनुका इज्जत में कवनो कमी ना आवे बाकिर हमनी के पूरा जोर एही में लागल रहेला कि फलनवा से हम बड़ कइसे लउकीं। ओइसे तऽ हमनी के पूरा पृथ्वी के कुटुंब मानेलीं जा बाकिर आपन कुल्ह ऊर्जा ई साबित करे में लगा देबेलीं जा कि हम फलनवा से अलग आ बड़ कइसे हईं। हजारी प्रसाद द्विवेदी एक जगह लिखले बाड़न कि 'नीचे से नीचे वाला जात के लोग भी अपना से नीचे के चार गो जात ढूंढ लेबेला।' कहे के मतलब ई कि रउआ राजपूत होखीं चाहे दलित ओहू में 10 गो भेद मिल जाई। बाभन लोग के तऽ खैर पूछहीं के नइखे तीन-तेरह के ले के इहां खूब तीन पांच होत रहेला। बाकिर ई सब हम रउआ के काहे बता रहल बानीं, असल में जहां से वीआईपी संस्कृति शुरू होखेले उहें से शास्त्र के जन्म हो जाला। जहां भी प्रभुत्व, आज्ञा, नियम के भाव आवे लागेला उहां से शास्त्र आपन प्रभाव देखावे शुरू क देवेला। आ जब ले प्रभुता आ आज्ञा ना आवे, जब ले आम आदमी पऽ रुआब ना पड़े तब ले वीआईपी कइसन।

पिछिला खंड में ई चर्चा भइल रहे कि लोक के शास्त्र से का रिश्ता हऽ, लोक के जन से का संबंध हऽ, मिथक से एकर कइसन साथ हऽ, लोकप्रिय में केतना 'लोक' हऽ आ केतना 'प्रिय', एह सब पऽ बात कइल जाई, तऽ आईं पहिले शास्त्र से शास्त्रार्थ कइल जाव।

लोक अउर शास्त्र

अक्सरहां ई सुने के मिलेला कि हमनी शस्त्र के ना शास्त्र के पूजक हईं जा। लड़ाई झगड़ा के ना ज्ञान के पक्षधर हईं जा। बाकिर हमरा के हमेशा से लागत रहल बा कि एह दूनो में खाली ध्वनि साम्य ना हऽ बलुक चरित्र में भी समानता हऽ। शास्त्र के संबंध सत्ता से जुड़ेला आ सत्ता शस्त्र से बहुत दिन तक दूर ना रह सके (भले ऊ शस्त्र तलवार, बंदूक के रूप में ना हो के बाजार आ मीडिया के रूप में होखे।) असल में शास्त्र शब्द के मूल में 'शास्' धातु बा जवना से शासन, प्रशासन अउर प्रशिक्षण जइसन शब्दन के शुरुआत होखेला। कहे के मतलब ई कि शास्त्र विशिष्टता आ अलगाव के ले के चलेला। जहां अलगाव ना होखे उहां शस्त्र आ सत्ता के बल पऽ शास्त्र ओकरा के पैदा करेला आ ताकत, पुरस्कार, छल आदि के द्वारा ओकरा के स्थापित कऽ के खास बना देबेला। जबकि लोक के काम बिना जनसामान्य के एक डेग आगे ना बढ़े। एही से लोक अउर शास्त्र में हमेशा ठनल रहेला। हिन्दू दर्शन में मुख्य रूप से छव गो दर्शन के जिक्र कइल जाला जवना में सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा अउर वेदांत के जिक्र होखेला। एकरा के आस्तिक दर्शन भी कहल जाला। एकरा अलावा एगो अउर परंपरा शुरुए से चलल आ रहल बिया जवना के लोकायत आ चार्वाक दर्शन कहल जाला। चार्वाक शब्द के स्पष्ट करत एगो श्लोक के अक्सरहां जिक्र होखेला,

'चारू: लोकसम्मतो वाको वाक्यं यस्य स: चारूवाक:'

कहे के मतलब ई कि जे लोकलुभावन अउर आम जन के रुचे वाला बात कहत रहे ऊ चार्वाक कहाए। मजेदार बात ई बा कि चार्वाक के विचार भा दर्शन के कवनो मूल ग्रंथ ना मिले। चार्वाक के बारे में सब सूचना एकर विरोधी लोग देबेले आ अक्सरहां बुराई करत भा कहीं कि गरियावत देबेले। चार्वाक अनीश्वरवादी रहले आ कहत रहले कि जवन सोझा लउकत बा, जवना के हम देखत सुनत, अनुभव करत बानीं, बस ओतने वास्तविक हऽ, एकरा अलावा पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक के कवनो मतलब ना होखे। मानल बात बा कि इनका बात से बइठ के मलाई चाभेवाला लोग के हक मारल जात रहे एही से चार्वाक के वर्णन कर्जखोर, भोगवादी, पतित, घृणास्पद आदि रूप में जम के कइल गइल। बाकिर एह लोकायत दर्शन के शास्त्रवादी लोग खतम ना कर पाइल। बलुक बौद्ध पिटक सब में लोकायत के नीमन चर्चा मिलेला। इतिहास गवाह बा कि भोग आ बिना मेहनत के

आराम के संबंध हमेशा शासन यानी शास्त्र से जुड़त रहल बा। लोक के तऽ पूरा इमारते श्रम पऽ टिकल बिया।

एगो महत्वपूर्ण बात के इहां चर्चा जरूरी बा। ई सांच बा कि शास्त्र अउरी लोक में छत्तीस के आंकड़ा हऽ बाकिर ई दूनो एक दूसरा से बड़ा करीबी रूप में जुड़ल रहेले आ समय-समय पऽ एक दूसरा से सहयोग लेत रहेले। एही से हम शीर्षक में लोक बनाम् शास्त्र ना लिख के लोक अउर शास्त्र लिखनी हऽ। एकरा में तऽ कवनो दू राय नइखे कि लोक से शास्त्र बनेला। लोग उल्टा गंगा बहावे लागेला कि संस्कृत से क्षेत्रीय भाषा निकलली स, असल में क्षेत्रीय भाषा सब के परिमार्जन आ संस्कार कइल गइल तऽ ओकर नाम संस्कृत पड़ल। पुरान संस्कृत के दू भाग में लोग विभाजित करेले। एगो के वैदिक संस्कृत कहल जाला आ दूसरका के लौकिक संस्कृत। ई नाम भ्रम पैदा करेला, सच्चाई ई हऽ कि वैदिक संस्कृत पुरान आ देशज गुण वाला हियऽ यानी ओकरा में लोक तत्व ज्यादा मिलेला। जब एकरा के मानक बनावल गइल, कांट छांट कऽ के एकर संस्कार कइल गइल तब जवन संस्कृत बनल ओकरा के आज विद्वान लोग लौकिक संस्कृत कहेले। लोक के सबसे बड़ विशेषता ई हऽ कि ओकरा में एगो शब्द के कई गो रूप प्रचलित रहेला। एके शब्द के कई ढंग से कहल जाला। जइसे आज के शब्द लिहीं तऽ कान्हा, कन्हाई, कन्हैया, कान्ह, किशन, किसुन, किसना लोक के पहचान हऽ। जबकि कृष्ण शास्त्र के। शास्त्र भले गोविन्द, गोकुलनाथ आदि सैकड़न गो नाम रख लेही बाकिर ओकर एगो मानक रूप रही। शास्त्र के एही विशेषता आ सत्ता से प्राप्त मान्यता के कारण लोक हमेशा शास्त्र के अनुगमन कइल चाहेला आ ओकरे जइसन बनल चाहेला। शास्त्र परिमार्जित होला, मानक अउर खूबसूरत होला, शास्त्र अपना के लगभग शाश्वत के रूप में स्थापित करेला। एही से एक माने में ई जड़ आ ठस्स होला। काहें कि, प्रकृति स्थिर ना हऽ प्रकृति में एके गो चीज स्थिर हऽ ओकर नांव हऽ- परिवर्तन। जबकि मानकता खातिर स्थिरता जरूरी होखेला। जब शास्त्र जड़ हो जाला तऽ आम जन से कटे लागेला आ संग्रहालय आ पुस्तकालय में बंद होखे लागेला तब नया ऊर्जा आ ताजगी पावे खातिर ऊ लोक के पास पहुंचेला। लोक हमेशा प्रवाहमान होला। एही से कबीर कहेले कि 'संस्कीरत है कूप जल भासा बहता नीर'। लोक में झाड़-झंखाड़, खर-पतवार सब एक साथ मौजूद रहेला। ओकरा में तमाम रंग रूप भरल रहेला। बात खाली भाषा के नइखे, लोक आ शास्त्र के संबंध जीवन शैली, दुनिया के देखे के नजरिया आ जिये के पद्धति से जुड़ल बा। जइसे तमाम शहरन अउर महानगरन के साफ हवा आ पानी खातिर पहाड़, जंगल, सागर आ जैव विवधता पार्क आदि के जरूरत पड़ेला ओइसहीं एकरस अउर एकरूप जीवन शैली वाली तथाकथित शिष्ट सभ्यता अउर संस्कृति सब के लोक के जरूरत होखेला। लोक अपना स्वाभाविक जीवन शैली, प्रकृति जइसन विविधता अउर ओकरा साथे आदिम साहचर्य से उपजल ज्ञान के संजो के सैकड़न साल से शिष्ट-शास्त्रीय संस्कृति सब के ताजगी देत आ रहल बा। असल में लोक आ शास्त्र के सौंदर्य दृष्टि में अंतर होला। सौंदर्य के संबंध खाली भाव से ना होखे, सौंदर्यबोध के गहिर रिश्ता विचार से होखेला। जवना चांद के कवि लोग तारीफ करत ना अघाला ओही के कवि मुक्तिबोध कहले कि 'चांद के मुंह टेढ़ बा'। कहे के मतलब ई कि शास्त्र अपना सौंदर्य के अलग मानक तय करेला आ लोक अलग। जवना माटी आ गोबर में लोक सुंदरता आ खूशबू देखेला ओही में आज के शास्त्र गंदगी आ बदबू पा रहल बा। जवना शब्द के लोक रोज सौ बार उपयोग करेला ओही के शास्त्र अश्लील आ भदेस कह के ओकरा से दूर रहे के सनेस देला। कहे के मतलब ई कि लोक आ शास्त्र हमेशा एक दूसरा से प्रेरणा लेत संगे संगे चलेला बाकिर एह दूनो में हमेशा तनातनी के संबंध रहेला।

लोक अउर जन

एह दूनो शब्द के प्रयोग अक्सर लोग बाग एकही अर्थ में करेले। लोकतंत्र, जनतंत्र, लोक कवि, जनकवि जइसन शब्द के लोग एक दूसरा के जगह पऽ उपयोग करत रहेले बाकिर एह दूनों में अंतर हऽ। जन शब्द लोक के तुलना में जादे व्यापक हऽ। लोक के संबंध तुलनात्मक रूप से स्थानीयता आ क्षेत्रीयता से जुड़ेला। बिहार, यूपी, राजस्थान के लोक अलग अलग होखी बाकिर जन के भीतर ई सब समाहित हो जाई। असल में जन के संबंध विचार से भा विचारधारा से जुड़ेला। 'जन' वर्ग सचेत पद हउए। जन के संबंध मध्यवर्ग अउर निम्नवर्ग से जुड़ेला आ एकर उपयोग उच्चवर्ग के अभिजन के विरोधी के रूप में कइल जाला। जन के साथे एक तरह के जागरूकता के भाव जुड़ल रहेला जबकि लोक में नीमन-बाउर, प्रगतिशील-रूढ़, आगे-पीछे सब एक साथ शामिल होला। अनेक बार लोक में 'जनविरोधी' अउर रूढ़ तत्व के भी समावेश हो जाला। उदाहरण के रूप में सती प्रथा के नाम पऽ कवनो मेहरारू के जिंदा जरा दीहल जाय चाहे जाति के कारण केहू के मंदिर में प्रवेश ना करे दिहल जाय तऽ एकरा के पिछड़ापन कहल जाई। जन एकर विरोधी होखी। जबकि कई बेर लोक एकरा के आपन परंपरा कह के समर्थन देबेला। वर्ग चरित्र के कारण जन के आपन एगो वाद बन जाला जवना

प्रमोद तिवारी

भभुआ बिहार के रहे वाला प्रमोद कुमार जी , केंद्रीय विश्वविद्यालय गांधीनगर , गुजरात मे असिस्टेंट प्रोफेसर बानी । इँहा के भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य खातिर लगातार काम कर रहल बानी । पत्र पत्रिकन में प्रमोद जी के रचना आकर्षण के केंद्र होली स । भोजपुरी भाषा आ साहित्य के इँहा के अपना लेखनी से बरिआर चोख धार देले बानी । एह घरी गांधीनगर गुजरात मे बानी ।

के जनवाद कहल जाला। वामपंथ के समर्थक आ ओकरा से प्रभावित लोग अपना आप के जनवादी कहाइल पसंद करेले। वामपंथ के लेखक लोग के संगठन के 'जनवादी लेखक संघ', 'जन संस्कृति मंच' जइसन नाम में एह बात के प्रमाण देखल जा सकेला। लोक के जन जइसन कवनो वाद ना होखे। अमूमन 'लोक' एतना सचेत ना होखे कि आपन वाद स्थापित कर सके। लोक विचार के ऊपर भाव आ अनुभव के प्राथमिकता देबेला। एही से लोक के लगे जीवनानुभव के सबसे महत्व दीहल जाला। इहां तक कि पहिले के कवनो जीवंत अनुभव जवन समय के साथे रूढ़ि बन गइल होखे तबो लोक ओकरा के ढोवत रहेला।

लोक बनाम् लोकप्रिय

एकरा से बड़ विडंबना का होखी कि अक्सर भूमंडलीकरण के कर्ता-धर्ता लोग अपना लोकविरोधी गतिविधि के लोकप्रिय आ पापुलर संस्कृति कह के समाज से ओकरा के अपनावे के बात करे ले। लोक से बनल ई 'लोकप्रिय' शब्द बहुते भ्रामक हऽ, अक्सरहां जवना के हमनी के लोकप्रिय कहेनी जा ओकर अर्थ 'लोक' आ क्षेत्र में विशेष प्रिय होखे से लीहल जाला बाकिर उल्टे ऊ लोक के विरोधी होला। जइसे कोका कोला आ पेप्सी बहुत लोकप्रिय कहाला बाकिर ऊ माठा आ रस के विरोधी हऽ। 'लोक' के गहिर संबंध क्षेत्रीयता आ स्थानीयता से जुड़ेला जवना के आकार बहुत बड़ ना हो सके। जबकि लोकप्रिय के शुरूआते एगो बड़ इलाका पऽ राज करे से होला। लोकसंस्कृति, खाली अभिव्यक्तिए के स्तर पर ना बलुक उत्पादन प्रक्रिया, श्रम के उपयोग अउर दूसर कई गो मामला में लोकप्रिय संस्कृति के खिलाफ खड़ा होखेले। सामान्य ढंग से कहल जा सकत बा कि लोक के रचना सब सामूहिक उत्पाद होखेली स अउर ओहनी के गहिर रिश्ता श्रम, प्रकृति आ सामूहिक उपभोग से जुड़ल रहेला जबकि लोकप्रिय रचना सब व्यक्ति विशेष आ वर्ग विशेष से अधिक जुड़ेली स आ ओहनी में पइसा कमाए के, पूंजी बढ़ावे के अउर 'खास' (ब्रांड) होखे के भाव बहुत गहराई में बइठल रहेला। लोकप्रियता शासक वर्ग अउर वर्चस्व के संस्कृति के अधिका करीब होखेले। साफ बा कि जवना लोकप्रियता के हम इहां चर्चा कर रहल बानीं ऊ अपना चरित्र में एक साथे सामंती और पूंजीवादी दूनो के विशेषता समेटले चलेले। एही से हमनी के लोकप्रिय संस्कृति के संबंध पापुलर शब्द से जोड़ के देखे के चाहीं जवन कि लैटिन भाषा के शब्द हऽ अउर जेकर मूल अर्थ कॉमन यानी सर्वनिष्ठ भा सामान्य से हऽ। ई लोकप्रिय अपना आप के वीआईपी संस्कृति से जोड़ के चलेले आ अक्सर पइसा कमाए खातिर लोक आ क्षेत्र के संस्कृति के पिछड़ा आ गइल गुजरल मानेले।

दू गो गज़ल

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

खुशी-ग़म

कहाँ ना खुशी बा, कहाँ ना जलन बा
खिलल फूल में खार के भी चुभन बा

जब जेठ के लू चलल जग जरल हऽ
असाढ़े के आँसू से अब नम नयन बा

रचे गीत कोई, गजल चाहें कह ले
लगी दिल में तबहीं अगल बाँकपन बा

करी साधना जे, कबो सिद्धि पाईं
तपत सूर्य के ही जगत में नमन बा

नदी में बढ़त जा रहल नाव सबके
विचारीं कि माकूल कतना पवन बा

समय के गुलाम

लोग समय के गुलाम बाटे
केहू कसले लगाम बाटे

अँझुराइल बा सभे इहाँ के
ऊपर मन से सलाम बाटे

खाते-पियते इहाँ-उहाँ में
सबके जिनगी तमाम बाटे

भीतर करिया जमा भइल बा
बाहर धप्-धप् तऽ चाम बाटे

रावण मन में बसल तबहुँओ
मुँह से सुमिरत ई राम बाटे

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

भोजपुरी, हिंदी आ संस्कृत साहित्य के हर विधा में अधिकार से लिखे वाला सूर्यदेव पाठक 'पराग' जी मूलत: सीवान जिला के रहे वाला हईं। इहाँ के बहुचर्चित व्यंग्यकृति 'हीरो चरित मानस' 1978 में प्रकाशित भइल। एकरा में दोहा, सोरठा, चौपाई आदि छंदन के प्रयोग शास्त्रीय रूप में भइल बा। इहाँ के उपन्यास 'अछूत', नाटक 'जंजीर' के साथे कई गो गीत संग्रह, गजल संग्रह प्रकाशित भइल बा। इहाँ के अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन के 24वाँ अधिवेशन के अध्यक्ष भी रहनी।

दू गो कविता

सांसत में बा जान

मंजुला उपाध्याय 'मंजुल'

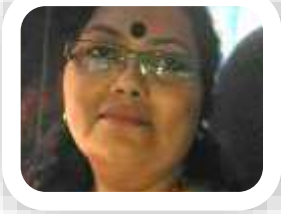

सांसत में बा जान धिया के
टभकत बा इ पीर हिया के

चिरई जेतना बाचल बाड़ी
फफकल बाती तेल दीया के

आँख से लोरवा सुखत नईखे
कतनों धराई धीर हिया के

मत घबरइह बबुनी अब त
साथ में बाडे राम सिया के

अभी समय बा रूसल तोहसे
रख दिहलस सब कुछ उल्टा के

चांद के गरहण कबले झापी
दुख के बादर भी त फाटी

कबले केहु कांटा बोई
कब ले चादर तान के सोई

टटका होई नेह 'किया' के (सिन्दुर दानी)
सजी तोहर संसार पिया से !

दिशाहीन

अनिल प्रसाद

ऊ दिन
अब लौट के
ना आई
जब
अच्छनवमी के
चांदनी रात में
आँवला के
गाछ के नीचे
खाना बनी
सभे साथे खाई
हंसी बोली बतियाई
ना कवनो डर
अन्हार से
ना आदमी से
ना बाजार से
ना राजनीतिक
तकरार से
ना ऊ सियार से
जे आज
रंग बदल के
आदमी के जिनगी
में घुसल बा
अइसन बदलाव
कब आई जब
खुला आसमान के नीचे
खुला मन से सभे
एक बेर फेरू
बैठी, हंसी
बतियाई, खाई
अपना माटी
के पकवान
आ उगी
अपना माटी में
गहरा जड़ से
उखाड़ी न कवनो
ताकत ओकरा के
सूख के ओकर
पतई उधिआई ना
आ गिरी दूर
आपना माटी से
बेनामी
दिशाहीन
जड़हीन !

www.bhojpurisahityangan.com

भरोसा

हृषिकेश चतुर्वेदी

बिना बोलले ऊ बात बोले ले,
ज़ज्ब दिल के उ घाव खोले ले।

उनुका अँखियाँ के कोर भींजल बा,
तिनका परल इ कहिके अंखिया धोवे ले।

दिल के टूटला प दर्द भी होला,
दिल के टुकड़ा संजो के राखेले।

खुल गईल द्वार दिल के उनुका ला,
दिल के हर बात दिल में राखेले।

अजनबी पास बैठS बात करS,
सवाल लाख भरल आँख के किनारे ले।

शक-शुबहा भईल आन्हार सबेरे के,
एक दूसरे पे भरोसा काम आ गईले।

"ऋषि" कब ले गिनायी जोन्ही-चान,
दिल के देहरी खुला बा आ-जईहें।

मंजिल मिलहीं के बा

प्रभाष मिश्र

एगो मंजिल बा हमरो
चलल बानी खोजे
ना पता ना ठोर - ठिकाना
बाकिर जईसे लऊके सोझे
सही राहता पर चलल जात बानी
हाली- हाली डेगवा से
बढ़ल जात बानी
जस - जस राहता कटे
झुंडन के झुंड मिलल जात बाटे
लोगन के साथ अब बढ़ल जात बाटे
छोटका भा बड़का होखस
चाहे नयका पुरनका
मरदाना मेहरारु होखस
भा लेखक नटकहिआ गवयका !

सभे जयकारा लगावत
सुर- ताल मिलावत
गांवे - जवारे सगरो
मिसिरी के घोर पिआवत
" आखर " के झंड़ा के नीचे
माई भाखा के मान बढ़ावत
बढ़ल जाता अईसे
लागे जईसे भोर होखहीं के बा
आ किरिन फुटते के संगे
मंजिल मिलहीं के बा...

www.bhojpurisahityangan.com

गीत

पंकज यादव

धन्य भोजपुरी धन्य धन्य तोहार माटी बाटे..
धनि धनि महिमा तोहार रे बटोहिया..!!

सोन्ह सोन्ह मटिया के सोन्ह सोन्ह महक बाटे
सोना जइसन उपजे गेहूं धान रे बटोहिया..!!

पपीहा कोयल गावे बगिया बगईचा में..
सुनी के मगन होला कान रे बटोहिया.!!

कुवा पनघटवा आ नदिया तलबवा क..
कल कल करत कलरव गान रे बटोहिया..!!

काशी अयोध्या अउरी गोकुल जहवा बसल बाटे..
जहवा जनमे भगवान रे बटोहिया..!!

तुलसी कबीर जइसन लोग इहवे जनम लिहले..
गौतम बुद्ध के मिलल एहिजे ज्ञान रे बटोहिया..

देस के सपूत केतना बीर एहिSजे क रहले..
भारत के बनवले महान रे बटोहिया..!!

गीतिया गवनई के मिलत नया दिशा बाटे..
सुनबS त सुनS पुर्बी तान रे बटोहिया..!!
मात्र भाषा होला महतारी जइसन दुनिया में..
तब काहे भइल ई बिरान रे बटोहिया.!!

केतना आंदोलन सम्मलेन भइल एकरा ला..
तबो नइखे मिलत स्वाभिमान रे बटोहिया..!!

लाखो आ करोड़ लोग क आस एह से जुडल बड़ुवे...
मिले चाही एकर पहचान रे बटोहिया..!!

जनमे से सीखनी जे बोले बतियावे के हम..
भोजपुरी हउवे हमार प्रान रे बटोहिया..!!

हई भोजपुरिया भोजपुरी हमरा खुनवा में..
जेकर हमरा बाटे अभिमान रे बटोहिया..!!

धन्य बा लोग भोजपुरी खातिर लड़त बाटे..
शब्द कई ना पाई गुड़गान रे बटोहिया..!!

दिन राती लागल बा जे माई भोजपुरी खातिर..
पंकज क बा ओके परनाम रे बटोहिया..!!

www.bhojpurisahityangan.com

शास्त्रीय संगीत आ हमरा जइसन पुरबिया

अनूप श्रीवास्तव

हमनी के बचपन जवने दौर से गुजरल बा ओहमें, गावल बजावल रेडियो आ सलीमा ले त खूब नीमन मानल जाओ बाकी समाज के अगुआ लोग एकरा के नीक ना माने ।ओ घरी गीत-संगीत के आपन जीविका बनावे के बारे में कम्मे लोग सोचे । गावल- बजावल खाली नाच-नौटंकी आ बैण्ड-बाजा वालन खातिर मानल जाओ । ए लोग से तनी ढेर इज्जत कीर्तनहा लोग के होखे । धीरे धीरे समय के साथे आर्केस्ट्रा वालन के तनी बिसेस दर्जा मिलल शुरु भईल ।

1982 में दूरदर्शन के अइला के बाद संगीत खातिर लोगन के सोच बदले लागल । हालाँकि, पढ़ाई में, संगीत एगो बिसय होत रहे बाकी गीनल-चुनल लोग ओह मे नाव लिखवावे । बहुत बिरले संगीत के गुरु जी लोग भेटाए जउन लइकन के सही ढंग से संगीत सिखा सके । हाँ झोरा छाप डाक्टरन जइसे भरमउआ मास्टरन के कमी तब्बो ना रहे । मुँहवा बवा के सा-रे-गा-मा आ 1-2-3-4 करावे वाला गुरु जी लोग थोक भाव में बेसुर, तलकट आ लयकट फसल तइयार क दीहल । अतने ना बलुक पइसा ले के प्रयाग आ भातखन्डे से फारम भरवावे लागल लोग । नतीजा ई कि जेकरा संगीत के "स" के जानकारी ना होखे ऊ प्रभाकर आ प्रवीण कहाए लागल । कुछ एक भगवान के देन अपवादो भेंटा जाए जे वाकई में नीमन गावे-बजावे ।

छोट जगहियन पे जब केहू बहरा से ट्रान्सफर होके अधिकारी लोग आवे त ई झोरा छाप लोग ओकनी के छाप ले आ लइकन आ मेहरारुअन के जबरन संगीत सिखावे खातिर घिघियावल सुरु क दे लोग । हम आपन अनुभव बताईं त सास्त्रीय संगीत के नाव पे बड़ा लोगन के बुड़बक बनत आ बनावत देखले बानी । छोट पे हमरा ईहे बुझाए कि जे फिल्मी गानन के पसन्द ना करेला ऊ सास्त्रीय वाला होला । भला हो आर्केस्ट्रा वालन के जउन ओ घरी हमनी के इलाकन में ई साबित कइलन सन कि संगीत से ना खाली पइसा बलुक इज्जतो कमाइल जा सकेला । ओकरे बाद टीवी में, आवे वाला कार्यक्रमन से एगो क्रान्ति आइल आ अन्ताक्षरी, मेरी आवाज सुनो आ मिले सुर मेरा तुम्हारा जइसन प्रोगरामन के अवते घर घर में माई बाप लरिकन के संगीत खातिर उकसावल सुरु करे लागल ।

पहिले दुरदर्सन पे, अखिल भारतीय गायन आ वादन के जउन प्रोगरमवा उबाऊ लागे । धीरे धीरे ओकर महत्व बुझाए लागल । हरमुनिया आ ढोलक के अलावा लोग अंगरेजी बाजन के ओर आकर्षित होखे लागल आ सीखे-सिखावे के दौर सुरु भइल । साधना खातिर स्वर पेटी आ ताल पेटी के इस्तेमाल भी होखे लागल । तार आ घन वाद्यन के मिलान पहिले खाली धीरे-धीरे सुन के कइल जात रहे फेर ओकर ट्यूनर आ गइलन सन । सही ढंग से देखल जाउ त तबसे अब सीखल आसान हो गइल बा । खाली सीखे वाला में, लगन होखल जरूरी बा । अगर संगीत में रुचि बा आ मन में धीर बा त कुछ मुस्किल नइखे । अब त बहुत संसाधन हो गइल बाडन सन, सीडी, कम्प्यूटर, आ मोबाइल सबकी लगे लउकत बा, इण्टरनेट पे दुनिया भर के ट्यूटोरियल पड़ल बा । बाकी हम इहे निहोरा करब कि संगीत सिखला में अकुताहट ना होखे के चाहीं । देखा-देखी आ शार्टकट नाही होखे के चाही । लइकन के संगीत सीखे खातिर जोर जबरदस्ती नाही करे के चाही । एइजा हम बार बार संगीत सीखे के बात कहत बानी, गायन, हरमुनिया, गिटार, बसुरी भा तबला नइखी कहत । काहे कि एगो आदमी के मकसद चाहे कुछु सीखल होखे ओकरा संगीत के स्वर, लय, ताल, मीटर, स्केल, काँर्ड्स जइसन बेसिक जानकारी होखल बहुत जरूरी बा । आ ओकरे बाद रियाज़, जवन बहुत जियादा त ना बाकी, नियमित होखल जरूरी बा । तब जवन विकास होई ओकर दिसा आ दसा दुनुए सही रही ।

ई कुल बाति हम बहुते ठोकर खइला के बाद लिखत बानी, आ नइखी चाहत कि केहू संगीत खातिर एहर-ओहर भटके । कुछ लोग पाश्चात्य संगीत के बुराई करेला आ ओकरा के खाली शोर शराबा बतावेला त हम इहे कहब कि भाई जइसे हमार भारतीय संगीत बा वइसे दुनिया में बहुत अलग-अलग आ गहिर संगीत पड़ल बा। अगर आज के दौर में आगे बढ़े के बा त बिना कौनो गलतफहमी पलले पच्छिमी संगीत के भी समझल आ इज्जत कइल जरूरी बा । अगर रउआ असली संगीत प्रेमी बानी त संगीत से पियार करीं पूरब-पच्छिम आ भासा कौनो मायने ना राखेला । अपना से उप्पर वाला से सीखीं आ निचवा वाला के सिखाईं सभे आनन्दित रही ।

अनूप श्रीवास्तव

देवरिया , उ. प्र. के रहे वाला अनूप श्रीवास्तव जी कला प्रेमी हईं । संगीत गीत से इँहा बहुते गहिराह लगाव ह । भोजपुरी मे इँहा के निरंतर लिख रहली बानी । इँहा के गीत आ कविता बहुत ही सामयिक आ भाव से भरल होला । अनूप जी एह समय दिल्ली मे रहत बानी ।

कहे के त सभे केहू आपन!

सुमन सिंह

का हो बहीन बेटा क बिआह करत हऊ तब्बो ना केहू के मन से पूछत हऊ । टेशन प जोहत -जोहत उबजीआय गइलीं हं जा । घामे में परेसान घंटन ठाढ़ रहले प त रेक्सा वाला भेटाइल ह । गोड़धरिया करत-करत त केहुतरे आवे के तइयार भइल ह । छुट्टा पइसा ना ह हमरे लग्गे । होखे त तनी ओकर केराया दे देतू । " सीढ़ी चढ़त,हाँफत-बोलत कान्ही प झोरा टंगले अपने लइकी के संगे पारबती चलल आवत रहलीं ।

"सब केहू तोहरिहिं नियन नबाब हो जाई त कइसे काम चली । इ ना सोचलू ह कि बहिन परेसान होई, महीना भर पहिलहीं चल के तनी हाथ बँटा देहीं । अइलू ह बिआह ले एक दिन पहिले अउर अइते बहिन के तारे लगलू । माई -बेटी के ई ना बुझाइल ह कि कार-परोजन क घर ह । पचास ठो परपंच होई । हीत-नात अइहन । बाहर -भीत्तर सम्हारे के होई,हाट-बजार जाये के होई । कइसे बहिनिया अक्केले कुल सम्हारी । " ओरहन देवे में लीन बहिन पारबती के पनियों के ना पुछलीं । एहर-ओहर घूम-घूम के कुल समान सईहारत रहलीं । पारबती क पियासन तारू चटके लागल । जब ना रह गइल त कहलीं- " तब्बे ले बोलत-बरबरात हऊ एक्को बेरी पनियो के ना पूछत हऊ । पियासन परान जात ह अउरी तोहके अपने लउकत ह बहीन । अइसन कठकरेज त ना रहलू ह हो । "पारबती बहीन से हंसी-मजाक करे लगलीं ।

"आछा त तोहूँ के पानी पूछे के परी । घरहीं क न हऊ कि मेहमान हऊ हो । कीचन में डब्बा भर के बरफी-पेठा रखल ह । सज्जे कंडाल पानी से भरल ह । जाके हीक भर खा पिया लोग । का रे सिम्पिया अब तोहूँ के नेवता देवे के पड़ी जो उठ पानी पिया सं अउरी चाह-वाह बना के ले आऊ । " पारबती के बहीन से ई ब्यवहार क आसा ना रहल,उनकर लइकियो मऊसी के बाउर जस टुकुर-टुकुर ताकत रहे । चाह बनावे क आदेस पाके ऊ रसोई में धऊड़ गइल ।

पारबती फोने प बहीन क सनेस पाके भागल चल आइल रहलीं । दुन्नु जानी बस साल भर एक दोसरे से छोट-बड़ रहलीं । पारबती से बहीन एक्को बार ना पुछलीं कि पाहुन काहें ना अइलन ह । लभलिया अउर पिंकिया काहें ना अइली हं । मिंकुआ काहें ना आइल ह । कुल घर हीतनात से भरल रहे । जेठ क महीना रहे । कूलर-पंखा चले त तनी राहत मिले नाही त सब केहू जलबिन मछरी नियन तड़फड़ाये लागे । एक्के कमरा में ऐसी लागल रहे सब ओही में ठूँसायल रहे । सिंपियो जाके एक जानी के गोड़तारी अड़स गइलीं । बहीन जब कुल काम धाम निपटा के सुत्ते अईलीं त पारबती भी पीछे लागल चल अइलीं । एसी वाला कमरा में गोड़ धरे के जगह ना रहे । बहीन देख के आग हो गइलीं-

"का रे सिम्पिया तोहूँ के ऐसी चाहत ह । एहि में अडसल हई । गउँआ में कइसे रहेली रे बिना लायट-पंखा के । चल जो,दोसरे कमरा में । तनी ढ़रके दे । " सिम्पी गोड़तारी सुतल रहलीं उनके समझ ना आइल कि हेतना अदिमी में खाली उनही के काहें उठावल जात ह । एक बेरी ऊ माई ओरी तकलीं फीर उठ के दोसरे कमरा में चल गइलीं । पारबती भी बहीन के बेहवार से दुखी रहलीं बाकिर बेटी से कुछ कहे के हिम्मत ना पड़ल । रात भर रोअत -सिसकत भोर हो गइल ।

" ए सिम्पिया सुनी ला तू बड़ा नीक मेहँदी लगावेली । एहि से कवनो पारलर वाली के ना बुलवले हई । जवन पइसवा ओके देब उ तोके नेग में दे देब । ह कि ना ?"मउसी सिम्पी के पुचकरलीं ।

" नेग-वेग छोड़ा मउसी भाई क बिआह ह हम त अइसहुँ सोच के आइल रहलीं ह कि खूब नाचब-गाइब अउर तोहके सजाइब । "सिम्पी मउसी से खुसी- खुसी मेहँदी क कुप्पी ले लिहलीं अउर दिन भर बिना खइले-पिअले सबके रच-रच के मेहँदी लगवलीं । नचली-गवलीं । बरात निकले से पहिले तक सबके सजवलीं । बीच -बीच में पारबती आके टोक जांय-'दिन भर लगल हई तनी चलके कुछ खा ले बचिया । '

सिम्पी माई क एक्को कहना ना माने बस उनके एक्के धुन रहे कि कैसे मउसी उनसे खुस हो जायँ । मउसी सिम्पी से साँचो खुस हो गइलीं । बक्सा में से निकाल के आपन पुरान बनरसी साड़ी पहिरे खातिर देवे लगलीं त पारबती टोकलीं ।

"रहे दा बहिन फराक-सूट ले आइल हे पहिने के । कुल आरटिफिसल गहना क सेट लगउले हे । सारी पहिनी त कुल एकर

सुमन सिंह

बनारस , उत्तरप्रदेश के रहे वाली सुमन सिंह जी , बनारस मे ही लेक्चरर के पोस्ट प कार्यरत बानी । आखर से जुड़ल सुमन सिंह जी हिन्दी मे कई गो पत्र पत्रिका खाति लिख चुकल बानी , लिख रहल बानी । वर्तमान मे बनारस मे रह रहल बानी ।

www.bhojpurisahityangan.com

तइयरिया डाँड़ न हो जाई । " कहके पारबती हँसे लगलीं । बाकिर बहिन खुनुसा गइलीं-

"खाये के त अटबे ना करेला । एतना ठाठ कइसे निबहे ला हो सिम्पी । अबहीं ले त सिम्पी मउसी क बोली -टीबोली हँसके बरदास्त कइले चलल चल जात रहलीं बाकिर एना पारी मारे हिचक -हिचक के रोये लगलीं । पारबती से अब बरदास्त ना भइल सिम्पी क बाँह खींचत आड़े ले गइलीं अउर लगलीं मारे । मारत जाँय अउर रोअत जाँय-

"जो अब ना मउसी क लऊड़कम करबी । जाके अउरी घूम पाछे-पाछे । नचनिया जस गाव-नाच । अरे हमार करम ना फुटल रहत त हमार इ हाल होत । भगवान जी हमहूँ के अन्न-धन देले रहतन त का एतरे सब हीन समझत । तोरो बाबू कमअइतन त ई हाल होत । सगरी जिनगी चूल्ह झोंकत बीत गइल । फाटल-पुरान पहिनत रंग-रुप झंवा गइल । बाकिर तोहन लोगन के कवनो दिक्कत-परेसानी में ना पड़े दिहलीं जां । खेतिये-किसानी से जवन जुरेला ओही में हमहन क खुस हईं जा । केहू से मांग के खाइला जा का कि सब हमहन क पहिरल-ओढल निहारत ह । "पारबती बेटी के बहाने बहीन के सुनावे खातिर जोर -जोर से रोअत -चिचियात रहलीं । जब बात बढे लगल अउर हीतनात मजा लेवे लगलन त बहीन पारबती के मनावे गइलीं ।

"सादी-बिआह क घर ह रे परबतिया काहें असगुनाह नियन रोअत हई । अरे आपन खून हई तू त । तोहूँ के अब बोले में जोगावे के परी । चल उठ हाथ-मुँह धो अउर तइयार हो जा । जो रे सिम्पिया । हई देखा अब मउसियो से रंज होवे लगल ई । " बहीन ठठाके हँसे लगलीं । परबतियो आँस पोछत तइयार होखे लगलीं । बाकिर सिम्पी तइयार ना भइलीं त उनकर मउसी खुनुसाये लगलीं-

"चलबू कि ना । हीतनात के समान से घर भरल ह । केहू क कवनो समान हेरा जाई त सब तोहरहीं के अछरंग लगायी । "सिम्पी क आँख भर आइल ।

"हम चोर हई का मउसी ,ई हमार घर ना ह ,अपनहीं घर में केहू चोरी करेला का ?" मउसी बारात भेजे के हड़बड़ी में रहलीं । केहू तरे सिम्पी के मनावल चाहत रहलीं बाकिर सिम्पी ना मानली त पारबती के भी संगे रुकेके पड़ल । रात भर दुन्नु जनी जाग के घर अगोरलीं । भोरे बरात आ गइल त पारबती के परिछन खातिर बोलावल जाये लगल बाकिर ऊ नीचे ना अइलीं । दुलही देखावल जात रहे सब नेग दे भइल । अंत में ,चमचमात नया डिजाइन क खूब भारी झूमका जब पारबती दुलही के मुंह देखाई दिहलीं त सब आँख फाड़ के देखे लगल । बहीन त एतना खुस भइली कि पारबती के अँकवार में भर लिहलीं-

"हम एहि से न कहीला सबसे कि भले भगवान हमरे बहीन के कम देले हउवन बाकिर एकर करेजा बहुत बड़ ह । " बहीन हँस-हँस के सबसे पारबती क गुन गावत रहलीं बाकिर पारबती क आँख भरि-भरि आवे ।

भ्रष्टाचार मिटावल, बेरोजगारी दूर कईल, शिक्षा मे क्रांति जईसन चीझू खाति आजू के बेवस्था सक्षम नईखे कांहे कि ई कुल्हि एहि बेवस्था के देन बा । ई कुल्हि तबे होई जब बेवस्था बदली आ पुरा तरह से बेवस्था के बदले खाति सम्पुर्ण क्रांति जरुरी बा ।

- जय प्रकाश नारायण

कहां जा रहल बिआ भोजपुरी

पंकज भारद्वाज

समय के बहाव में गायब होत जा रहल बाड़S-सन भोजपुरी के आपन शब्द ग्लोबलाइजेशन के बाद गांवन में भी नइखे सुरक्षित रहि गइल खांटी भोजपुरी।

पिछिला पचीस बरिस में देस आ दुनिया बहुते बदलि गइल। जब ले दुनिया के एगो गांव बनावे (ग्लोबलाइजेशन) के कोशिश शुरू भइल, तब ले हर क्षेत्र में बदलाव देखल जाए लागल। बदलाव के एह असर से हम-रउआ, सजीव-निर्जीव, केहू बाचल ना। रहन-सहन से लेके बोले-बइठे के तरीका तक बदल गइल। बहुत कुछ अइसन, जे हमनी के जिनिगी के अहम हिस्सा बन चुकल रहे, धीरे-धीरे गायब होत चलि गइल। नया-नया चीज आ तरीका सामने आइल। एही के विकास कहल गइल। आदमी के बेहतर जीवन खातिर इ जरूरी भी बा। लेकिन, सांच इहो बा कि बहुत कुछ नीमन भी विकास के एह प्रक्रिया के बलि चढ़ि गइल। ध्यान देबे जोग बात इ बा कि एकदम नया-नया आ खुला-खुला पच्छिमी बयार से सराबोर मन-मिजाज एह तरफ सोचे के जरूरत ना समझलस। एहसे इनकार कइसे कइल जा सकता कि बदलाव के प्रक्रिया जब शुरू भइल, तब एकर सकारात्मक आ नकारात्मक, दूनो प्रभाव परल। कहीं-कहीं त एकर दुष्परिणाम भी देखे के मिल रहल बा। एह बात के एहिजा भोजपुरी बोली (भाषा कहाए खातिर संवैधानिक दर्जा जरूरी बा) के संदर्भ में समझे के कोशिश कइल जाव।

इ सभ जानेला कि भोजपुरी बोली हीअ। लोकभाषा कहल जा सकेला। बिहार के भोजपुर जिला से एकर ताल्लुक बा। मध्य-दक्षिण बिहार आ यूपी के पूर्वी हिस्सा में रहे वाला लोग भोजपुरिए बोलेला। एहतरे त भोजपुरी बोले वाला लोग पूरा भारत में छितिराइल बाड़न। कवनो अइसन राज्य आ शहर ना होई, जहां भोजपुरिया ना रहत होइहें। अतने ना, मारीशस, त्रिनिदाद, फिजी, सूरीनाम, नेपाल में भी भोजपुरी बोले वाला लोग रहेला। एगो अनुमान के मोताबिक दुनिया में भोजपुरी बोले वालन के संख्या करीब बीस करोड़ होई। चूंकि इ लोकभाषा हीअ, एहसे एकर पैदाइश भी गांव-गिरांव में भइल। लालन-पालन भी गंवइए परिवेश में भइल। आजो भोजपुरांचल के गांवन में खांटी भोजपुरी सुने के मिल जाई। ओइसे भोजपुरी अब एहिजो सुरक्षित नइखे रहि गइल। अइसन एहसे कहतानी काहे कि विकास के रेस में शामिल भोजपुरांचल के लोगन के जिनिगी से बहुत चीज अइसन गायब हो गइल, जेकरा से कबो उनका भोजपुरियत के पहचान बनत रहे। अब जवन चीज जीवन से गायब हो गइलीसन ओकर नाम भी बोल-चाल से गायब होत चलि गइल। एकर असर भोजपुरी बोली पर परल। एकरा कोख से पैदा भइल न जाने कतना शब्द गायब हो गइलसन।

हम एहिजा अइसन कुछ शब्दन के चर्चा कइल चाहब, ताकि बहस सार्थक मोड़ के तरफ बढ़ सके। गौर करब जा एह शब्दन पर, काहे कि अब इ सुने-देखे के या त नइखे मिलत या बहुत कम मिलता। भोजपुरांचल के गांवन में अब रउआ के अकोरा, अखरा, अखड़ेर, अगरवटा, अगराइल, अगवार, अघाइल, अड़ान, अड़ार, अतरावन, अदउरी, अनकस, अनगव, अनघा, अमनिया, अमोला, अनेरिया, अफनाइल, अबटन, अबर, अबाटी, अबेर, अरगनी, अररा, अलगल, अलम, अवटल, अवासल, असवारी, ओखर, अंइठलोल, अंकड़ी, अंकवार, अंगऊ, अंगरल, अंटा, आइस-पाइस, आन, आंतर, इनार, उकठल, उपटल, उफर, उबहन, उलवल, उबिआइल, उबिसन, उम्मी, ऊभचूभ, एकवछ, एकवाई, एंगुर, एहवात, ओद, ओरिचन, ओरी, ओलार, ओसारी, कइन, कउड़, ककन, ककही, कछनी, कठुली, कनछी, कनकनाइल, करकस, कसार, ककड़उर बुकवा, कचवनिया, कजरवटा, कटकर,

पंकज भारद्वाज

बक्सर के रहे वाला पंकज भारद्वाज जी मूलत: पत्रकार का हईं बाकि अध्ययन-अध्यापन के काम में भी इहाँ के मन लागेला। साहित्य, समाज, राजनीति से जुड़ल मुद्दन पऽ रउआ सरोकारी तेवर के साथे आपन कलम चलावेनीं। दैनिक हिंदुस्तान, सन स्टार डेली, दैनिक जागरण, राष्ट्रीय सहारा में राउर लेख लगातार छपत रहेला। रउआ पहिले द संडे इंडियन के साथे भी जुड़ल रहीं।

कठकरेज, कठेस, कनई, करकरहट, कल्हारल, किटकिटाइल, कूंचा, केथा, कोठिला, कोहनाइल, कोरवर, कोसा, कोहड़उरी, खउरा, खटतुरूस, खपचल, खरकटल, खरकोंच, खरहर, खखुआइल, खुरूपी, खुद्दी, खोर, खोरनी, खांखर, गड़ही, गंड़ासी, गंड़तर, गदेला, गुरदेल, गेनरा, गाड़ा, गोंयड़, घइली, घघचल, घघोटल, चकवा-चकइया, चेफुआ, चिक्का, चिंगुरल, चुहानी, चोन्हा, चोन्हर, चंगेली, छाक, छाकुन, छितनार, छिपुनी, छोलनी, जबदल, जबर, जबून, जाऊर, जांता, जांगर-पांजर, जुआठ, जमुवट, झग्गर, झझुआइल, झांखर, झोंटा, टभकल, टहटह, टापक -टुइयां, टीपन, टैना, ठेहा, ठेंगुनी, डांगर, डिभुक, डेवढ़ी, डेहरी, ढाठी, ढंढ़नच, ढेंका, ढेंकुल, तक्कड़, ताखा, तिरपटाह, तिरछोल, तिलवा, तिसउरी, तिलउरी, थूहा, दोदल, दोन, दोल्हा-पाती, दोहमत, दोंजी, धरन, धधाइल, धेन, नखदवन, नरियाइल, निछान, निठरक, निखरा, निगहता, नेवाधल, नेवान, नोहरनी, पतुकी, परई, परपराइल, परेह, पालो, पनिहा, पाइंत, परिहथ, पइन, पगहा, पसंघा, पिठार, पटउरा, पनछोछर, पनरोह, परथन, परोज, पाहुर, पुजरवट, पिछुआरी, पिनिकल, पेहान, पैना, पंजीरी, पांकी, पांचा, पांचर, पांजा, फरका, फफनल, फरकट, फउकल, फराठी, फरूही, फुलेना, फुफुती, फुसीलावल, फार, फोरिका, फांफर, बकेन, बखरा, बखीर, बघारल, बढ़ावन, बबुनी, बमपिट्टो, बाउर, बिछिलल, बेलमावल, बनडमरू, बेहुड़ी, बोरसी, बोंग, बजरबोंग, बंड़ेरा, भउर, भकभउंजा, भनसा, भभोरल, भरूका, भिनसहरा, भुकुड़ी, ममोरल, मरजाद, मसकल, माठा, माहुर, मनिहार, मूछी, मूसकइल, मूसर, मूसड़ा, मेह, मेथी, मेथउरी, मेहर, मोरहन, मंगुरइनी, मोंगदल, रहेठा, रेहट, रेंगनी, लउर, लकुची, लपसी, लरछा, लाहे-लाहे, लुगरी, लेवा, लेवकन, लूंड़ा, सखरा, संझवत, साइत, सोहटल, सिकहर, सितुही, सेहुंड़, सोहर, सेंवथाइल, सोंठ, सोंटा, हबेख, हर, हेंगा, हरिस, हराई, हुड़ुका, हुलिआइल, हेलान जइसन शब्द बहुत कम सुने के मिली। एकरा में कइगो चीज त अइसन बाड़ीसन जे अब गांवन में देखे के भी ना मिले। विकास के बाढ़ में जइसे बहुत कुछ बहि गइल। अफसोस कि गांव के गर्भ से ही भोजपुरी के गंगा निकलेली, अइसना में जब गांवे में खांटी भोजपुरी के शब्द ना बोलल जाई, त ओकरा के बचा पावल मुश्किल त होइए न जाई। इहे भइबो कइल। धीरे-धीरे भोजपुरी प्रदेश के जवन पारंपरिक चीज रहीसन, गुम होत चलि गइलीसन। लोग इन्हन के भुलाए लागल। संज्ञा के संगे-संगे ढेरहन क्रिया, विशेषण आ क्रिया विशेषण शब्द बोल-चाल से गायब होत चलि गइलसन। बदलाव के आन्ही में अइसन न जाने कतना शब्द उधिया गइल, जे भोजपुरी के आपन रहे। विकास के बरखा में भींजत-झूमत लोग एह ओर ध्यान दीहल जरूरी ना समझल। लेकिन, देखल जाव त इ हमनी खातिर, हमनी के भोजपुरी खातिर ठीक नइखे। एह तरे भोजपुरी के खांटी शब्द गायब होत चलि जइहसन, जेकरा चलते एह बोली के आपन खासियत खतम हो जाई। एकरा के बचावे खातिर भोजपुरियन के ही आगे आवे के होई।

हमनी के बोल-चाल में, लिखे-पढ़े में अधिकतर भोजपुरी शब्दन के इस्तेमाल करे के चाही, जेकरा से आज के पीढ़ी दूर जा रहल बिआ। शहर में रहे वाला भोजपुरिया लोग त आपन बोली बोले में लजाला। सांच कहतानी, ना बोलल चाहे लोग। दरअसल, इहे बदलाव भइल बा बीस-पचीस बरिस में। पढ़-लिख जाए वाला आ नोकरी करे वाला लोग भोजपुरी बोले में आपन जगहंसाई बुझेला। उनुका लागेला जइसे सुने वाला उनुके जाहिल, गंवार आ बुरबक बूझी। हिन्दी-अंगरेजी ठाट से बोलेला लोग। जबकि, लाख पढ़ला-लिखला के बादो पंजाबी, बंगाली, मराठी, मैथिली, तमिल, तेलगू, राजस्थानी जइसन क्षेत्रीय भाषी लोग आपन बोली बोले में तनिको ना सकुचाला। ट्रेन में सफर करत समय तनी-सा ध्यान दीहला प इ बात समझ में आ जाई। यदि सरदार जी लोग मिल गइल, त बात-चीत पंजाबिए में होई। मारवाड़ी भाई लोग अपने भाषा में बतियाई। बंगाली भाई लोग 'भालो आछे' कहबे करीहन जा। महाराष्ट्र के लोग मराठिए में कुशल-छेम पूछी। इहां तक कि बिहार के मिथिलांचल के लोग जदि कहीं मिल गइल त मैथिलिए में बात होई। अइसना में सवाल उठता कि भोजपुरिया लोग काहे भोजपुरी बोले से परहेज करेला? हम भोजपुरी के बढ़ंती खातिर दुसरा भाषा से दूरी बनावे के नइखी कहत। लेकिन, भोजपुरी माटी में जनमला के चलते हमनी के कुछ त फरज आ करज बटले बा। भोजपुरी हमनी के माई हीअ। माई के कइसे बिसरा दीहल जाई। एकर स्वरूप बिगर जाए, एगो बेटा के इ भला कइसे बरदास होई? एह मौजू सवाल पर हर भोजपुरिया के सोचे के चाही, कुछ करे के चाही।

दू गो लघुकथा

केशव मोहन पाण्डेय

बुद्धि के भसुर

नगीना दिल्ली में आ के मेहनत के महातम जानेले। गाँवे तऽ मेहरारू आ लइका दिन-रात दोकान देखिए सों आ अपने गाँजा सुरकत रहिहें। पता ना दइब के कवना कृपा से बुद्धि फिरल कि दिल्ली अइले आ समोसा बेंचे लगले।

एगो स्टोव में टाँगे वाला हेंडिल बनवा लेहले बाड़े ओहपर कराही धऽ लेले आ दोसरा हाथ में एगो बाल्टी में काँच समोसा ले के दुआरे -दुआरे घूमेले। बिहाने उठते दिशा-फराकी के बाद मंडी से आलू-पियाज आ मरीचा लेआवेले। उसिनल आ तैयारी कइला में बेरा उतरे लागेला। पूरा परिवार मिल के मसाला तैयार करेला, समोसा भरेला, चटनी बनावे ला आ नगीना के दोकान चल पड़ेला। नौकरी से आवे वाला लोग जब नगीना के समोसा बेचत देखेला लोग तऽ मुरझाइल चेहरा पर चमक आ जाला। समोसा खातिर जेतना लोग आवेला, ओहसे ढेर उनका चटक चटनी खातिर। रोजो खावे वाला भी ना समझ पावेला लोग कि कइके चटनी हऽ।

आज नगीना में मन तनी नरम रहे। उनकर रोज के ग्राहक अनिरूद्ध जी पूछले तऽ बतवले कि 'बेटा के तीन दिन से बुखार आवताऽ। दवा कामे नइखे करतऽ। लोग डेरवावता कि डेंगू ना भइल होखे। मन काँपता बाकिर कवना दम पर कवनो बड़का अस्पताल में ले जाईं। समोसा के कमाई तऽ हाथ से मुँहवे ले गइला में ओरा जाला। जवन तनी-मनी बचेला ओहके माई-बाबूजी खातिर गाँवे भेज देनी। देखीं, अब बिहने ले जाएब।'

अनिरूद्धो के मन दुखा गइल। समोसा लेहले आ चल दिहले। नगीना दोसरा ग्राहक के समोसा दे के तनी साँस लेहले तऽ ओहिजा एगो पर्स देखले। उठवले तऽ भरल रहे। हजार-हजार के पता ना केतना नोट रहे। एक बेर तऽ काँपग इले तले दोसरे छन लागल कि बिहने बेटा के दवाई हो जाई। देखले तऽ उनकर मेहरारू आवत रहली। मेहरारू से कहे के चहले तले हकासल-पिआसल अनिरूद्ध आइले। उनका के देखले से बुझात रहे कि चीरल जाव तऽ देहिं से खूने ना निकली। ऊ पर्सवा अनिरूद्धे के रहे। नगीना जब अपना मेहनत के पैसा पवला पर उनका खिलल चेहरा के देखले तऽ उनकरो मन हरषे लागल।

नगीना के मेहरारू के तनी देरे से सही, बाकिर सगरो मामला बुझा गइल। अनिरूद्ध के चल गइला पर अपना नगीना पर बड़ा तरस खात नजर गड़वली आ अपना नसीब पर पछतावा करत कहली - 'झूठ ना बोल सकत रहल हवऽ? जा ये बुद्धि के भसुर, बेटा के दवा तऽ हो जाइत?'

भकोल

अबकी बेर परधानी के चुनाव के घोषणा होते अंबरीश बाबू के पसेना छूटे लागल। उनका बुझा गइल रहे कि अबकी बेर परधानी के चुनाव माथे नइखे लिखाइल। पैर के नीचे से धरती सरकत बुझाइल। चार बेर से तऽ दूनो हाथ घीवे में चभोरात आवत रहे, बाकी गाँव के विकास जस के तसे रहे। अबकी बेर देश आ राज्यन के चुनावन के सथवे गँऊवो में विकास के चर्चा रहे। अंबरीश बाबू बेयार देख के व्योहार बदले में माहीर रहले। देखले कि परसों चुनाव हऽ आ दशा खराब हो ताऽ तऽ दिशा बदल लिहले। अभीन सँझवत के बेरा भइल रहे। कई दुआरन पर संझा के दीया धराऽ गइल रहे। कुआर के उमसल साँझ में कई जने धुँअरहा कऽ के मच्छरन से बचे के जुगुत में लागल रहले। गाँव के दखीनही टोला में

केशव मोहन पाण्डेय

तमकुही रोड, सेवरही, कुशीनगर, उ. प्र. के रहे वाला केशव मोहन पाण्डेय, एम.ए.(हिंदी), बी. एड. बानी। अलग अलग मंच ला दर्जनो नाटक लिखले आ निर्देशित कइले बानी। अनेक समाचार-पत्र आ पत्र-पत्रिकन में अढ़ाई सौ से अधिका लेख, आधा दर्जन कहानी, आ अनेक कविता प्रकाशित। भोजपुरी कहानी संग्रह 'कठकरेज' प्रकाशित। आकाशवाणी गोरखपुर से कईगो कहानियन के प्रसारण, टेली फिल्म औलाद समेत भोजपुरी फिलिम 'कब आई डोलिया कहार' के लेखन-निर्देशन कइले बानी। केशव जी ए घरी दिल्ली में रहेनी।

तऽ दिनवे में बँसवार के कारने अन्हरिया रहेला, साँझ के बढ़ गइल रहे। रामबरन के दुआर पर तनी ढेर झोहले रहे।

रामबरन अंबरीश बाबू किहाँ दूनो बेटा-बेटी आ मेहरारू के साथे मजूरी करेलन। पूरा परिवार दिन भर हाथ-पैर मारेला, तब जा के साँझ के चूल्हा बरालाऽ। तब जा के हाँडी पर परई बाजेला।

रामबरन अबके दू किलो आटा ले के घर में पइसले हवें कि अपना आदमीयन के साथे अंबरीश बाबू दुआर पर जुम के हाँक लगवले। रामबरन के ई उल्टगंगा के लहर ना बुझाइल - 'का रामबरन काका, अरे मर्दवा, कहवाँ लुकाइल बाड़ऽ?'

निकलते हाथ जोड़ले, - 'ना मालिक, बाजारे गइल रहनी हँऽ। अबके आवते बानी।'

'काऽ खरीददारी भइल हऽ हो?'

'चुल्हा बारे के बेरा होत रहल हऽ, आटा लेअइनी हँऽ।'

'तऽ का बिचार बाऽ? अकेले-अकेले? रोटी बनवावऽ। आज हमरो पत्तल ईंहवे बिछी।'

एतना सुनते रामबरन धधा गइले। बुझाइल तऽ केहू के कुछू ना, बाकीर सभे सेवा में लाग गइल। देखते देखत सगरो गाँव में ई शोर हो गइल कि अंबरीश बाबू भले कवनो काम कइले चाहें ना, छोटका-बड़का सबके बराबर बुझेले। आज रामबरन के घरे एके पाँती में रोटी-चटनी खइले हँवे। समय बितल आ जब चुनाव के परिणाम आइल तऽ ऊ रोटी-चटनी कमाल कऽ देहले रहे। अंबरीश बाबू फेरू से परधान बन गइल रहले। रामबरन अंबरीश बाबू के चुनाव देखले तऽ दुआर पर खटिआ बिछावे लगले। जुलूस ओनहे से लौटे लागल तऽ रामबरन पाछे-पाछे धावे लगले। राजेन्द्र जब रामबरन के देख के अंबरीश बाबू के बतवले तऽ ऊ गमछी से आपन नाक दबावत एतने कहले, - 'अब का करे के बाऽ?'

ई बतिआ रामोबरन सुनले तऽ भकोल लेखाँ मुँह बवले ताकते रहि गइले।

छनुकी

अरविंद पाठक

दोस
जे दिख जाई
अपनो दोस
त काहे करब
दोसरा पे रोस।

सुमिरन
उनकर
थोड़का भर के
सुमिरन
करोड़ो पपवा के
हनन ।

छेद
खोजेला
उमरभर
जे दोसरा के छेद
उ समझ ना पाई
कबहूँ
आपन भेद ।

खुसामद
खुसामद के
जाल
करेला
बेहाल।

वक्त
बितलका
ईयाद करके
देखनी ।
समईया
बरबादी के
लेखनी ।

www.bhojpurisahityangan.com

बिदेसिया के पाती

अधार्मिक-अवैज्ञानिक-असांस्कृतिक लोग यंत्र-मंत्र-तंत्र से बचा रहल बा गंगा के

निराला जी

अनुपम मिश्र जी अनूठा पर्यावरणविदन में बानी। देसी चेतना से लैस। छोट-छोट, गंवई बात कई के बड़-बड़ चुनौती से लड़े के रास्ता बताईना। लड़ के देखवले भी बानी। सफलता भी मिलल बा। नई दिल्ली में गांधी शांति प्रतिष्ठान से जुड़ल बानी। "आज भी खरे हैं तालाब" उनकर दुनिया भर में मशहूर किताब बा। ना जाने केतना प्रति बिकल बा ई किताब के आउरी केतना प्रकाशक लोग छपववले बा। गंगा पर बात करे से बचेवला मिश्रजी कुछ छोट-छोट बात कर रहल बानी, बाकि कुल बातन के मायना बहुत बड़ बा। इहवां प्रस्तुत बा निराला से भइल उहां के बातचीत के संपादित अंश "अधार्मिक-अवैज्ञानिक-असांस्कृतिक लोग यंत्र-मंत्र-तंत्र से बचा रहल बा गंगा के" :

हम गंगा पर बात ना करीं। करल भी ना चाहीं। गंगा पर कवनो बात करे से बाचे के कोशिश रहेला। प्रकृति के कवनो पक्ष पर, नदी-पर्वत-जंगल-धरती पर बात करे के पहले लोग के ओकर धरातल पर जा के सोचे के चाहीं। अगर नदी के बात करत बानी तो नदी के धरातल पर जाये के पड़ी। ओकर कैलेंडर देखे पड़ी। प्रकृति के सब पक्ष लेखपा नदियन के भी कैलेंडर करोडों साल के बा। हमनी के कैलेंडर कुछ हजार साल के। हमनी के बारह पन्ना पलटला पर साल बदल जाला। प्रकृति के भा नदी के 12 लाख पन्ना पलट लीं, साल ना बदली। हमनी के ओह कैलेंडर के ध्यान में रखले बिना अपना अनुसार बात करे शुरू कर देबे ली सन। ई बढ़ियां बात बा कि पिछिलका कई साल से गंगा के बचावे के शोर सगरी बा। होखे के ही चाहीं। हमनिये के गंदा कईले बानी जा, बर्बाद कइले बानी जा तो बचावे के बात के करी ! लेकिन कोईयो बात करे के पहिले हमनी के तय कर लेबे के चाही कि गंगा के भा कवनो नदी के बचावे के बा कि अपना के बचावे के बा। कहे कि अईसन बात नइखे कि नदी के बचावे के बात पहिलका बार भा दुसरका बार हो रहल बा। लोहियाजी बहुत पहिले से एह बात के कहत रहली। उहां के भी पहिले मालवीय जी एह बात के उठावत रहल बानी। लेकिन तब अउर अब में फरक बा। तब हमनी लगे नदी के गंगा करे के, बर्बाद करे के ओतना ताकत ना रहे। आज लेखा तकनीक, बसाहट, औजार ना रहे हमनी लगे।अब्बो भी जब हमनी के नदियन के, ओकरो में विशेष कई के गंगा के बात करत बानी जा तो कुछ पुरान बात पर ध्यान देबे के होखी। पानी के जे पुरान इंतजाम रहे शहरन में, ओकरा के के नष्ट कइलस? हमनी के। अब शहरन के पानी दोसरा जगह से आ रहल बा। अलग-अलग नदी से खींच के पानी शहर खातिर आ रहल बा। नदियन के बनावट देखीं जा। नदी नीचे रहेली सन, उपर से आवेवाला पानी नदी लेबत रहे। ओही तरीका के बनावट बा। नदी से पानी के उपर पहुंचावे के कवनो इंतजाम नइखे। जे लोग शहर में रहत रहे, उ लोग के आपन इंतजाम रहे।

तालाब के, कुआं के, अउर भी दोसर पईन के। ई सब से भू जल के स्तर बनल रहत रहे अउरी बरसात के जवन पानी आवत रहे, कवनो बर्बादी ना होखत रहे, कुआं-तालाब में चल जात रहे। तनी-मानी गंदगी नीचे ढरक के नदी तक पहुंचत रहे तो नदी मे ओतना ताकत रहे कि उ ओकरा के साफ कर लेबे, बहा के ले जाये। बाकि हमनी के सब पुरनका इंतजाम नष्ट कर देनी सन। उदाहरण के रूप में दिल्ली के ही लेबल जाव। आज दिल्ली में 200-300 किलोमीटर दूर से पानी आवेला। पहिले जमुना से लेबल गईल। फेरू गंगा से। अब दुनो से काम नइखे चलत तो भगिरथ से लेबल गईल। लेकिन भगीरथ के जल भी कम पड़त बा। अब बात चल रहल बा कि हिमाचल के रेणुका नदी से पानी लावल जाव। अब ई बात दिल्ली के बा, एह से राजनीतिक इच्छा शक्ति भी बा अउर एह से पानी कतहूं से चुरा के भा जबरिया लावल जा सकत बा, आ रहल बा। लेकिन इयाद रखीं कि कवनो दोसरका इलाका के हक मारिये के ई पानी आ रहल बा। लेकिन इयाद रखीं कि कब ले अईसन होखी। अभी वालू पीएम बहुत ताकतवर बाड़े तो हो जात बा। काल इनको ले केहू जादे ताकवर पीएम भी आ जाई तो का संभव बा कि दिल्ली के पानी आ जाओ दिल्ली में। ताकत काम ना आई। दिल्ली में दिनो-दिन आबादी बढ़त रहो, ना तो तो एकर दोष नदियन के बा, ना एकर जिम्मेवारी। एगो बहुत साधारण आंकड़ा दे रहल बानी। 1911 में जब दिल्ली राजधानी बनत रहे, ओह घरी दिल्ली में करीबन 800 तालाब रहे। अब देखावा देखावे खातिर दु-तीन गो तालाब बा। दिल्ली में ओतना तालाब रहे तो ओकर मतलब रहे।

खैर, अब दोसर बात कईल जाव। नदी के दोसर पक्ष पर। खास कई के गंगा पर बात कईल जाव। जवन आबादी बढ़ रहल बा, ओकरा के पानी गंगा से ही चाही। शहर में जवन उद्योग लग रहल बा, ओकरा भी पानी एकरे से चाहीं। उद्योग के बिना

www.bhojpurisahityangan.com

विकास तो होखी ना! फेरू खेती बा तो ओकरा के भी नदी से ही पानी चाहीं। तीनो के पानी नदी से ही चाहीं लेकिन बताईं कि तीनो नदी के देत का बा! शहर नाला अउरी कचरा दे रहल बा। उद्योग जहर दे रहल बा आउरी खेती भी अब पुरनका तो रह नइखे गईल, उहो किटनाशक अउरी खाद से उपजल जहर ही दे रहल बा। अब ई तीन गो के नदी के जरूरत बा आउर तीनो जवन नदी के दे रहल बा, ओकरा बाद दुनिया में कवनो ताकत नइखे, जवन नदी के साफ कर देबे। राजनीति देखावत रही कि ओकर इच्छाशक्ति बा बाकिर नदी के इच्छा शक्ति राजनीति के इच्छाशक्ति से बड़ होला। जवन दिन चाही, शहर, उद्योग अउरी खेती, तीनो के बर्बाद कर दीही। पिछिलका कुछ साल में तो देखल भी गईल बा।

अब एक बात अउरी। एतना साल से गंगा के सफाई कईसे हो रहल बा! यंत्र-मंत्र अउरी तंत्र से। खाली सफाई नइखे होखत, पूजा भी हो रहल बा। लेकिन पूजा केकर हो रहल बा! नला के। तब जब ई हो रहल बा तो बढ़ियां से कहे के चाहीं कि गंगा आरती नईखे करे के, नाला आरती करे के बा। चाहे बहुत लाज आवत बा तो खाली बाहर से आवेवाला पर्यटक लोग के बतावे के चाहीं कि गंगा आरती होला। आपस में तो नाला-नाली आरती ही कहे के चाहीं। अब ओही नाला के साफ करे खातिर 2000 करोड़ रुपया तक के योजना बन रहल बा। पहिले अविरल शब्द आईल, फेरू निर्मल करे के संकल्प लियाईल अउरी अब नमामी हो रहल बा। शब्द कवनो भाषा से आवे, यंत्र-मंत्र-तंत्र चाहे जेतना लाग जाव, गंगा बचेवाली नइखी। कम से कम एह रास्ता से। हं, घाट में कुछ सुधार हो जाई। संगमरमर लाग जाई। खंभा लाग जाई। लाउडस्पीकर लाग जाई। फिल्मी धुन पर भजन बजे लागी। बाकि ई कुल भी कुछ दिन खातिर देखे के मिल सकत बा। अब अगर कुछ दशक भा साल खातिर ई कुल हो रहल बा आउर कहल जा रहल बा, आश्वासन देबल जा रहल बा कि गंगा साफ हो जाई तो फेरू इहे कहल जा सकत बा कि चाहे तो ई लोग बहुते भोला बा चाहे बहुते धुर्त चाहे बहुते मुर्ख। हमरा शर्म आवेला ई कुल शब्दन के प्रयोग करे में लेकिन टेंडर, टेक्निक, बिजनेस, ईहे कुल तो होखत बा गंगा के नाम पर खाली। आज कुछो ना करे लोग। जेतना नाला आ रहल बा गंगा में, ओतना के मिला देबल जाव तो एगो अलगा से नदी बन जाई गंगा के समानांतर आउर गंगा से बड़ नदी हो जाई। मन होखे तो ओकर नाम गंगा-2 राखल जा सकत बा। राजीव गांधी पईसा खरचा कइले गंगा के नाम पर। मनमोहन सिह भी खरचले। विश्व बैंक भी पइसा उझिललस, सब पइसा बाजार में गइल।

अब एतना बात कइला पर लोग कही कि हम तो खाली निराशावादी बात करत बानी। लेकिन का करीं। स्थितिये अईसन बा। का कहल जा सकत बा। का करल जा सकत बा। बाकिर अईसन भी नइखे कि सब संभावना खतम हो गइल बा। गंगा तो खुदे साफ हो जाई। बस, उद्योग, खेती अउरी शहर के नागरिकन खातिर पानी के इंतजाम पहिले के लेखा पारंपरिक तरीका से, तालाब से, कुआं से हो जाओ पहिले। एतना इंतजाम हो जाओ कि खाली नदी पर निर्भरता ई कुल के खतम हो जाओ। धरती भी पानी खातिर एगो गुल्लक ही बा। उपर से गिरेवाला पानी के अपना में समा के जमा करेवाला। बाकिर हमनी के गुल्लकवे के खतम कर देनीं जा। गुल्लक के फेरू खड़ा करे के होखी। ओह में पानी जमा होखी तो धरती के अंदर के भूजल भी बढ़ी अउरी ओकर उपयोग भी होखी। गंदगी फैलावे वाला योजना बंद होखे तो गंगा में अभी भी एतना ताकत बा कि उ कुछ साल में अपना के साफ कर ली। आखिर जब भी घर-दुआर-महल बनत बा तो गाड़ी के चिंता कर के गैरेज बनत बा न। ओही घरी पानी के भी इंतजाम के बारे में सोचे के चाहीं कि जवन पानी होखी, ओकरा के जमा कहां कईल जाव। एतना चिंता तो करहीं पड़ी। एकर इंतजाम तो करहीं पड़ी। अगर ई कुल नइखे हो सकत तो एक बात के अउरी इयाद रखे पड़ी। दोसर पक्ष ह ई।

इंद्र भगवान के दोसरका नाम पुरंदर भी बा। पुरंदर मने पुरों के तोड़ेवाला। पुर मने बसावट। एगो कथा कृष्ण भगवान के भी इयाद रखे के चाहीं। जब तेज पानी भइल रहे तो कृष्ण भगवान गोवर्धन के अंगुरी पर उठा लेले रहले। सबके बोलवले, जोर लगवले, गोवर्धन उठवले, पानी से बचा लिहले सब के बाकि ओही कृष्ण एक समय में आपन द्वारिका के ना बचा सकले। द्वारिका डुब गईल। अईसन ढेर उदाहरण भरल पड़ल बा। बाकि दिक्कत ई बा कि कुल लोग खाली नदी के ही साफ करे के बात करेला। जबकि जरूरत बा कि आपन-आपन दिमाग के सफाई कईल जाव। तीसरका-चौथा क्लास से पढ़ावल जा रहल बा कि कईसे जलचक्र होला। कईसे तालाब से नदी में पानी जाला। फेरू नदी से सागर में। फेरू सागर से हमनी

निराला

पेशा से पत्रकार , तहलका आ प्रभात खबर खाति लगातार लिखे वाला निराला जी , औरंगाबाद बिहार के रहे वाला हईं । इँहा के पुरबिया तान बैनर के नीचे भोजपुरी के पारम्परिक गीतन के सहेजे, सरिहारे आ ओह के नया कलेवर मे प्रस्तुत करे में लागल बानी ।

पास वापस आवेला। बस एही व्यवस्था बना लेबल जाव ना। बहुत कुछ सुधर जाई। बाकि जानकार लोग तो दोसर दोसर सलाह देबेला। लोग कहेला कि समुंदर में तो पानी बरबाद हो रहल बा, नदी के जोड़ देबल जाई तो ठीक रही। जोड़ लेबे भाई। छोड़ देबे सब नदी के। देख लेबे लोग कि कहीं पीये खातिर भी मिठा पानी बाचत बा का! तीसरा चउथा क्लास के बात इयाद नइखे आवत। नयका जमाना में खाली तकनीक के बात हो रहल बा। जा के देख लेबे केहू नर्मदा पर बांध बना के रोकल गईल पानी। भरूच के इलाका में पानी खारा हो गईल। एगो अउरी उदाहरण बा। नर्मदा अउरी क्षिप्रा नदी में एगो नया रिश्ता बनावल गईल बा। क्षिप्रा उपर में बिया। नर्मदा नीचे में। दुनो के बहाव के प्रक्रिया अलगा बा ।बाकिर आज कल क्षिप्रा के पानी रोज पहुंचावल जा रहल बा। बतावल गईल बा कि रोज 16 लाख रुपइया रोज खरचा हो रहल बा बिजली में। खाली नर्मदा से क्षिप्रा के पानी देबे में। सवाल ई बा कि नर्मदा कब ले पानी दिही।

केतना बात कईल जाव नदियन पर। गंगा पर। नदी पर कुल गतिविधि अधार्मिक, असांस्कृतिक, अवैज्ञानिक तरीका से चलत बा। अउरी ओकरा के बचावे के योजना भी ओही तरीका से बन रहल बा। हमनी के वापस मुड़ के देखे के होखी। तालाब ही बचाई गंगा के। कुआं ही बचाई गंगा के। दोसर नदियन के भी। पटना में 35 इंची तक पानी होला बरसात में। का उपयोग होला उ पानी के। दिल्ली में 40 इंची तक होला। का होला उ पानी के। कोई इंतजाम बा का? कवनो इंतजाम नइखे। त बस दिन गिनी। जईसे मुंबई के लोगन के उ लोग के इहां आईल बाढ़ के दिन इयाद बा, तारीख के साथे, जइसे कश्मीर के लोगन के इयाद बा, सुरत के लोगन के इयाद बा, ओही तरह पटना, दिल्ली, बेंगलुरू, चेन्नई आउरी दोसर शहर वाला लोगन के भी इयाद होखेवाला बा दिन। तब तक अभी कुछ दिन मौका बा। लगावत रहीं संगमरमर, करत रहीं आरती, फोड़त रहीं नारियल, गावत-बजावत रहीं फिल्मी गाना गंगा किनारे अउरी दोसर नदियन के किनारे भी।

www.bhojpurisahityangan.com

बचपन

जलज कुमार 'अनुपम'

नइखे बुझात कहवा
खो गईल बा
आजू हमर मन
लागता इयाद आवत बा
आजु एकरा हमर बचपन

जिनगी के सबसे
सुहाना उ दौर रहे
ओकरा निहर ना पल
अउरी कवनो और रहे

उ बारिश के मौषम
उ कागज के डेंगी
उ सावन के झूला के झुलाई
उ छप छप
उ भाग दउर
उ मेला कैसे भुलाई

भगवान जी के सुगा के पकड़ल
कबड्डी बाडी,बासाटिका के दउरल
उ पतंग गिल्ली डंडा के चस्का
उ अइठा,घोंघा ,मछरी मुअउअल

गलती पर होखे जहवा
जम के कुटाई
ओकरा बाद के प्रीत
लाड़ दुलार कबो कहा भुलाई

उ पढाई के नाम सुन के
पड़ जाये भरी बिपत
बड़ा मुश्किल काम रहे
बीते कबो लिखत कबो छिपत

उ लुकाछिपी ,घोघोरानी ,उ पिट्ठो ,
उ चोर सिपाही राजा मंत्री अब कहवा भेटाई
अब के लइका लोगन के
पुरनका कथा कहानी के सुनाई

उ दोल्हापाती , उ छुवा छुई ,उ कांचा ,
उ चीन्हा पारे मेटकावे वाला खेल
बड़का महल अटारी में
अब कहवा भेटाई ओइसन मेल

अब त डर बा की घर में
राम -रहीम -अली के कहानी के सुनाई
जब घर के सारा बुजुर्ग
बृद्धा आश्रम में भेटाई

मन कहत बा ,अगर बचपन बचावे के बा
गॉव में जाइ , लइकन के ओकर गॉव लौटाई
बृद्धाश्रम बंद करवाई ,बुजुर्ग घरे ले जाई
संस्कार सीखी सिखाई आ मंगल गीत गाइ

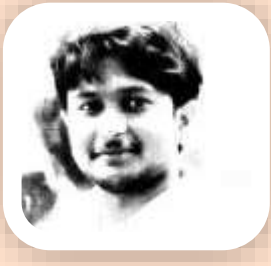

जलज कुमार अनुपम

बेतिया, बिहार के रहे वाला जलज जी भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी आ आखर के पेज पे भी इंहा के कविता-कहानी प्रकाशित होत रहेला। फिलहाल जलज जी दिल्ली रह रहल बानी।

अतुल कुमार राय

भोजपुरी में सांस्कृतिक कार्यक्रम

गीत, संगीत, कविता, कहानी या कवनो फ़िल्म देखत, सुनत समय कवनो आदमी ओह रचना में अपना के खोजे लागेला। उ कविता पढ़ेला त लक्षणा, अभिधा या व्यंजना पर कम ध्यान देला। पहिले कविता में खोजेला की हम कहाँ बानीं? कवनो गाना सुनेला त ओह गाना में राग ताल आ खटका मुर्की प ना ओह में वर्णित परिस्थिति से आपन संबंध बइठावेला। कवनो फ़िल्म देखेला त ओमे लोकेशन आ सीनेमैटोग्राफी कम, इ ढेर सोचेला की हमरा जिनिगी में अइसन कब भइल रहे। फिलिम देखते ओकर आपन जिनगी के किताब के उ पन्ना पन्ना खुल जाला जवन बहुत समय से बन्द पड़ल बा। आ साँच कहीं त कवनों कला आ साहित्य के सफलता एही से तय हो जाला की उ रचना कातना जमीनी आ यथार्थ से जुड़ल बाटे। अपना के कातना अधिक से अधिक लोग के जोड़ पावत बा।

इतिहास गवाह बा कि आज ले गीत संगीत या साहित्य उहे लोकप्रिय भइल बा जवना में आम आदमी अपना के पवले बा। आज तुलसी दास आ वाल्मीकि जी के सब जानत बा। लेकिन केहू से आप वाल्मीकि रामायण के कवनो श्लोक पूछीं त बहुत पढ़निहार होइ तबे बता पाई। उहे तुलसी दास जी के नाव लिहीं त। 'मंगल भवन अमंगल हारी' एगो रेक्सा आ ठेला चलावे वाला बता दीही। काहें कि वाल्मीकि कृत रामायण के भाषा संस्कृत आ तुलसी कृत मानस के भाषा अवधी बा।

अब एह से इ साबित ना होइ कि वाल्मीकि जी तुलसी दास जी से छोट कवि हवन। काहेंकि अक्सर लोकप्रियता उत्कृष्टता के पैमाना ना होला। लेकिन लोकप्रियता के एकही पैमाना बा की आपके रचना जेतना जमीनी या यथार्थ से जुड़ल रही उ ओतने अधिक से अधिक लोग के मानस पटल प अंकित हो जाई।

लोकप्रियता के इ सबसे बड़ फार्मूला बहुत पहिले से चलल चली आवत बा की आप कुछ भी गाई बजाईं या लिखीं त ओकरा से

अतुल कुमार राय

बलिया युपी के रहे वाला अतुल कुमार राय जी काशी में संगीत के साधना कर रहल बानी। भोजपुरी आ हिंदी में लिखे के एगो खास शैली ह अतुल जी के। भोजपुरी के पारम्परिक गीतन प इँहा के विवेचनात्मक ढंग से लिखाईल लेख आखर प पहिले भी पोस्ट भईल बा। भोजपुरी लोकगीत आ पारम्परिक गीतन प इँहा के लगातार लिख रहल बानी। फिलहाल बनारस मे निवास बा।

समाज के अंतिम व्यक्ति के जोड़ दी। कबीर रैदास मीरा रसखान से लेके महेन्दर मिसिर अउर भिखारी ठाकुर तक एकर बड़हन उदाहरण बाड़े।

भोजपुरी में भिखारी ठाकुर सबसे ज्वलन्त उदाहरण आ आज के कलाकार लोग खातीर आईना बानी। उहां के सारा संगीत आ साहित्य हाशिया पर रहे वाला आम आदमी प केंद्रित बाटे। सारा नाटकन के पात्र एगो सामाजिक आ आर्थिक रूप से दुरदुरावल रहे लो। उहाँ के मण्डली के कलाकार भी दलित आ पिछड़ी जाति से रहे लो। हरवाह, चरवाह, बनिहार, फेरी के काम करे वाला, मोची, दर्जी, लोहार, बढ़ई, रेक्सा आ ठेला चलावे वाला लोग नाच मण्डली के कर्ता धर्ता रहे। इ सभे गरीबी आ अभाव के करीब से महसूस करत रहे। खुद भिखारी ठाकुर नाई जाति से आवत रहनी। विधवा विलाप लिखत समय उ सवर्ण समाज के नारी दुर्दशा के करीब से महसूस क़इले रहनी।

अगर उहाँ के बहुत ठाठ बाट में पैदा भइल रहती। शान से जिनिगी जीयले रहतीं त हमनी के पते ना चलित की भिखारी ठाकुर के हवन आ अतना बड़ थाती से वंचित रहती जा। भिखारी बने में परिस्थिति आ प्रतिरोध ढेर जिम्मेदार बा। आ अइसन बहुत उदाहरण बा।

कहे के मतलब इहे बा की आप भोजपुरी गीत संगीत आ साहित्य में कुछ नया कइल चाहत बानी त आपके भिखारी ठाकुर के गीत आ नाटक गवला से काम ना चली। आपके उहाँ से इ बरियार सीख लेके समाज में रहे वाला अंतिम व्यक्ति के ध्यान में रख के कुछ रचे के पड़ी। तबे कुछ सार्थक हो पाई। हमरा बहुत दुःख होला जब लोग कहेला की भोजपुरी में शास्त्रीय संगीत शामिल हो जाइ त भोजपुरी स्तरीय हो जाइ। मने एलिट क्लास के गाना बजाना हो जाइ । आ भोजपुरी में कवनो अंग्रेजी उपन्यास के तर्ज प उपन्यास भा कहानी कविता लिखाई त एह भाषा के लोग हेय दृष्टी से ना देखी। लेकिन इ धारणा कुछ देर रउरा के आत्ममुग्ध क सकेले। काहेंकि जमीनी हकीकत कुछ अउर बाटे। आज भी अधिकतर भोजपुरिया श्रोता अपना दुःख दरद से परेशान बाटे। खेती किसानी बेटा, बेटी के पढ़ाई आ बियाह के चिंता घेरले बा। घर बनी की खेत में डाई यूरिया दिआई एकर चिंता से कपार फाट रहल बा। गाई गोरु खेत खरिहान आ भूसा लेहना के का होइ इहे सोच के ओकर जान जा रहल बा। एह हालात में कवनो आदमी गाना बजाना भा कविता कहानी एह से ना पढ़ी कि उ शास्त्रीय संगीत के जानकारि प्राप्त करी भा विश्व साहित्य के विद्वान हो जाई। उ एह से पढ़ि आ सुनी की ओकर दुःख दरद तनी कम हो जाव। तनी उ हल्का महसूस करी। तनी सा खुश हो जाई।

आज भी रउरा दस लाख खर्चा करके भोजपुरी शास्त्रीय संगीत के कैसेट लांच करी त उ सिमित लोग के लगे ही रही जाइ। आ दस हजार खर्चा करके कवनो आरा सीवान के टिनहिया गायक 'करब केकरा संगे परब सइयां अरब गइले ना" गा दीही त उ गली गली बाजे लागी।

रउरा पचास लाख लगा के हिंदी फिलिम बनाई खूब नीमन बाकी रउरा के वितरक ना मिलीहन। आ कवनो निरहुआ रेक्सा वाला दस लाख में फिलिम बना के पचास लाख कमा ली। आ रातो रात स्टार हो जाइ।

लेकिन हमनी के ना निरहू से मतलब बा ना खेसारी से। हमनी के मतलब बा भिखारी से। जेकर रचना आ संगीत साहित्य में जेतना ऊंचाई रहे ओतने जमीन अउर यथार्थ से जुड़ल रहे। एह से बुद्धिजीवी वर्ग से लेके मजदूर किसान तक उहाँ के आज भी प्रशंसक बा। अनपढ़ भिखारी ना संगीत साहित्य में बीए एमए रहनी ना ही नाट्य कला में एनएसडी से डिप्लोमा नाही एफटीआई से फिल्मेकिंग में कवनो शार्ट टर्म कोर्स कइले रहनी बाकी सरसती के कृपा रहे की उहाँ के पता चल गइल की लोकप्रिय होखे के बा त समाज के हर वर्ग के ध्यान में रख के आपन बात कहे के पड़ी तबे एगो सांस्कृतिक क्रान्ति शुरू हो सकत बा।

आज आवश्यकता बा की हमनी के कबीर तुलसी रसखान आ भिखारी से कुछ सिख के भोजपुरी में फइलल अश्लीलता आ गन्दगी के साफ़ कइल जाव।

लोकतंत्र के बिरवाई के, चांहे उ कवनो किसीम के कांहे ना होखे, तानाशाही मे ओकर पनकल लगभग असंभव बा ।

- जय प्रकाश नारायण

रावण से संवाद

अनिमेष कुमार वर्मा

रावण

काहे हमरा जरावे खाति
हर साल हमरा बनावे ल
अधर्म धरम के फेरा में
काहे हमरा जरावे ल

हम

रामायण के हिसाब से
खलनायक हव तू भाई
नायिका के उठा ले गईलS
नायक से कईलS लड़ाई

रावण

लड़ाई के पीछे के कारन के
तू का कईलS कोनो समीक्षा
ठीक बा की हम हरनी उनका
बाकि के लेहलस अग्नि-परीक्षा

हम

धरम करम के तू बड़का ज्ञाता
काम रखतS आपन काम से
त काहे कईलS बाउर काम
काहे लड़लS हो तू राम से

रावण

हमर बहिन के आंसू बहल रहे
हम बदला लेहनी अपमान के
सामने के बा हम ना देखनी
फिकिर ना रहे आपन जान के...
हर सिक्का के दू पहलु बाS
तहरा पे बा की तू का देखS
तहरा खाति हम दानव होखेम
बहिन से हमार ई पूछ के देखS

सीता माई के हाथ न लगावनी
कईले उनकर हरन हम रहनी
बाउर लूर चाहे जेकरा लागो
बिलाप बहिन के हम ना सहनी...

हेतना लोग जे हमारा जरावे आवता
आधे से बेसी तमाशा देखके जाई जब
राति भर दारु पी के टुल्ल होखे नाची
कोनो बेचारी के इज़्ज़त पे आफत आई अब..

आ हमरा जरावे के हक़ के देहलस
आखिर तुहो हवा उहे समाज से
अपना भीतरी राम जगा न पाइल

www.bhojpurisahityangan.com

सत्ता सुख के गणित

बेकल बेकार के कलमबाज़ी

आपन बेकल बेकार जी पुरान कलमबाज हई बाकि उनकर लफ्फाजी आमतौर प संपादक जी लोग के पल्ले नाही पड़ेला, एही से इहां के छपास से तौबा कर लिहले बानी। मस्तमौला आ हरदम चलायमान रहे के चलते इहां के अखबार के नौकरी में मन ना रमल। एह से खुद के बेकार घोषित करत निकल पड़ल बानी देश के खाक छाने। संयोग से बेकल जी से हमनी के संपर्क के तार जुड़ गइल बा। अब उहां के आपन डायरी के अंश **'आखर'** के लगातार भेजे के वादा कइले बानी।

हम बहुत पहिले से सुनत आ रहल बानी कि जब नाव डूबे वाली होखे, त सबसे पहिले चूहा नाव से कूद जालें। इ खाली सुनल-सुनावल बात ह, कबो एकरा के महसूसे के सौभाग्य हासिल ना भइल रहे। बाकि एगो बात हमके बराबर हैरान करत रहेले आ आज तक नाही समझ में आइल, अगर समुद्र में नाव डूबे वाली होखे चाहे डूब रहल होखे आ चूहा नौका छोड़ के भागे, त उ समुद्र में ही त गिरी। फेर नाव से कूदला के ओकरा का फायदा होई? एकर त सोझ-साफ माने इहे भइल कि जे नाव प आखिरी समय तक सवार रही ओकर जिनगी कुछ देर खाति बढ़ जरूर जाई। नाव पहिले छोड़ के भागे वाला चूहा त एक तरहा से आत्मघाती कदम ही उठावेलन आ मय नाव डूबे से पहिले ही खुद से डूब के मर जालें।

हमके एह तरे के उधेड़बुन में डूबल देख भीखम भाई झकझोर के जगा दिहलें। जब हम उनका के आपन यह उलझन के बतवनी त उ कवनो विशेषज्ञ के तरे बोले लगलन- एकरा में परेशान होखे वाला कवन बात बा जी, इ खेला त हरमेसा जारी रहेला। ठीक ओही तरे जइसे 10 साल तक सत्ता के मलाई काटे वाला कुछ चतुर-सुजान कांग्रेसी, लोकसभा चुनाव में हार तय जान के पार्टी छोड़ भाग खड़ा भइलें। इहो बात ध्यान देवे वाली बिया कि ओकरा में कुछ लोग के फेर से सत्ता सुख नसीब हो गइल बाकि ओह में से ज्यादातर आजो गुमनामी में पड़ल बाड़ें।

पिछला साल लोकसभा चुनाव में बिहार में महागठबंधन के करारी हार का भइल कि एह साल हो रहल विधानसभा चुनाव के मद्देनजर पार्टी में एक बेर फेर हलचल मचल बा। उठा-पटक के दौर जारी बा। बागी नेता सुशासन बाबू के साथ छोड़ के पला बदल रहल बाड़ें। पला बदलल हर हाल में सत्ता के सुख पावे खाति बेहद जरुरी ह। विधानसभा चुनाव से पहले महागठबंधन में हो रहल इ नया बगावत हमार भीखम भाई के हजम नइखे हो रहल।

भीखम भाई के कहनाम बा करीब 10 साल तक सत्ता सुख भोगे वाला नेता अब चला-चली के बेला में बगावत काहें कर रहल बाड़ें? खास कर अइसना माहौल में जब इ तय मानल जा रहल बा कि बिहार के सियासी समर में कमल खिली आ नरेंद्र मोदी के जादू भी चले के पूरा-पूरी उम्मीद बा। त एगो अउर नया गठबंधन (सेक्युलर गठबंधन) बना के सामाजवादी लोग कवन तीर मार लिही? मौका के नजाकत भांप के 'योगीजी' बोल उठनी- इहे त मूल जड़ बा। सेक्युलर गठबंधन के नेतवन के लागत बा कि 'हैंग असेंबली' बनल त एह लोग के मर-मोलाई करे के मौका मिल जाई आ फेर से एह लोग के दिन सुधर जाई। मंत्री बने के नाम पर गाड़ी-बंगला आ नौकर-चाकर के जुगाड़ हो जाई।

भीखम भाई 'योगीजी' पर भड़क गइलें- रउआ का लागत बा कि इ बगावत एही खातिर बा। अरे भाई, महागठबंधन के कुछ महत्वाकांक्षी नेता नमो के शरण में जाये बदे भूमिका तइयार कर रहल बाड़ें। उनके इ लागत बा कि जे तरे लोकसभा चुनाव के पहिले भागे वालन में से कुछ लोग के नमो किस्मत संवार दिहलें ओही तरे फेर बगावत करे वालन के विधानसभा चुनाव में भला हो सकत बा। सेटिंग-गेटिंग होते पाला बदले के दौर शुरू हो जाई। रउआ देखनी ना ह, अपना समधी जी से गठबंधन तोड़त 'साईकिल वाला नेता जी' महागठबंधन से ही किनारा कर लिहले बानी। इ कहावत त रउआ सुनलहीं होखब कि जहां गुड़ होखेला, उहें माछी भिनकेली स। अभी नमो आ एनडीए ही गुड़ बनल बाड़ें, एही से मतलबी नेता उनका आसपास मंडराये के फिराक में लागल बाड़ें। महागठबंधन में बगावत के संदेश भी इहे बा। वइसे भी नेतवन के नीति-सिद्धांत आ देश से कवनों मतलब नइखे। बस सत्ता के सुख मिलत रहे एही के गणित लगा रहल बाड़ें। जनता के कहल जाव, उ त 'नमोनिया' में डूबत- उतरात बिया।

भोजपुरी के दूकान

जीतेंद्र वर्मा

'भोजपुरी के दोकान' ई शीर्षक पढ़ के रउवा चिहा गइनी नूँ, चिहाईल स्वाभाविक बा। हमरो जब पहिल बेर भोजपुरी के दोकान के दर्शन भइल त हमहूँ चिहा गइल रहनीं । दोकान के नाम साहित्यिक रहेला वइसे फलाना सम्मेलन, फलना परिषद फलाना संस्थान, इत्यादि । भोजपुरी के समर्पित साहित्यकार भले भूखे मुअतारे बाकी भोजपुरी के नाम पर दोकान चलावेवाला लोग खूब चानी काटता।

एक बेर हम भोजपुरी के एगो दोकान में गइनी दोकान के बहरा चमचमात बा साइनबोर्ड लागल रहे जवना पर संस्था के साहित्यिक नाम खूब सुंदर अक्षर में लिखल रहे । दोकान के मालिक के भोजपुरी भाषा-साहित्य में काफी प्रतिष्ठा पा चुकल रहन। अइसे त भोजपुरी के कई गो दोकान बा बाकिर हम अबकी जवना दोकान में गइल रही ऊ कवनो छोट-मोट दोकान ना रहे ऊ त फैक्ट्री रहे उहाँ भोजपुरी होलसेल में मिलेला। ओकर मालिक भोजपुरी भाषा साहित्य-संगठन के का ना हउवे । संपादक में उनकर तुलना आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी होला त कवि में कबीर, सुर, दिनकर, पंत, निराला इत्यादि से, उपन्यासकार में त ऊ प्रेमचंद से ऊपरे गिनाले भोजपुरी इतिहास लेखन में ऊ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल से .....। बातचीत के क्रम में विश्वविद्यालय में भोजपुरी के पढ़ाई के बात आइल। मने-मन अगरा के कहे लगले -

'हमार बहुत दिन से सपना रहल ह कि भोजपुरी पढ़ावल जाइत अब ऊ पूरा हो गइल हम आपन किताब सिलेबस में कई जगे रखवले बानी। आखिर एही खातिर नू किताब लिखले बानी। लइका लोग से एक का बदले दस दाम रख के वसूल लेब।"

हम कहनी-

"भोजपुरी के सिलेबस में कुछ अइसनको किताब रखाइल बा जवन अबही छपे के बात दूर, लिखाइलो नइखे त जबकि ओह विषय पर दोसरा लेखक के किताब उपलब्ध बा।"

हमरा ई बात सुन के मंहथ जी के फूल अस खिलल मुँह काँट अस हो गइल। ऊ कइसन दू मुँह बना के बोले लगले-

"रउवे जइसन लोग त भोजपुरी के दुश्मन बा। बिना छपल किताब त हिंदिओ में राखल जाला । एसे ई फायदा होला कि लइका लोग के किताब ना मिली त झखमार के लेखक का लगे आई लोग आ लेखक लोग खूब पइसा लेके नोट्स बेची। हिंदी में अइसन खूब होला आ केहू एह पर अंगूरि ना उठावेला। अब रउवे बताई भोजपुरी हिंदी से कवना माने में घाट बिया। हिंदीवाला लोग पइसा कमाता, भोजपुरीवाला लोग ना कमाई ? जरूर कमाई । हिंदीवाला लोग अगर गलत भा सही ढ़ंग से पइसा कमाता त भोजपुरीवाला लोग के ई जन्मसिद्ध अधिकार बा कि उहो लोग जादा दाम से ना होखे त नाजायजो ढ़ंग से पइसा कमाव।"

एतना बात कह के मंहथ जी तनी रोक के हमरा ओर देखले आ तनी नरम स्वर में कहे लगले-

"आखिर हम आपन जिनगी भोजपुरी के सेवा में खफा दिहनी अब मेवा काहे ना खायब। हमार किस्मत ठीक रहे कि हिंदी में ना जमनी त भोजपुरी के कस के धई लिहली ।हमार चले अपना सात पुश्त आगे पीछे के सब रचना सिलेबस में लगावा दी। सफलता त मिलल बा। जब बिना छपले किताब राखे के बात कवन दिक्कत बा । हित-नाता, गोतिया-देयाद जान-पहचान, ...जात पहचान वाला लोग के छोड़ल त बड़ा अन्याय होई। एही से एहू लोग के किताब हम सिलेबस में लगावत बानी।"

मंहथ जी के महान भोजपुरी सेवा के हम दसो नोह जोड़ के गोड़ लगनी आ विदा भइनी।

जीतेन्द्र वर्मा

सिवान , बिहार के रहे वाला जितेंद्र वर्मा जी भोजपुरी भाषा आ साहित्य खाति अब ले कई गो किताब लिख चुकल बानी। हिन्दी आ भोजपुरी में इँहा के लिखल कई गो किताब प्रकाशित हो चुकल बाड़ी स। बिहार टेक्स्ट बुक के कक्षा ६ से ८ तक के भोजपुरी साहित्य के सिलेबस निर्माण समिति के महत्वपूर्ण सदस्य रह चुकल बानी । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से जुड़ल बानी।

लघु कथा : कफ़न

डॉ. उमेश जी ओझा

एक हाली हम आपन काम से राजधानी गईनी । जब रेल से उतऽरी के स्टेशन से बाहर अईनी त देखनी कि एगो खूबसुरत मेहरारू जोर-जोर से रोअत रहे। लोग ओकरा के घेरले रहले। हमहू भीड में शामिल हो गईनी। देखनी कि उ अपना गोदी में एगो लईका ले ले बिआ। छाती पीट-पीटके रोअत रहे, कहत रहे कि बेटा मरी गईल बा, एकरा के ओढ़ावे खातिर कफन के पईसा नईखें। राउरा सभे कुछओ मदद करी । जेकरा से आपन बेटा के कफन दे सकी आ ओकर क्रिया करम कर सकी। वोह औरत के हृदय चितकार सुनिके कतने लोग जल्दि-जल्दि ओकरा हाथ में पईसा धरत चल गईल। हमहू कुछ पईसा दे देनी। बाकि देश में होत एक से बढिके एगो चमत्कार पढ़ी के तनिसा हम सशंकित रहीं आ वोह औरत लगे जाके वोह लईका के मुंह देखनी की कहीं ई झुठ त नईखें बोलत। बाकि देखला प बुझाईल कि वोह लईका के मुंह प मांछी भिनकत बाडीस । भरोसा भईल की ई मरिये गईल बा।

दस दिन बाद फेर से वोही जगह पर जायेके मोका मिलल। अबकिओ हाली उहें औरत वोईसने लईका के ले ले फेर कफन के नाम पर भीख मागत लउकल। अब हमरा शक हो गईल कि, कुछ चाल जरूर बा। हम ओकरा पीछे लाग गईली। भीड़ हटला के बाद उ सभ पईसा उठाके लईका के गोदी में लिहले एगो सुनसान जगह प गइल, आ लईका के मुह प पानी के छींटा मरलस। लईका फुर से उठ गईल।

भोजपुरी के उत्पति

रीता सिन्हा

बिहारी-मैथिली, मगही,भोजपुरी,बंगला,उड़िया आ असमिया के उत्पति मागधी प्राकृत आ उपभ्रंश से भईल बा।ई प्राकृत आर्य के भाषा रहे ,जेकरा के हार्नेलि आ ग्रियर्सन बाहरी आर्य कहले बा ।

ग्रियर्सन के कहलानुसार अत्यंत प्राचीन काल में मागधी के प्रचार उतरी भारत में रहे , किन्तु कालांतर में शौरसेनी के प्रभाव में, मागधी दक्षिण आ पूरब में पसर गईल । मगही आ मागधी, मगध भाषा से बा।पढ़ल लोग संस्कृत नाम "मागधी "कहेला लेकिन जनसाधारण "मगही " कहेला ।

प्राचीन समय में मगध् में आज के पटना जिला आ गया के उतरी भाग के आधा भाग ही रहे।मगध के पुरान राजधानी राजगृह (पालि, राजगह) रहे । जरासंघ इहे के राजा रहले । इनका राज के फैलाव मध्यदेश तक रहे।ईसा के छठी शताब्दी पूर्व इहाँ के राजा बिम्बसार रहले जे महात्मा बुद्ध के समय के रहले । बुद्ध के बहुत समय इहाँ बीतल बा । बाद में बिम्बसार के उतराधिकारी पाटलिपुत्र के आपन राजधानी बनवले । पटना के लगे "कुम्हरार " जगह पाटलिपुत्र रहे ।"पुरबिया" या "पुर्बी " - उत्तरी भारत में भोजपुरियन लोग पुरबिया आ उनकर बोली पुर्बी कहाला । पूरब आ पुरबिया के बारे में हॉब्सन-जॉब्सन पृ० 724 में उनकर विवरण बा - उतरी भारत में" पूरब" से अवध ,बनारस आ बिहार प्रांत आवेला।माने पुरबिया इहे के निवासी कहाला।बंगाल के पुरनका फ़ौज में ई शब्द के खूबे बेवहार होखे । काहे कि ढेर एनही के लोग होखे ।

पुरबिया भा पुर्बी में कोसली (अवधि) भी आवेला । भोजपुरी में स्थान भेद से बोली के नाम बदल जाला । जेंगा छपरा के भोजपुरी - छपरहिया,बनारस के –बनारसी,बलिया के पच्छिमी आ आजमगढ़ के पुर्बी क्षेत्र के बोली - 'बंगरही ' कहाला । 'बांगर ' उ ह जहवा गंगा के बाढ़ ना जाए ।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी त्याग करे वाली भाषा हियऽ : अर्जुन तिवारी

हिंदी दिवस के मौका प लखनऊ में आयोजित एगो कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव द्वारा वरिष्ठ लेखक **डॉ. अर्जुन तिवारी** के **'भोजपुरी साहित्य के इतिहास'** खाति राहुल सांकृत्यायन सम्मान से सम्मानित कइल गइल। पेश बा डॉ. अर्जुन तिवारी जी के संघे देवेंद्र नाथ तिवारी के लमहर बतकही के कुछ खास अंश...

सबसे पहिले तऽ आखर परिवार के ओर से रउआ के बधाई।

रउआ सभे के आभार। साँच पूछी तऽ, ई हमार सम्मान ना हऽ भोजपुरी के सम्मान हऽ। हम भोजपुरी के बिखरल इतिहास के जोड़े के काम भर कइनी आ उ पुस्तक बन गइल।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दिहल जाए वाला एह सम्मान के बारे में कुछ बताईं ?

राहुल जी बीसवीं सदी के सबसे महान साहित्यकार-विद्वान रहलन। साहित्य के प्रति उनकर अनुराग के एही से समझल जा सकत बा कि ऊहाँ के जब भी विदेश यात्रा पर जाईं तऽ ऊँहा से रूपया पइसा आ कीमती साजो-समान ना ले के आईं बलुक खच्चर पऽ लाद के अनमोल साहित्यिक धरोहर आ पांडुलिपि अपना संघे ले आवत रहनी। राहुल जी भोजपुरी साहित्य के भी सृजन कइनी। ऊँहे के नाम पऽ भोजपुरी खाति बेहतर करे वाला लोग के उत्तर प्रदेश शासन द्वारा हर साल इ पुरस्कार दिहल जा रहल बा।

भोजपुरी ग्रंथ लेखन के प्रेरणा कहाँ से मिलल ?

हमरा भोजपुरी के ग्रंथ लेखन के प्रेरणा एगो आईएएस अधिकारी से मिलल। जे पटना में एगो मुलाकात में हमरा से कहलन कि 'तिवारी जी रउआ पत्रकारिता के दर्जन भर किताब लिखले बानी बाकि आपन मातृभाषा भोजपुरी खाति कवनो साहित्यिक योगदान नइखी देले। रउआ भोजपुरी साहित्य के इतिहास लिखीं। काहेंकि भोजपुरी साहित्य के जवन भी इतिहास आज मौजूद बा ऊ या तऽ अंग्रेजी में बा ना तऽ हिंदी में।' भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे खाति हमरा नामे बिहार सचिवालय से एगो सरकारी चिट्ठी आइल रहे। एह चिट्ठी में आठवीं अनुसूची में भोजपुरी के शामिल करे खाति हमके आपन अभिमत जाहिर करे के अनुरोध कइल गइल रहे। एकरे बाद हम गंभीरता से 'भोजपुरी साहित्य के इतिहास' के टटोले में भीड़ गइनी।

भोजपुरी के मान्यता से का हिंदी कमजोर होई ?

ना, इचिको ना। भोजपुरी त्याग करे वाली भाषा हियऽ आ एकरा में त्याग के परंपरा रहल बा। राष्ट्रहित खाति भोजपुरिया लोग हिंदी के अधिक महत्त्व दिहले बा। इ बात तय बा हिंदी जब भी पल्लवित-पुष्पित होई तऽ अपना जनपदीय भाषा के दम पऽ होई। गाँव-देहात के बोली पुष्ट होई तऽ हिंदी अपना आप पुष्ट होई।

भोजपुरी शब्दकोश परियोजना के बारे में कुछ बताईं।

ऊँहे राहुल सांकृत्यायन जी के कहनाम रहे, 'हिंदी हमनी के बड़की माई हियऽ। आ भोजपुरी हमनी के आपन माई। परिवार में बड़की माई के मिल्कियत रहेला आज ना तऽ काल्ह भोजपुरी भी सरताज बनी। एह बात के केंद्र में रख के महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा इलहाबाद में एगो गोष्ठी राखल गइल। जहाँ हिंदी के विकास खाति सभे विद्वान एह विचार पऽ एकमत

भइल कि हिंदी के विकास तबे होई जब गाँव के बोली/भाषा के विकास होई। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रोफेसर गिरिश्वर मिश्र जी के प्रेरणा पऽ भोजपुरी-हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश के परियोजना मूर्त रूप लिहलस।

एह परियोजना के संपादकीय टीम के बारे में कुछ बताईं?

एह परियोजना के हमरा संघे-संघे संपादक मंडल में शामिल डॉ. अरूणेश नीरन, सूर्यदेव पाठक 'पराग', प्रकाश उदय आ धनजी प्रसाद जइसन लोग के टीम लगातार मेहनत कर के परियोजना के पूरा कइलस हऽ। अब शब्दकोश बन के तइयार बा। एह शब्दकोश के बनावे खाति हमनी के बहुत सारा पुस्तकन के अध्ययन करे के पड़ल। दुनिया भर में मशहूर ऑक्सफोर्ड शब्दकोश में केतना विसंगती बा इ एह शब्दकोश के बनावे के दौरान पता चलल। एगो उदाहरण देखीं- 'धान के लावा' खाति एकरा में 'Parched Rice', 'मट्ठा' खाति 'Butter Milk' आ 'सौतेला भाई' खाति 'Half Brother' लिखल गइल बा। भोजपुरी-हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश में एह विसंगतियन के दूर कर के सही अर्थ के साथे शब्दन के रखल गइल बा।

भोजपुरी के क्रांतिधर्मी स्वर के बारे में राउर का विचार बा?

आपन भाषा भोजपुरी राष्ट्रीय भाषा ना होके अंतरराष्ट्रीय महत्त्व के भाषा हो गइल बा। हिंदी तऽ भारत के भाषा हऽ लेकिन भोजपुरी के विश्व के दस राष्ट्रन में प्रधानता बा। भोजपुरी खाँटी बिहार-यूपी के भाषा हऽ। गाँधी जी एही भोजपुरी के आजादी के लड़ाई में बहुत प्रभावी शस्त्र के रूप में प्रयोग कइनी।

कण -कण में जेकरा क्रांतिबीज
अइसन भोजपुर टप्पा हमार
इतिहास कहे पन्ना पसार

अंग्रेज के भगावे खाति आजादी के पहिला लड़ाई 1857 में शुरू भइल लेकिन भोजपुरी अंचल में अंग्रेजन से मुक्ति खाति एह से करीब सौ साल पहिले लड़ाई शुरू हो गइल रहे। चौसा आ 1757 के प्लासी के लड़ाई में भोजपुरिया जवान खूब लड़लें। गाँधी जी जब भी उत्तर भारत में आईं तऽ बटोहिया वाला गीत सुने के बात करीं। सुनबो करीं। अइसन बिया हमनी के भोजपुरी

रउआ नजर में भोजपुरी के सबसे बड़ विशेषता का बा?

कवनो भाषा शालीनता के पर्दा में रह के मुखर होखे के कोशिश नइखे कर सकत। हिंदी में इ बात नइखे बाकि भोजपुरी चेतना के अभिव्यक्ति काफी मुखर भइल बा। भोजपुरी लोगगीतन में चेतना के पुरहर अभिव्यक्ति के महसूस कइल जा सकत बा। भोजपुरी के भाव

दू गो गीत!

नुरैन अंसारी

" नेताजी "

दिन भर में दस हाली धांगत बाड़न गाँव
केहू के चुमस माथा, केहू के छुअस पाँव
केतना बदल गइलन नेताजी, आवते चुनाव

हाथ जोड़ के वोट खातिर कइसे घिघियात बाड़ेन
लोग देत बाटे गाली, बाकिर तबो खिखियात बाड़ेन
जनता के बात पर, नाही तनको खिसियात बाडेन
इ उहे हउवन काल्ह तक जेकर गजबे रहे भाव
केतना बदल गइलन नेताजी आवते चुनाव

झकले ना एको हाली, गइलें जब से जीत के
चिन्हले हमेशा अपना रिश्तेदार,अपना हित के
भुल गइलन साफा ई, राज-धरम के रीत के
आज पड़ल जब जरूरत त करत बाड़ें छाव
केतना बदल गइलन नेताजी आवते चुनाव

कइलें ना काम कबो, जन-प्रतिनिधि के
डार हरदम थमले रहलेन, इ हरिहर ओधि के
आज दोष सगरी देत बाडेन, अपना बिरोधी के
लहावत बाडेन जीते खातिर एक से एक ई दाँव
केतना बदल गइलन नेताजी आवते चुनाव

"पईसे माँ-बाप बा "

पईसा के बिना जिनगी, जिअल अभिशाप बा
सच कही, त पईसे बा धरम, पईसे माई-बाप बा

पईसा ना होखे त, अपनो पराया बा
पईसे से प्रेम, पईसे से मोह-माया बा
पईसे से चलत बा, सगरी रिश्तन के गाड़ी
लोग पईसे से होशियार बा,पईसे बिन अनाड़ी
बिक जाला पईसा पे अनमोल ईमान
पईसे खातीर आदमी बन जाला शैतान

अगर पाकेट में बा पईसा त सात खून माफ बा
सच कही, त पईसे बा धरम, पईसे माई-बाप बा

अवगुण भी पईसा वाला के गुण लागेला
पईसा खातीर पाप कईल भी पुन लागेला
हर समय पईसा के महिमा अपरंपार बा
अमीर गरीब सबके पईसे से प्यार बा
आदमी के पईसे बनावेला दरिद्र अउर दानी
मिटी ना कबो दुनिया से पईसा के कहानी

"नुरैन" जिनगी के हर मोड पर पईसे के छाप बा
सच कही, त पईसे बा धरम, पईसे माई-बाप बा ॥

www.bhojpurisahityangan.com

दिल, जब बच्चा था जी (भाग –9)

बृज किशोर तिवारी

रवा लेखक के भोजन पुराण के कथा में लेखक के आपन दीदी के तंग करे के फेर में आपन पेट के औकात से अधिका खा लेला के आ ओकर बाद लेखक के भईल परेशानी के पढ़नी । अब आगे के भाग में कुछ आउरी बदमासी के मजा लिहल जाव -

एही तरे कुलही दिन बीत जाव ,बचपन के बात। खेले आ खाए इहे दू गो काम रहे । एगो आउर जरूरी काम रहे - दिदिया से झगडा कईल भा झगडा के ओर खोजल ।दिन भर में जबले, एकाध बार दिदिया से लड़न लियाव तले नीन ना लागो। एक दिन एही तरे साँझ खान ,बहरे से खेल के आवे घरी फेरु लेट हो गइल । लेकिन, लेटो भईल तS खाँही के चक्कर में ।

गो लईका रहे , "दूमन" नाव रहे ओकर । रहे तS उ पतई लेखा ,लेकिन नाव रहे 'दूमन' । साँझी खान खेल के आवत रही ,ओकर घर रस्तवे में पडत रहे । तनी ओही के घरे ,पानी पिए के रुक गइनी । तले, हमरा के बुझाईल कि 'दुमना के रसोई में कुछ "छनर - मनर" होत बा । जल्दिये पता लग गईल की 'दुमना' किहा कुछ "हीत" लोग आईल बा । पूरी, कचौरी आ का जानी का दो का दो बनत रहल हS। फेरु का, हम जान बुझी के तनिका आउरी देरी कई दिहनी, 'दूमना' के घरे। मन में इ रहे कि, देरी होखी तS खाए के पूछबे करी 'दूमना' भा "दुमना के माई" । ओतना करेदिट (क्रेडिट) खराब ना रहे,'दुमना' के इहा । लेकिन 'दुमना' हमरा के खेदे के चक्कर में रहे । कउ दईया इशारा से कहे - ढेर रात हो गईल जी ,जा अब घरे जा । ना तS तोहरा के डांट खाए के परी घरे ।

इहा सोंह-सोंह महके । हम कही देनी ,हमरा के कोई ना डाटे - ओटे घरे । खाए के बेरा ले डटल रही गईनी 'दुमना' किहा । आ जनते बानी मेहनत के फल मीठा होला । हार के 'दुमना' कहलस- हम तS जातानी खाना खाए ,तूहू खईबा का ? झुठहु के पूछनी कि, का बनल बा कि खाए कहSतारS ? 'दुमना' कहुवे, बनल तS बहुत कुछ बा ,खाए के बा त बोलS, निकलवाई ? हमहू कही देनी -निकलवाव मरदे तईहन, पूछे के का बा ।

हम्म, सचहू बनल तS रहे तर माल ।चपनी मुड़ी ले । सोचनी ,अब के जाके दिदिया के बनावल, रुखरी रोटी खायीं, घरे जा के । उहवा ले खा पी के ,घरे अईनि । लगभग सभे लोग खा पी लेले रहे । गाँव में सेकराहे खा पी लेवे ला लोग ।केहू सुतियो गईल रहे ,आ केहू बतियावत भी रहे । दिक्कत तS अब भईल । खा तS लेले रहुवी चांप के 'दुमना' के इहाँ सोचSतानी कि घरे , का खाईब ? पेट में सांस लेवे के जगहे ना रहे । इंहा घरे हमार खोजाई होत रहे । दिदिया जोहSतिया कि आजूवो लेट कईले बाडन । कुछ ना कुछ बवाल जरूर करीहन खाए घरी । दिदिया लिया के हमरा के भर थारी, रोटी तरकारी परोस दिहली । कहली- लS भकोसS । बढका कमाई कई के आईल बाड़S,आधी राती खा ।

हमारा के बुझईबे ना करे कि अब का करी, एकहू कवर खाए के हिम्मत ना रहे । दिमाग के घंटी बाजल । पिनक के उठ गऊवी खाना पर से ।कहनी- तोहरा के खाना परोसे के सहूर नईखे । एही तरे खाना खियावल जाला । लगनी, हमहू झनखे मनखे । इ कुलही सुनी के घर के लोग जमा हो गईल भईल कि का बात बा?

दिदिया, हमार देरी से आवे के मुद्दा उठावल । हम कहनी, सब ठीक बा तनी हाई देखि सभे तS... हमार थारी । हम अईसही खाना खाईब ?

"डांगर - गोरु" मतीन खाना परोसाला हमरा के। हेतना रोटी एके साथे (जब कि ओतना तS हम खाई जात रहनी ह) । हम ना खाईबअब, आज हम खनवे ना खाईब । सभे थारी देखल । दिदिया आजू फेरु डटाईल । फेरु तS हमार मान मनव्वल होखे लागल ।

खा ले बाबू ,

खा ले बाबू ।

काहे के... तर माल से भरल पेट आजु तS, हमार भूत भी, मानेवाला ना रहन खाए खातिर ।

www.bhojpurisahityangan.com

जे.पी. आंदोलन आ भारतीय राजनीति

गौरव सिंह

जयप्रकाश नारायण जी भारतीय स्वतंत्रता सेनानी अउरी राजनेता रही । मूल रूप से इहाँ के इंदिरा गाँधी के विरोध में विपक्ष के नेतृत्व खातिर जानल जाला| इहाँ के एगो समाज सेवक भी रही आ इहाँ के लोकनायक के रूप में भी काफी मशहूर बानी । जयप्रकाश नारायण जी सैधांतिक तौर प बहूर बरियार रही| उहाँ के मार्क्सवाद के ओतने वैल्यू देत रही जतना गाँधी जी के विचारन के । एही से कहल जाला कि गाँधी जी में मार्क्सवाद अउरी गाँधी जी के नैतिकता के अनूठा समन्यवय पावल जाला । उहाँ के सम्पूर्ण क्रांति के विचार पूरा देशवासि के बीच एगो आत्मविश्वास भरे के काम कईले रहे । आम आदमी के अधिकार अउरी भागीदारी के साथे साथे छात्र के राजनितिक भागीदारी के आवाहन से देश में एगो वैकल्पिक राजनीती के शुरुआत भईल रहे ।

उहाँ के लक्ष्य ना सिर्फ आम जनता के राजनितिक भागीदारी रहे बल्कि गरीबी अउरी बेरोजगारी पर भी उहाँ के विचार अउरी सिधांत सराहनीय रहल बा । उहाँ के हमेशा शोषणविहीन अउरी खुशहाल समाज के कल्पना कईले रहनी । जयप्रकाश नारायण जी के आन्दोलन भारतीय राजनीती के एगो शानदार मोड़ रहे जहाँ से जनता पार्टी बनल फिर टूटल अउरी टूटला के बाद नया नया बहूत पार्टी के उदय भईल । शानदार राजनीतीक मोड़ एह से कहनी ह काहे कि उहाँ के विचार लोकतांत्रिक समाजवाद, सम्पूर्ण क्रांति जइसन विचारन से परिपूर्ण रहे जवन नया वैकल्पिक राजनीती के जन्म देले रहे ।

लोकतांत्रिक समाजवाद के चिंतक

जयप्रकाश नारायण जी एगो सामाजिक चिंतक के रूप में भी आपन छाप छोडले रहनी । उहाँ के विचारधारा में गति अउरी दिशा दुनो रहे । लेकिन आज के राजनेता लोग के पास विचारधारा ही नइखे, गति अउरी दिशा के कल्पना बहूत दूर के बात बा । इहे कारण बा कि उहाँ के विचार 'लोकतांत्रिक समाजवाद' से परिपूर्ण रहे जबकी आज के लीडर्स में 'औपचारिक लोकतंत्र' कूट-कूट के भरल बा । जयप्रकाश नारायण जी के चिंतन में मार्क्सवादी अउरी गांधीवादी के अनूठा समन्वय मिलेला । मार्क्सवाद के आर्थिक संरचना अउरी गांधीजी के नैतिकता से उहाँ के बहूत प्रभावित रही । उहाँ के सबसे ज्यादा जोर रहे आत्म अभिव्यक्ति अउरी आत्म स्वतंत्रता जईसन मूल्यन प रहे । चुकी उहाँ के मार्क्सवाद से काफी प्रभावित रहली एह से उहाँ राजनितिक स्वतंत्रता के साथे साथे आर्थिक स्वंतंत्रता के भी गुहार कईले रहनी जवना से कि शोषणविहीन समाज के कल्पना कईल जा सके ।

उहाँ के कहनाम रहे कि समाजवाद के खाली एके रूप बा आ एके सिधांत बा उ मार्क्सवाद हउए । हमरा किताब के नाम इयाद नइखे आवत लेकिन लाइब्रेरी में एकबे पढले रहनी उ अभी ले इयाद बा एगो बात जवना में उहाँ के कहले रही कि कोई भी सतारूढ़ समाजवादी दल समाजवाद के निर्माण कर सकेला यदि ओह लोग भी दू गो चीज होखे । पहिला प्रतिरोध के कुचले खातिर बल प्रयोग के पर्याप्त शक्ति आ दूसरा विरोध से निपटे खातिर पर्याप्त लोकसमर्थन । अइसन बिल्कुल ना रहे कि खाली मार्क्सवादी विचार हावी रहे । बहूत असमानता भी रहे । जईसे काल मार्क्स अधिनायक तंत्र के बात करत रहले जबकी जयप्रकाश नारायण जी लोकतांत्रिक साम्यवाद के । मार्क्स समाजवाद भौतिक अउरी आर्थिक पक्ष प बल देत रहे लेकिन जयप्रकाश नारायण जी लोकहित के बात करत रही| एक तरफ मार्क्स समाजवाद खुनी

गौरव सिंह

रोहतास, बिहार के रहे वाला गौरव जी इंजीन्यरिंग के छात्र हईं। भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी। ए घरी गौरव जी VIT यूनिवर्सिटी वेल्लूर , तमिलनाडू से पढ़ाई कर रहल बानी।

क्रांति प बल देत रहे लोग ओहिजा दूसरा तरफ जयप्रकाश जी गाँधी जी के सविनय अवज्ञा आंदोलन अउरी सत्याग्रह के बात करत रही| एह सब असमानता के बावजूद दुनो लोग के समाजवाद के लक्ष्य एके रहे। दुनो लोग शोषणविहीन समाज के कल्पना करत रही जा आ गरीब के उत्थान खातिर समर्पित रही जा।

सम्पूर्ण क्रांति के विचार

देश में आजादी के बाद से लेके 1977 तक ज्यादातर आन्दोलन के मशाल थामे वाला नेता, जयप्रकाश जी के नाम देश में एगो अईसन व्यक्तित्व के रूप में उभरेला, जवना में उहाँ के विचार आ दर्शन के प्रतिबिम्ब लउकेला। एही विचार आ दर्शन के सहारे भारत के दिशा तय करे के कोशिश कईले रहनी| 1975 के महत्वपूर्ण भाषण में उहाँ के कहले रही कि भ्रष्टाचार, गरीबी, बेरोजगारी के मिटावल आ शिक्षा क्षेत्र में क्रांति लावल अइसन चीज ह कि ओह घरी के कांग्रेस के सरकार वाली व्यवस्था के सहारे पूरा ना कईल जा सकत रहे। काहे कि उहाँ के मानना रहे कि उ सब वोही व्यवस्था के उपज रहे। उहाँ के मानना रहे कि इंदिरा गाँधी जी के सरकार पूरी तरह अलोकतांत्रिक आ भ्रष्ट हो चुकल रहे। एही से उहाँ के सम्पूर्ण व्यवस्था के परिवर्तन करे खातिर क्रांति के आवाहन कईनी जवना के नाम रहे "सम्पूर्ण क्रांति"। एही सम्पूर्ण क्रांति के नारा रहे "सिंहासन खाली करी जनता आ रहल बिया"|। जेपी जी सम्पूर्ण क्रांति के सफल बनावे खातिर एक साल तक कॉलेज अउरी विश्वविद्यालय बंद करे आवाहन कईले रहनी।

उहाँ के सम्पूर्ण क्रांति के वास्तविक अर्थ रहे राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, शैक्षणिक व आध्यात्मिक क्रांति। उहाँ के एह सातों क्रांतियों के मिलाके सम्पूर्ण क्रान्ति के कल्पना कईले रहनी। एह क्रांति के असर अतना बेजोड़ रहे कि केंद्र में कांग्रेस के सत्ता से हाथ धोवे के पड़ गईल रहे। उहाँ के हुंकार प नौजवान लईकन के जत्था सड़क प निकल आवत रहे। बिहार के धरती से उठल चिंगारी पूरा देश में प्रभावशाली तरह से देश में फ़ैल चुकल रहे। आज के बिहार के सियासत के नेता लालू प्रसाद, नीतीश कुमार, रामविलास पासवान या फिर सुशील मोदी, सब लोग ओही छात्र युवा संघर्ष वाहिनी के हिस्सा रहे। पटना के ऐतिहासिक गांधी मैदान में उपस्थित लाखों लोग जात-पात, तिलक, दहेज अउरी भेद-भाव के छोड़े के संकल्प लेले रहे। ओही मैदान में हजारों-हजार लोग आपन जनेऊ तुर के विरोध प्रदर्शन कईले रहे। ओह घरी चर्चित नारा रहल रहे--

"जात-पात तोड़ दी, तिलक-दहेज छोड़ दी।
समाज के प्रवाह के नवका दिशा में मोड़ दी।"

आपातकाल अउरी जनता पार्टी के निर्माण

1974 समाप्त होखत होखत देश के सामान्य स्तिथि बेहद चिंताजनक हो गईल रहे। खास तौर प 1970 के बाद आशा अउरी विश्वास सबकुछ समाप्त होखे लागल रहे। लोगन में आक्रोश बढ़ गईल रहे। गरीबी हटावे खातिर कुछ ना कईल गईल जबकी इंदिरा जी के ओह समय नारा ही रहे 'गरीबी हटाओ'। आर्थिक स्तिथि दिनों दिन ख़राब होत चल गईल रहे| मूल वृद्धि आसमान छूए लागल रहे। राजनितिक अस्थिरता बढ़त चलल चल गईल। लोकतंत्र के महत्वपूर्ण संस्था प प्रधानमंत्री के एकाधिकार बढे लागल रहे| भ्रष्टाचार बढ़त चलल चल गईल। मारुती वाला मामला प इंदिरा जी के मुह बन रहे। इंदिरा जी विरोध करे वाला लोगन से दुश्मन जईसन व्यवहार करे लगली। बहूत सारा अख़बार प कब्ज़ा करे के कोशिश करे लगली। यहाँ तक कि दूरदर्शन प प्रसारित होखे वाला न्यूज़ आदि प भी संजय गाँधी आपन अधिकार जतावे लगले। अइसन तानाशाही, रेलकर्मी के हड़ताल प बर्बरता पूर्ण दमन अउरी गुजरात छात्र आन्दोलन के कुचले वाला घटना, इ सब जयप्रकाश नारायण जी के बुरी तरह से प्रभावित कईलस। बढ़त आक्रोश के दबावे खातिर उहाँ के आपातकाल लागू कर देनी अउरी सारा विरोधियन के जेल में भेजवा देनी।

दू साल बाद जईसे आपातकाल ख़त्म भईल ओकरा बाद 1977 में जवन ऐतिहासिक चुनाव भईल उ अपना आप में एगो बहूत बड दिलचस्प चीज रहे। लोग जवना तरह से वोट देहले रहे ओह से इ पता चलल कि आपातकाल वाला निर्णय से लोग काफी नाराज रहे। इंदिरा गाँधी, संजय गाँधी समेत उ सब लोग चुनाव में बुरी तरह से धराशाई हो गईल रहे जेकर आपातकाल के ताल्लुकात रहल रहे। आजादी के बाद पहिला पार्टी बनल रहे तमाम पार्टी के जोडके जवन कांग्रेस के विरोध चुनाव जीतल। जनता पार्टी बनला के बाद जवन हाल भईल पार्टी के अन्दर अइसन बुझात रहे कि बानर के हाथ में नारियल दे देवल गईल होखे। चौ. चरण सिंह, बाबु जगजीवन राम, मोरारजी देसाई के बीच भावी प्रधानमंत्री के लेके खूब विवाद भईल। हालाँकि जयप्रकाश जी के सहमती मोरारजी देसाई के तरफ ही रहे। अउरी आख़िरकार मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बनले पहिला गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री। अफसोस के बात इ रहल कि व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के आगे इ पार्टी ज्यादा दिन ना चलल अउरी दुकड़ा टुकड़ा में बट गईल।

वैकल्पिक राजनीती के शुरुआत

1975 में आपातकाल लागल, 1977 में लोकसभा चुनाव भईल, जनता पार्टी बनल। लेकिन जईसे व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के आगे जनता पार्टी के विकेंद्रीकरण भईल तब ओह में से ढेर छोट छोट पार्टी वैकल्पिक राजनीती के तौर प सामने आइल। लालू यादव, नीतीश कुमार, मुलायम सिंह यादव, राम विलास पासवान, जार्ज फर्नांडिस, सुशील कुमार मोदी जैसे तमाम नेता कबो

जयप्रकाश नारायण के चेला मानल जात रहन जा। लेकिन सत्ता के लोभ ओह लोग के जयप्रकाश नारायण के विचारधारा से बिलकुल अलग कर देलस। भारत में तब से प्रभावशाली वैकल्पिक राजनीती के शुरुआत भईल। बीजेपी पार्टी भी ओही जनसंघ से निकलल पार्टी हिय जवन जनता पार्टी के साथ गठबंधन में रहल रहे। आज जतना भी पार्टी बाड़ी सन गैर कांग्रेसी सब के सब ओही जनता पार्टी के एगो अंग ह समाजवादी पार्टी होखे, जदयू, राजद, एनसीपी होखे आदि। वैकल्पिक राजनीती के साथे साथे एक प्रकार के सरकारी कामकाज में लोकतांत्रिक पारदर्शिता आइल। लोग के असली लोकतंत्र से अवगत होखे के मौका मिलल जवना में इ सिद्ध भईल कि अगर कामकाज में मनमानी होई त जनता कबो उखाड़ के फेक सकेला।

लेकिन सबसे ज्यादा दुःख के बात इ बा कि कवनो नेता जवन एकसमय जयप्रकाश नारायण जी के चेला कहात रहे लोग, सबलोग जेपी जी के सिधांत के नजरंदाज करे लागल रहे। खासकर तब जब मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बनल रहले तबे शुरुआत भईल रहे। इ घटना ठीक आजादी के समय लेखा रहे जब गाँधी जी आन्दोलन कईले रहले सब लोग साथ रहे लेकिन सरकार बनला के बाद गाँधी जी के भी वैल्यू कम हो गईल रहे। बिहार में नब्बे के शुरुआती दौर में जब लालू यादव मुख्यमंत्री बनल रहले तब समूचा देश के अनुभव होखे लागल रहे कि अब जनता राज कायम हो रहल बिया। आज भी कवनो वैकल्पिक राजनीती के शुरुआत करेला त जेपी जी के सिधांत के जरूर याद करेला। तब के शुरुआती लालू यादव के छवि आ आज के लालू यादव के छवि में जमीन आसमान के अंतर बा। आम आदमी पार्टी बनल रहे त आपन साधारण छवि देखावे खातिर ढेर MLA लोग रिक्शा आ मेट्रो से विधानसभा गईल रहे लोग। मुख्यमंत्री बनला के बाद लालू यादव जी भी साइकिल से विधानसभा गईल रहले। लेकिन बाद में जयप्रकाश नारायण जी के जातिविहीन सिधांत से लालू, नितीश, मुलायम आदि सब लोग समझौता कईलस।

आज के समय में जयप्रकाश नारायण जी लेखा नेता मिलल काफी मुश्किल बा। उहाँ के सिधांत अउरी विचार, हमेशा लोग के आजो प्रभावित करेला। आज भी कोई अगर नया राजनीती शुरू करे के सोचेला त उहाँ के सिधांत के जरूर याद करेला, भले कुछ दिन बाद सब कुछ भूल के आपन ट्रैक पकड़ लेला। असली समाजवाद के कल्पना उहें के कईले रहली। आज के तथाकथित समाजवाद में अउरी उहाँ के लोकतांत्रिक समाजवाद में जमीन आसमान के अंतर बा। जातिगत सियासत के हमेशा उहाँ के विरोध कईले रहनी लेकिन उहाँ के चेला लोग आज ओही के आपन इंधन मान के सियासत चलावेला। उहाँ के शोषणमुक्त समाज के सपना आजो अधुरा बा। जवना चलते उहाँ के कांग्रेस के विरोध कईले रहनी उहे चीज आज ओह सब पार्टी बा जवन जनता पार्टी से टूट टूट के बनल रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

आरा : सफाई के बहाने एगो धरोहर के बचावे के पहल

दू अक्टूबर के गाँधी जयंती और स्वच्छता दिवस के अवसर पर अम्बा (अश्लीलता मुक्त भोजपुरी असोसिएशन) के कार्यकर्ता लोग मिल के 1857 की लड़ाई के प्रतिक आरा हॉउस, जेकरा अब वीर कुंवर सिंह संग्रहालय के नाम से जानल जाला के सफाइ कइल । आरा हाउस के ऊपरी सिरा प पीपल,शीशम,बरगद सहित जंगली पेड़, लत्ता के जाल फइलल रहे जेकरा से ई ऐतिहासिक धरोहर खतरा में रहे । गौरतलब बा की आरा हॉउस में कुछ छात्र लोग के झुण्ड प्रतियोगिता परीक्षा के तैयारियों अहिजा बइठ के करे ला । अम्बा के सदस्य के मुहीम से एह लोग इतना प्रभावित भइल की ओहू लोग इ सफाई अभियान में आपन श्रम योगदान देलस । और फिर आरा हॉउस के छत से लेकर निचे तक के कूल्ह कमरा चकाचक भ गइल । सफाई खत्म होते ही आरा हॉउस के देखके धरोहर ले अनुभूति होत रहे । सफाई के ई लड़ाई में अम्बा के योगदान सांस्कृतिक के साथ साथ समाजिक भी बा । ई सफाई अभियान में शामिल लोग में अक्षर श्रेय, आलोक सिंह,विशाल,मंगलेश तिवारी,रणजीत कुमार, शशि केशरी, सोनू, विजय आनंद और ओ. पी. पाण्डेय सहित दर्जन भर के छात्र समूह रहे ।

पवन टून

बचपन के गंगुवा

मनोज कुमार

"टिकट...टिकट...?" ट्रेन में करिया कोट पहिरले एगो टीटी यात्री लोगन के टिकट के जांच करत रहे। ओही ट्रेन में राम प्रसाद चतुर्वेदी माट साहेब सफर करत रहलें। जब ऊ आपन पाकिट में हाथ दिहलें त पर्स ना भेंटाइल।

"अरे !" अचानक ऊ चिहा गइलें।

"का भइल ?" बगल में बइठल उनकर धर्मपत्नी पार्वती देवी पूछली।

"हमार पर्स गायब बा।" माट साहेब कुर्ता के उपरला पाकिट में हैरानी से देख के कहलें-"टिकट हम पर्स में ही धइले रहनी। बुझाता ट्रेने में कवनो चाईं हमार पर्स निकाल लिहलस?"

"हायराम, अब का होई ?" पार्वती देवी घबरा गइली-"मय पइसा त ओही में होई ?"

राम प्रसाद माट साहेब अपना धर्मपत्नी के आँख के आपरेशन करावे खातिर हावड़ा से चेन्नई जात रहलें। ऊ मूल रूप से बिहार के बेतिया जिला के रहे वाला रहलें। सरकारी इस्कूल में हेडमास्टर रहलें। लगभग दू साल पहिले रिटायर भइल रहलें। पत्नी के एगो आँख में कवनो खराबी आ गइल रहे आ लउकत ना रहे। हावड़ा में उनकर बड़ लइका काम करत रहलें। उहवें पत्नी के इलाज खातिर ऊ पिछला हफ्ता आइल रहलें। पता ना आँख में कवन बेमारी निकलल कि उहां के डाक्टर आगे आपरेशन खातिर चेन्नई रेफर कर देहलें। एही से डाक्टर से देखाये खातिर ऊ पत्नी के लेके चेन्नई जात रहलें कि ट्रेन में कवनो पाकिटमार उनकर पाकिट मार दिहलस।

"पइसा त खैर कुछ रहबे करे।" राम प्रसाद जी तनिक चिन्तित लहजा में कहनी-"बाकिर ओही में हमार वोटर आई कार्ड, एटीम कार्ड आ कई गो जरूरी कागज पत्तर भी रहे।"

"एही से हम जल्दी बिदेश ना जाये के चाहिलें।" पत्नी भुनभुनात स्वर में कहलीं।

"हमनी के कवनो बिदेश नइखी जी जात।" ई संकट के घड़ी में भी राम प्रसाद जी के होंठ पर एगो मुस्कान उभर आइल-" अपने देश में बानी जा !"

"एही से ट्रेन में चढ़ते-चढ़ते पाकिट कटा गईल।" पत्नी नाक-भौं सिकोड़ली।

"अब जवन होखे के रहे तवन भइल...।" उहां के कहनी-"हम देखत बानी का कइल जा सकेला ?"

"टिकट प्लीज !" तबे करिया कोट वाला टीटी उनकर लगे आके टिकट मांगे लागल।

"हमार टिकट तऽ...।" राम प्रसाद जी परेशान स्वर में कहनी-"केहू पर्स के साथे निकाल लेले बा।"

"कहाँ जाना है आपको ?" टिकट चेकर पूछलस।

"चेन्नई..." ऊ कहलें। फेनु आपन बात में आगे जोड़लें-"पत्नी के इलाज करावे खातिर।"

टीटी उनका के ध्यान से देखलस। राम प्रसाद जी के लागल कि ओकरा जइसे उनकरा बात प विश्वास नइखे। ऊ आगे कुछु अउर कहतें कि टीटी तनिक आश्चर्य से बोल उठल-"माट साहेब ?"

राम प्रसाद जी हैरान रह गइनी। इ के ह जे एगो अनजान जगहा प उनका के चिन्हता?

"रउआ हमके ना पहचननी?" टीटी पूछलस।

"हमके ध्यान नइखे पड़त बाबू।" उनकरा के कहे के पड़ल।

"कइसे पहिचानब? लगभग पनरह बरिस बाद रउआ हमके देखत बानी...!"

"गंगा...?" राम प्रसाद जी दिमाग पर जोर डाल के ओके पहिचाने के कोशिश करत कहनी।

"इ नाम त राउरे दिहल ह माट साहेब! जे हमके ई नाम दे सकेला ऊ आखिर हमके भुला कइसे सकेला?" एतना कहके टीटी झुक के श्रद्धा से उनकर पैर छू लिहलस।

"खुश रहऽ !" राम प्रसाद जी के यकीन ना होत रहे कि एतना बरिस बाद कवनो पुरान विद्यार्थी से एह रूप में उनका भेंट होई।

"हम राउर उहे गंगुआ हईं माट साहेब जे बचपन में इस्कूल छोड़ चुकल रहे। अगर रउआ ओह घरी हमनी के गांव में पढ़ावे ना आइल रहती त हमहूं आज हियां ना रहतीं बलुक कवनो होटले में बर्तन माजत रहतीं।" एतना कहिके ऊ उनुकर बगल के खाली सीट पर बईठ गइल।

"बचपन के गंगुआ आज केतना सयान हो गइल बा!" राम प्रसाद

मनोज कुमार

वाल्मिकी नगर , बिहार के रहे वाला मनोज कुमार जी , आखर से शुरु से ही जुड़ल बानी । पेशा से अध्यापक , कार्टुनिस्ट आ साहित्यकार मनोज कुमार जी भोजपुरी कार्टुन आ हिन्दी मे बाल साहित्य खाति जानल जानी । वर्तमान मे मनोज जी मोतिहारी बिहार मे रह रहल बानी ।

जी गद्गद् भाव से कहलें-"तू रेल में टीटी बन गइल बाड़ऽ! ई जान के तहरा से ज्यादे खुशी त आज हमके हो रहल बा।"

"सब राउरे आर्शीवाद हऽ माट साहेब।" ऊ विनीत भाव से कहलस-"रउआ इस्कूल के खेलकूद में हमके केतना प्रोत्साहन देत रहनी। आखिर में हम स्पोर्ट्स कोटा से रेलवे में टीटी बहाल हो गइनी।"

"ई त बहुत खुशी के बात बा।" राम प्रसाद जी अपना पत्नी से कहनी-"ई देखऽ! आपन एगो पुरान चेला भेंटा गइलें!"

"ई सब त ठीक बा बाकिर....।" पत्नी कहली-"राउर पकिटिया कटाइल त ओकर का होखी ?"

"का भईल रहे माट साहेब?" टीटी गंभीरता से पूछलस।

राम प्रसाद जी ओके सारा बात बता के कहलें-"हमार पर्स में लगभग बीस हजार रूपया, वोटर आईडी कार्ड, एटीएम कार्ड आदि रहे, ऊ सब कवनो चाईं ट्रेन में चढ़ला के बाद हमार पाकिट से निकाल लिहलस।"

"ई रूट में चाईं लोगन के गैंग कुछ ज्यादे ही सक्रिय बाटे। रउआ इत्मीनान राखीं। हम एह मामला में अभिये खोजबीन कराव तानी। दू -चार लोग बा आरपीएफ के नजर में। एको जने भेंटइहें त राउर पइसा आ समान सब मिल जाई।" चेला के आश्वासन पा के राम प्रसाद जी कुछ आश्वस्त भइलें।

गंगा आगे कहलस-"रउआ चेन्नई चल तानी त बेफिकिर हो जाईं। हम चलेब ओहिजा ले। उहां रहे के भी सब साधन बा। कवनो परेशानी ना होई।"

"चलऽ बढ़िया बा। बड़ा संजोग से तहरा से भेंट हो गईल। ना त आजू नीमन फिराक में पड़ल रहनी।" राम प्रसाद जी कहनी। ओकरा बाद गंगा उनुकरा के आराम करे खातिर कह के आगे बढ़ गइल।

ओकरा गइला के बाद राम प्रसाद जी के मानस पटल पर पनरह साल पुरान ऊ सारा दृश्य घूमे लागल जब बेतिया से उनुकर स्थानान्तरण बगहा-2 प्रखण्ड के दरूआबारी गांव में सहायक शिक्षक के रूप में भइल रहे। ऊ दोन नहर के किनारे बसल थरूहट जनजाति वाला एगो काफी पिछड़ा इलाका रहे। जहां ना पक्का सड़क रहे आ ना ही रहे के कवनो सुविधा। नजदीकी कस्बा भैंसालोटन ओहिजा से लगभग पाँच किलोमीटर दूर पड़े जहाँ कुछ दुकान आ गोलचैक नाम के एगो छोट बस पड़ाव रहे।

ओही चैक पे जब जब ऊ पहिला बेर बस से उतरले त खाना खाये खातिर एगो होटल में गइले। उहंवे पहिला बेर उनुकर नजर उहां टेबुल साफ करत एक दस बरिस के लइका पर पड़ल। मइल-पुरान कपड़ा ओकर देह प रहे। बाल अझुराईल बिखरल रहे। होटल मालिक के डांट सुनी के ऊ कबो एक टेबुल पर पोंछा मारे त कबो दूसरा पर। कबो दउर के बर्तन माजे जाये त कबो कवनो गाहक के पानी चहुंपाये जाये।

राम प्रसाद जी ओ लइका से ओकर नावँ पूछले।

"गंगुआ।" ऊ बतवलस।

"पढ़बो-लिखबऽ करेलऽ कि खाली इहां कामे करेलऽ ?" ऊ अगिला प्रश्न कइलें।

गंगुआ कवनो जवाब ना दिहलस। ऊ चुपचाप जूठ बर्तन उठा के ओके धोये चल गइल। राम प्रसाद जी होटल के मालिक से कहलें, "एकर पढ़ाई-लिखाई भी कुछु होला कि दिन भर मजूरिये करावेलऽ ?"

"ई लवंडा का पढ़ी साहेब ?" होटल वाला कहलस-"तीन-तीन हाली त इस्कूल छोड़ चुकल बा।"

"ऊ काहे ?" राम प्रसाद जी आश्चर्य से पूछनी।

"एकरा पढ़ाई में तनको मने ना लागेला। बाप-महतारी दूनो मजूरी करेले। एकर संगत बिगड़ गइल बा। बवाली लइकन के संगे दिन-दिन भर बउआइल चलेला। इहां काम कइके दू गो पइसा कमा लेला, इहे कम नइखे।"

"कहां के रहे वाला ह ई ?" राम प्रसाद जी आगे पूछनी।

"इहां से डेढ़ कोस पे दोन नहर के किनारे दरूआबारी एगो गांव बा। उहंवे से ई आवेला।" होटल वाला बतवलस।

"दरूआबारी...?" राम प्रसाद जी चौक गइलें। उहे गांव में त उनकर ट्रांसफर भईल रहे।

"रउआ कवन सोच में डूब गइनी जी?" अचानक पत्नी उनका के टोकली त ऊ आपन सोच से बाहर अइलें। तबे ट्रेन के सीटी बाजल आ ओकर रफ्तार धीरे-धीरे कम होखे लागल। शायद कवनो स्टेशन आवत रहे। बाहर अंधेरा छाइल रहे। कहीं-कहीं एगो-दूगो बत्ती जरत दिखे।

"देखीं केतना टाइम हो गइल बा।" पत्नी कहली-"खाना खाये के बा कि ना?"

"हाँ-हाँ। चल निकालऽ...!" उहां के कहनी-"हमके ई लइका के बारे में कुछ पुरान बिसरल बात याद आवत रहे। ओही सोच में डूब गइल रहनी।"

खाना-पीना भइला के बाद बर्थ पर बिछौना लाग गइल। सुते के तैयारी होखे लागल। रात के सन्नाटा में ट्रेन बीच-बीच में सीटी बजावत पूरा रफ्तार के साथ भागत रहे। बर्थ पर लेटते के साथे पत्नी त सूत गइली बाकिर राम प्रसाद जी के आँखि से नींद जइसे कोसन दूर रहे।

उहे मैला-कुचैला लइका फेर से आंखि के आगे नाचे लागल।

बर्तन माजत गंगुआ। पोंछा लगावत गंगुआ। मालिक के डांट सुनत गंगुआ। फाटल-चिटल कई गो पेवन वाला कपड़ा पहिनल दउर-दउर के काम करत गंगुआ। ऊ लइका में अइसन कुछु खास ना रहे जे केहू के नजर में चढ़ सके बाकिर राम प्रसाद माट साहेब जब भी कवनो अइसन लइका के बाल मजूरी करत देखसु त उनुकरा हिया में एगो टिस उठत रहे। गंगुआ जइसन जाने केतना लइका बाल मजूरी के खिलाफ बनल कानून के मुँह चिढ़ावत रहे।

राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय दरूआबारी तक जाये के

कवनो सवारी ना रहे। पांच किलोमीटर के सफर राम प्रसाद जी के पैदल पूरा करे के पड़ल। दोन नहर के किनारे-किनारे घना जंगल के बीच से रास्ता रहे।

विद्यालय में दू गो शिक्षक कार्यरत रहलें। एक हेडमास्टर मक्खन यादव रहलें जे नाम के उलट एकदम कड़ियल मिजाज वाला रहलें आ लइकन के सोझ राखे खातिर हरमेशा आपन हाथ में एगो मोटहन बेंत के छड़ी राखत रहलें। दूसर अंजनी कुमार वर्मा नाम के नवा बहाल शिक्षक रहलें जे पहिले अंग्रेजी मीडियम के प्राइवेट इस्कूल में पढ़ावत रहलें। ऊ आपन नाम छोट क के ए.के.वर्मा लिखें आ सालों भर लइका लोग के वर्ड मीनिंग याद करावें। गांव भर में ऊ अंग्रेजी माट साहेब के नाम से जानत जात रहलें।

पहिले ई इस्कूल प्राइमरी रहे आ इहां पंचवा तक ही पढ़ाई होखे। पिछला साल से उत्क्रमित होके इहां मीडिल तक क्लास चले लागल रहे। इस्कूल में लगभग चार सौ लइका के नावँ लिखाइल रहे बाकिर उपस्थिति दू-ढाई सौ से ऊपर कहियो ना जाये।

राम प्रसाद जी जब एह बात के तरफ हेडमाटरसाहेब के ध्यान दिलवलें ते ऊ दू टूक कहलें, "चतुर्वेदी जी, रउआ जिला से इहां आइल बानी। ई देहात हवे। इहां पढ़ाई ना कमाई ज्यादे जरूरी ह। लइका कुछ बड़ भइल ना कि ऊ कमाये खाति दिल्ली, पंजाब आ गुजरात चल जायेला। जे इहां रहेला ऊ मजूरी करके आपन पेट भरेला। अइसन में गांव-देहातन के इस्कूल में रउआ हंड्रेड परसेंट अटेंडेंस खोजेम त ऊ भला संभव बा ?"

"हम हंड्रेट परसेंट अटेंडेंस नइखी खोजत।" राम प्रसाद जी कहनी, "लेकिन जवन संभव होखे वाला बा, ऊ त हमनी के कइ सकेनी।"

"राउर का मतलब बा?" हेडमाटसाहेब पूछनी।

राम प्रसाद जी आपन बात रखनी, "हम राउर कहल सब बात से सहमत हईं। ई देहात हवे आ पिछड़ा इलाका भी बा। मजूरी कईल इहां के लोगन के मजबूरी भी बा। इहे बात हमनी के इहां सबके समुझावे के पड़ी कि का पुश्त दर पुश्त ई लोग मजूरिये करे के चाही कि अपना लइका-लइकी के पढ़ा-लिखा के ओके कुछ नीमन जिनगी भी देहे के चाही? इस्कूल में आजकल सरकार के तरफ से भी केतना योजना चल रहल बा कि सभे केहू पढ़ो। अब त इस्कूलन में खाना भी बने लागल ह। किताब आ छात्रवृति भी मिलत बा। अगर हमनी सब मिल के गांव में शिक्षा समिति आ अभिभावक लोग के साथ बराबर बैठक करीं त ई लइका लोग जवन इस्कूल छोड़ के जा रहल बा ओके बहुत हद तक कंट्रोल कर सकेनी आ छीजन के रोक सकेनी।" कहत-कहत उनुकरा आँखि के सोझा गंगुआ के चेहरा नाच गइल।

"ई सब रउआ आज कहत बानी।" हेडमाटसाहेब कहनी, "आ हम बत्तीस साल से इहे सब कर रहल बानी। इस्कूल के बैठक में केहू कबो झांकहू ना आयेला। शिक्षा-दीक्षा से केहू के कवनो लेना-देना नइखे। एक-दू गो लुच्चा लोग समिति के अध्यक्ष-सचिव बन जाला जेकरा कि इस्कूल के फंड से खाये-पीये खातिर कुछ पइसा वइसा मिल जाव, बस अतने से मतलब रहेला।"

"सब जघे अइसन बात नइखे। नीमन लोग भी बाड़ें एह धरती पर जे दूसर के चिन्ता करेलें।" राम प्रसाद जी कहनी।

"जरूर होइहें बाकिर इहां केहू अइसन नइखे।" हेडमाटसाहेब उपहास के अंदाज में कहनी-"रउआ लाख सिर पटक लेब बाकिर इहां के लोग के कवनो फर्क ना पड़ी।"

"हम अपने सारा गांव में घूमब। लइकन के महतारी-बाप से मिलब। उनुके एक हाली समुझाये के कोशिश करब। रउआ एगो बैठक राखीं आ बाकि हमरा पर छोड़ दीं।" राम प्रसाद जी कहनी।

एह बात पर हेडमाटसाहेब के मौन स्वीकृति मिल गइल। दू दिन बाद बैठक राखल गइल। सब केहू के सूचना देहे आ बुलाये के जिम्मा राम प्रसाद जी स्वयं लिहलें।

ओही दिने सांझी के बेरा ऊ गांव के कुछ लोगन से भी मिललें। बैठक के बारे में बतवलें। फेरू पूछत-पूछत गंगुआ के घर चहंुपले।

गंगुआ के बाप के नावँ घूरा महतो आ माई के सुनरी रहे। दूनू ओही घरी मजूरी कर के आइल रहलें। उहंवे दुआर पर एगो टूटल खटिया पड़ल रहे जे पर राम प्रसाद माटसाहेब बइठ गइलें। बातचित से पता लागल कि गंगुआ चार भाई-बहिन में सबसे बड़ बा। ओकरा से छोट सात-आठ साल के लइकी नरायनी रहली जे अपना गोदी में दू साल के भाई के खेलावत रहली। नरायनी से छोट पांच साल के एगो अउरी बहिन रहे जे ओहिजा धूर में खेलत रहली।

"गंगुआ होटल में काम करके केतना ले कमा लेला?" माट साहेब ओकर बाप से पूछनी।

"कुछो पता ना चलेला माटसाहेब।"

"काहे ?"

"जे कमायेला, घर में ऊ कहां देला? अपने खा-पी के उड़ा देला। एकदम आवारा हो गइल बा। जे मन में आवेला से करेला।"

"जब अभिये से ई हाल बा त आगे चल के का होई? का करी ऊ ?"

"अब काथि कहल जाव माटसाहेब!" गंगुआ के बाप एतना कहके चुपा गइल।

"ओह के इस्कूल काहे ना भेजेलऽ ?"

"ऊ इस्कूल में टिकबे ना करेला। रोज भागी आवेला। पढ़े-लिखे में ओकरा के तनको मन ना लागेला। एह से त निमने बा कि केहू तरे आपन पेट भर लेला।" घूरा महतो के बुझाइल ना कि ऊ अउरी आगे का बोलो ?

राम प्रसाद माट साहेब ओके समुझा के कहनी, "एह तरे से सोचबऽ त कइसे कार चली ? अरे पेट त आपन कुक्कुर-बिलाई भी

www.bhojpurisahityangan.com

भर लेला। अभी ऊ लइका के उमिर बा कि कुछो पढ़-लिख जाओ। ओकर सही जघे इस्कूल बा ना कि मजूरी कइल।''

''अब ऊ इस्कूल जाये के चहबे ना करेला त हम का कर सकीलें माट साहेब ? रउये बताईं।''

''काल तू ओके लेके इस्कूल में आव। ओकर नावँ लिखाई। ऊ अब इस्कूल छोड़ के ना भागी। हमार भरोसा रखऽ।'' राम प्रसाद माट साहेब ओके आश्वासन दिहलें। फेनु उनुकर नजर लइका खेलावत नरायनी पर पड़ल त पूछले, ''ई पढ़े जायेली कि ना ?''

''ई पढ़ि के का करी माट साहेब ? ई त लइकी बिया।''

''लइकी बिया त एके पढ़े के अधिकार नइखे ?''

''ई घर में रह के दूनू लइका आ लइकी के संभालेली। घर के अउरो कार भी करेली। इहो इस्कूल जाये लागि त फेनु इहां के रही ?'' घूरा बोललस-''हमनी के त दूनो बेक्ति मजूरी करे चल जायेनी।''

''आपन दूनू लइकी के नावँ पहिले इस्कूल में लिखावऽ।'' माट साहेब धूर में खेलत घूरा के दूसर लइकी जेकर नावँ गोमती रहे, के देख के कहनी- ''ओकर बाद अपने कवनो रास्ता निकली। इयाद राखऽ, लइकी के पढ़ावल लइका से भी ज्यादे जरूरी ह।''

अगिला दिन इस्कूल में शिक्षा समिति आ अभिभावक लोग के संगे बैठक भइल। हेडमाटसाहेब ई देख-देख के हैरान होत रहलन कि पहिले बोलवला पे कबो दर्शन ना देहे वाला समिति के सदस्य आ अभिभावक लोग के अच्छा खासा जुटान भइल रहे।

एह बैठक में इस्कूल में नामांकित सभे लइकन के रोज इस्कूल आवे पर जोर दिहल गइल। कई गो लइका आ लइकी के इस्कुल में नावँ भी लिखाइल। गंगुआ के नावँ ओकर महतारी-बाप 'गंगू' धइले जे बिगड़ के गंगुआ हो गइल रहे। एही नावँ से ओके सभे केहू बोलावस। राम प्रसाद माट साहेब ओके सुधार के 'गंगा कुमार' कइ दिहलें आ उमिर के हिसाब से ओकर नावँ छठा वर्ग में लिखवलें।

उनुके पता रहे कि अगर इस्कूले में अइसन लइका लोगन के मन ना बहलावल गइल त ई लोग फेनु ना टिकिहें। एही से शुरू में लइका लोग के पढ़ावे के बदले ज्यादा से ज्यादा हंसावल-खेलावल शुरू कइलें। कबड्डी, फुटबाल, किरकेट, खो-खो, लंबी कूद, ऊंची कूद, रिले दौड़ आदि रोज होखे। लइका लोगन के अउर का चाहीं। सभे के इस्कूले में मन लागे लागल। ऊ कवनो विषय भी पढ़ावें त अइसन किस्सा के लस्सी में मिला के बतावें के लइकन के माजा आ जात रहे। कई तरह के गतिविधि आ खेल आधारित शिक्षा प्रणाली के अपना के ऊ लइकन के इस्कूल से जोड़े राखे में सफल रहलें।

पढ़ाई के दौरान भी ऊ स्थानीय भाषा जवन कि भोजपुरी रहे, के प्रयोग पर जोर देत रहलें। क्लास में भोजपुरिये में बोलें बतिआवें आ पढ़ावें। ई बात लइका लोगन खातिर नया रहे काहे से कि क्लास में दूसर माटसाहेब लोग हिन्दी के प्रयोग करत रहलें।

एक दिन के बात ह। हेडमाटसाहेब आपन क्लास लेत रहलें। तीन गो लइका के बेंच पर खड़ा कइले रहलें। उनुकर हाथ में बेंत के छड़ी यमराज के तलवार के लेखा बुझात रहे। ऊ तीनू लइका में एगो गंगा कुमार भी रहलें। पता चलल कि ऊ तीनू के हिंदी के किताब ढंग से पढ़े भी ना आवेला। हेडमाटसाहेब जब आपन बेंत से केहू लइका के मारें त पूरा इस्कूल सूने।

राम प्रसाद माट साहेब अइसन नौबत आए से पहिले कार्यालय में हेडमाटसाहेब से निहोरा कइलें कि एह तरे से लइकन के ना मारल जाव। ना त ई लइका लोग इस्कूल के नावँ से बिदके लागी। इनके कवनो भी बात प्यार से समुझावल जाव।

उनुकर बाति के हेडमाटसाहेब पर उलटा असर भइल। उहां के चिढ़ के कहनी, ''रउआ त इस्कूल के अनुशासन खराब कर रहल बानी। ई लइका लोग प्यार से ना बलुक मार के डर से ही कुछु पढ़िहें। दू लाइन हिंदी में दे दऽ त चार दिन में भी इयाद ना होला। एगो हमनी के जमाना रहे, ना पढ़ीं जा त देंह पे छड़ी के छड़ी टूटत रहे आ घरे भी चप्पल-खड़ाऊँ से मरम्मत होखे। ई लोग अइसे समझे-बूझे वाला जीव ना ह। मार के आगे भूत भी भागेला।''

''भूत भगिहें चाहे ना'' राम प्रसाद जी कहनी, ''बाकिर अइसे ई लइका लोग इस्कूले से जरूर भाग जइहें।''

ई बात हेडमाटसाहेब के पसन्द ना पड़ल। एतना दिन में कई गो अइसन वजह निकल आइल रहे जवना से विचारधारा में टकराव होखे लागल रहे। लइकन के बीच आ गांव में भी रामप्रसाद जी के मान बढ़े लागल रहे। आज मौका मिल गइल। उहां के कहनी, ''चतुर्वेदी जी, हम रउआ से एगो बात कहि के चाहब। देखीं, ई इस्कूल ह। लइका के घर ना ह। हियां हिंदी के सिलेबस चलेला। राष्ट्रभाषा में ही पढ़ाई-लिखाई होखो त नीमन रही। कबो कभार तनी मनी चलल त चलल, बाकिर हर बखत लइका के स्थानीय बोली में ही पढ़ाई होखो इहो ठीक बात नइखे। ई हमनी के पाठ्यक्रम में नइखे। जवन पाठ्यक्रम में बा, ऊहे चले। बाकि फालतु कुछु एक्सपेरिमेंट करे के जरूरत ना हऽ।''

''हमके ई नइखे बुझात कि राउर मुंह से ई बात काहे निकलल?'' राम प्रसाद जी सहज भाव से कहनी, ''रउआ वरिष्ठ बानी। हमरा से बेसी अनुभव बा। बाकिर ई स्थानीय बोलचाल के रउआ का बूझऽ तानी। हम ना त हिन्दी के विरोधी बानी आ ना ही अंग्रेजी के। ई दूनू जरूरी बा। बाकिर एहके नीमन से सीखे खातिर सही माध्यम मातृभाषा ही हो सकेला। भोजपुरी इहां घर-घर में बोलल जाला। जवन भाषा लइका घर में बोलेला ओह में ऊ कवनो बात आसानी से सीख सकेला। एकर जड़ जेतना मजबूत होई, सीखे के क्षमता ओतने बढ़ी। येके हलका कऽ के जन आंकि।''

हेडमाटसाहेब आगे कहलन, ''अंग्रेजी वला वर्मा जी के भी रउआ से एगो शिकायत बा कि रउआ उनुकर सब्जेक्ट में इंटरफेयर करेनी। ऊ जइसे पढ़ावेनी ओह में जब हमके कवनो आपत्ति नइखे त फेनु रउआ काहे टोका-टाकी करेनी ?''

''ई टोका-टाकी ना बलुक उनुका के हम एगो सुझाव देले रहनी।

इहे कि अंग्रेजी होखे बा संस्कृत, कवनो नया विषय के जबरन थोपला पर लइका के बड़ा कठिनाई होखेला। ऊ शुरूआत में ओह से दूर भागे के चाहेला। बाकिर ओमे आपन भाषा के आत्मीयता मिला देहल जाव त उहे बात लइका आसानी से समझे लागी। तोतारटंत विद्या कवनो उपयोगी चीझ ना ह। बात के मायने समझल जरूरी होला।" राम प्रसाद जी एतने पर ना रूकनी, आगे कहनी- "गंगा जइसन लइका बेरी-बेरी इस्कूल से काहे भाग जाएला? कारण साफ बा कि ओके अपना मन के लायक हियां कुछो ना भेंटायेला। भाषा के भय, मार खाये के डर, अनुशासन के नावँ पे तनाव के माहौल ई सब से लइका के मन कुंठित हो जाला। ओह के ई सब कुल्ही से आजाद करे के पड़ी। तबे ऊ इस्कूल में टिक भी सकेला आ स्वतंत्र माहौल में कुछ सीख भी सकेला।"

"अब त रउआ भाषण दिहे लगनी।" हेडमाटसाहेब तनिका रूष्ट स्वर में कहनी, "हमार उमिर बीत गइल। अब ले जाने केतना लइका बड़-बड़ ओहदा पे चहंुप चुकल बाड़ें। शिक्षा में ज्यादे प्रयोग कइल ठीक नइखे। एक त सरकार सत्तर गो प्रोग्राम इस्कूल में चलावत बिया। पहिले इस्कूले में चाउर, गेंहू बंटात रहे। ओह पर जीउ ना भरल त अब चार सौ लइकन कुल्ही के रोज खाना बनवावऽ, खियावऽ। रोज नया-नया हई रिपोर्ट द, हउ रिर्पोट द। सीआरसी मीटिंग, बीआरसी के मीटिंग। लइकन के टूर करावे। भोटरलिस्ट के काम करऽ। इलेक्शन करावऽ। जनगणना भा पशुगणना करऽ। ओकरा बाद जब कुछु बाकिर बच जाये त लइकन के संगे माथा फोड़ऽ। जे नइखे पढ़े वाला ओहू के घरे जा के इस्कूल आये खातिर निहोरा करऽ।" हेडमाटसाहेब अउर भी जाने का-का कह के आपन मन के सारा जमल गुबार निकालनी।

उनुकर सगरी बात खतम भइल त राम प्रसाद जी एतने कहनी, "लइकन के हित में जवन बा उहे कार हो रहल बा। रउओ इहे चाहिले। हमहूं इहे चाहिले।"

बहस खतम भइल।

जब परिणाम नीमन निकलेला त लोगन के नजरिया में भी फर्क आ जाएला। कुछ समय बीत गइल। इस्कूल में उपस्थिति बढ़े लागल। गंगा के महतारी-बाप के भी आश्चर्य होखत रहे कि अब ऊ रोज इस्कूल जायेला। आधा बेरा से भी ओकर भागे के जवन आदत रहे, ऊ छूट गइल रहे। असल में राम प्रसाद माट साहेब कुछ लइकन के टीम बनवले रहलें जे अंतिम दू घंटी में खेल के अभ्यास करें। खेलकूद में विद्यालय स्तर के साप्ताहिक प्रतियोगिता करावें। कबड्डी में गंगा के विशेष रूचि रहे। ई खेल के ऊ अच्छा खिलाड़ी निकलल। जब विपक्षी खेमा में जाये त एगो न एगो खिलाड़ी के मार के आए। आ जब विपक्षी खेमा के कवनो खिलाड़ी आये त खूब होशियारी के साथ ओह के अइसे दबोचे कि ऊ बीच के लाइन छू ना पावे।

एही बीच संकुल स्तरीय बालमेला के तहत तरंग प्रतियोगिता के आयोजन भइल। एह में उत्क्रमित मध्य विद्यालय दरूआबारी के टीम प्रथम स्थान पर आइल। ओमें गंगा आपन बेहतरीन प्रदर्शन के बदौलत इस्कूल के हीरो बन गइल।

बाद में ई टीम प्रखंड स्तर के प्रतियोगिता में भाग लेहे खातिर बी.आर.सी. बगहा गइल। उहां से गंगा के जिला स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता में भाग लेहे खातिर चुनल गईल।

जिला स्तर के तरंग प्रतियोगिता में बी.आर.सी. बगहा 2 प्रथम स्थान पर आइल। गंगा के बढ़िया खेल के बदौलत ओकर चुनाव जिला के टीम में हो गइल। ऊ टीम राज्य स्तरीय स्पोट्स मीट तरंग प्रतियोगिता में भाग लेवे खातिर पटना गइल।

उहंवा कार्यक्रम के शुभारम्भ शिक्षामंत्री के द्वारा भइल। तीन दिन तक कई गो प्रतियोगिता चलल। कबड्डी में बेतिया जिला के टीम प्रथम स्थान पर आइल। राज्य के मुख्यमंत्री के हाथो विजेता टीम के ट्राफी आ हर खिलाड़ी के मेडल मिलल। अगिला दिन के अखबार में गंगा के फोटू पहिलका पेज पर छपल रहे। सभे केहू ओकर खेल प्रतिभा के सराहना करत रहे।

जब ऊ पटना से वापिस आइल त ओके देखे खाति गांव के कई लोग आ इस्कूल के साथी-संघाती सभे दुआरे पे जुटल रहे। गांव के लइका नावँ कमा के लौटल रहे।

अगिला दिन इस्कूल में एगो विशेष कार्यक्रम भइल जेमें गंगा के मेडल दे के सम्मानित कइल गइल। मंच पर से हेडमाटसाहेब कहलें, "केहू सोचले ना रहे कि गंगा कुमार जवन कि कबो इस्कूल छोड़ देले रहलें ऊ एक दिन स्टेट लेवल पे जाके आपन गांव आ इस्कूल के नावँ रौशन करिहें। एह खातिर हम विशेष तौर पे राम प्रसाद चतुर्वेदी माट साहेब के भी धन्यवाद दिहल चाहेब कि उहां के एगो प्रतिभा के चुन के तराशे के कार कइनी आ ओके चमकवनी।"

पूरा सभा में ताली बाजे लागल ।मंच पर गंगा राम प्रसाद माट साहेब के चरण में झुक गइल आ भर गला से कहलस, "माट साहेब, हम आपन इस्कूल के महत्व बूझ गइल बानी। रउआ ना रहती त हमके ई दिन देखे के ना मिलत। हम आजुओ दोकानी पर बर्तन मासत रहती। अब हम पढ़ेम। खूब मन लगा के पढ़ेम। हमके राउर आशीर्वाद चाहीं।"

माट साहेब ओके सिर पे हाथ फिरावत कहनी, "खूब आगे बढ़ऽ ! जिनगी में खूब तरक्की करऽ !"

भीड़ में लोगन के बीच बइठल गंगा के माई आ बाबूजी के लोराइल आँखि में खुशी आ उम्मीद के दिया टिमटिमात रहे।

एकरा बाद खेल के अलावा पढ़ाई में भी गंगा में काफी सुधार भइल। ई एगो छोट घटना रहे बाकिर एह से प्रेरणा लेके ऊ आगे बढ़े के जइसे संकल्प ले लेले रहे। राम प्रसाद माट साहेब ओके बराबर प्रोत्साहित करत रहलें। खेलकूद में ओके बराबर कोई न कोई मेडल मिलत रहे। तीन साल बाद जब ऊ आठवां पास क के हाई इस्कूल

में गइल तब राम प्रसाद माट साहेब के भी दूसर जघे हेडमास्टर के रूप में प्रमोशन आ ट्रांसफर के चिट्ठी आ गइल रहे। जब ऊ गांव से चललें त उहां के लोगन के उदासी देखते बने। सभे केहू लोराइल आँखि से उनुका के विदा कइलस। गंगा उहे बस अड्डा तक माट साहेब के छोड़े आइल जंहवा पहिला बेर होटल में काम करत उनुका से भेंट भइल रहे। ई ऊ दूनू के आखिरी मुलाकात रहे। एकरा बाद फेनू कबो मिले के मौका ना मिलल।

अचानक ट्रेन के एगो झटका लागल। माइक पे एनाउंसमेंट होत रहे। शायद कवनो स्टेशन आइल रहे। आपन इयाद में डूबल राम प्रसाद माट साहेब के ध्यान टूट गइल। ऊ खिड़की के बाहर देखनी, प्लेटफार्म पे दूधिया लाइट के खूब अँजोर रहे। ढेर सारा लोग हेने से होने जात रहे। पार्वती देवी आपन बर्थ पे निश्चिंत हो के सूतल रहली।

आज लगभग पनरे बरिस के बाद अचानक ट्रेन में ओही लइका

आखर फेसबुक के 2 साल

सदस्य
18,000 +

पोस्ट रीच
25,000 +

कूल्ह भोजपुरी लेख पोस्ट
5,000 +

भोजपुरी किताब से परिचय
21

आखर पे भोजपुरी लेखक/लेखिका के संख्या
100 +

हर पोस्ट के पढे वाला लोगन के रोज के संख्या -
400 +

रोज पेज प पोस्ट होखे वाला लेख कविता गीत गजल के पढे वाला के संख्या -
2000 +

घोड़ा

अनन्या प्रसाद

पंचगनी में जब हम बइठनी घोड़ा पर
दू-तीन मिनट खातिर लागल जईसे -हम पलट के गिरब
पर जब घोड़ा चले लागल
तब हमार तनी हिम्मत बंधल -आ चलते चलते
अईसन दोस्ती हो गईल घोड़ा से
जईसे एगो कहानी में
एगो बच्चा के शेर से भईल रहे !

एक हाथ से हम लगाम पकड़नी
आ दोसरा हाथ से हम घोड़ा के गर्दन
के सहलावे लगनी
पर जब हम छोडत रहुवीं तब ऊ
सहलावे के इंतजार करत रहुवे !
ई घोड़ा भाड़ा पर चलता
बाकिर संगमरमर अईसन
उजर चमकत देहवाला ई घोड़ा
का सोचत होई ?
ओकरा गर्दन में एगो घंटी
के बाजल आउर ओकरा, टाप के आवाज़ –
हमरा मन के बात के सहारा देत रहे !

ऊ चमकत घोड़ा पर हमरा
बहुत मोह लागल
जब लौटे के समय भईल
तब अचानक हमार हाथ
ओकरा गर्दन पर से उठ गईल—आ घोड़ा रूक गईल!
हम सोचवीं घोड़ा काहे रूक गईल
तब दिमाग में एगो बात आईल
कि घोड़ा हमरा से आपन गर्दन
सहलवावे के चाहता !

जब हम ओकरा सहलावत रहुवीं—तब हम सोचुवीं कि
ए बेचारा अनबोलता पशु पर का बीतत होई?
सैलानी आवSता जाता
ओकरा पर सवारी करता , पइसा मालिक कमाता
लेकिन ऊ घोड़ा के का मिलता ?

खुशी

ज्योत्स्ना प्रसाद

खुशी पुरइन के पात पर पड़ल
ओस के वोह बूँद नाहिन ह जे
हीरक-कण नाहिन झिलमिलात
मानव- मन में पलभर में न जाने
केतना आनन्द के फूल खिला देला।

लेकिन दूसरे ही पल ओह
पुरइन के पात पर थिरकत-नाचत
ऊ ओस कण जइसे सहज ही
ओकरा पर से लुढ़क ओकरा से
अपना के दूर,बहुत दूर कर लेला।

सूरज के तपिश भी
ओकरा एह सुख-संसार में,
अपना ताप के प्रचण्ड आग से
ओकर बचल-खुचल कसर भी
एह कदर पूरा करे -
जवना से ओकरा वोह ख़ुशी के
एहसास ही ना मिटे बल्कि
अवशेष के निशान तक मिट जाये।

मानव-जीवन में ख़ुशी भी ओही
ओस के बूँद नाहिन क्षणभंगुर
आ बेदर्द होला जेकर आयु -
कई बार त एतना कम होला कि
चेहरा पर ख़ुशी के स्मित-रेखा
अभी खींच भी ना पवले रहेला
आ ऊ अपना परिवार-समाज के
पीड़ा-प्रतारणा-अवहेलना के नीचे दब
हमेशा-हमेशा खातिर दम तोड़ देला ।

www.bhojpurisahityangan.com

पाठक कोना

राउर बात

अबकी बेर के आखर पत्रिका के डोमकच पढ़नी हवे । ई बारात गईला के बाद घर आ टोला माहाला के औरत लो के रात भर के कार्यक्रम रहेला । जवना में ऐगो हईहो गीत गावल जाला । सबकर जलुआ इहल बिहल हमर जलुआ बाड़े कुवार । टक्का ढेबुआ देतु ए अम्मा जलुवा के करती विवाह ।

● सिसोदिया कृष्णा , सिवान , बिहार , मुम्बई

आखर के जरिये भोजपुरी गद्य साहित्य के विकास हो रहल बा । बतकूचन में समसामयिक विषय पर वैचारिक विमर्श आ प्रमोद तिवारी के लेख सब में साहित्य मे जवन व्यतिक्रम आ गइल बा, ओह पर विमर्श बढ़िया ढंग से आ रहल बा.लोको साहित्य पर मजगर सामग्री पढ़े के मिलत बा.संपादक प्रशंसा के पात्र बाड़ें ।

● डा. ब्रजभुषण मिश्र

आपन भाषा केहुके मोहताज ना होला । आपन भाषा हमनी के गौरव ह । बाकी आखर ईगो पत्रिका ना ह ई हमार भोजपुरी के क्रांति के अग्रदूत ह ।

● मिहिर शांडिल्य

हम पहिलका बार एह पत्रिका के न्यूज़ हंट एप पर देखनी, का कहीं हम ! मन ख़ुशी से गदगदा गइल । बहुत अच्छा लागल । पढ़ला के बाद अइसन लागल की हम अपना घरे पहुँच गइल बानी । खुशी से आँख में आसूं आ गइल । एह प्रयास के हम बहुत सराहना करत बानी । आ, एकरा खातिर रउआ लोग के बहुत बहुत धन्यवाद देत बानी।

● संतोष सिन्हा

बड़ा नीमन लागल इ पत्रिका । भोजपुरी के का कहीं एइसन पत्रिका के त हिन्दियो मे अभाव बा। सराहे जोग बा इ प्रयास

● रविंद्र नाथ पांडे

आखर के सब लोगन के धन्यवाद । आखर के पढ़ के मज़ा आ गईल । बाकी एगो बात पुछे के रहे कि का एह पत्रिका के छापल कॉपी कहीं से मिली जेह से हम एकरा के औरी लोगन के दे सकीं और औरी लोगन के एह पत्रिका के पड़े खातिर बोल सकीं । यदि कौनों उपाय ब त जरूर बताईं औरी ओकर का दाम होखी उहो बताईं । भोजपुरी औरी राउर प्रशंसक ।

● संजीव मिश्र

भोजपुरी साहित्य के संभारे खाती आ नया ऊंचाई देवे खाती राउर सहयोग के जरूरत बा । भोजपुरी में लिखीं आ "आखर" के साथे भोजपुरी साहित्य के बढ़ावे में सहयोग करीं ।

~आखर परिवार

लेखक कोना

निहोरा

जय भोजपुरी,

माई, मातृभाषा आ मातृभूमि के कवनो विकल्प नइखे। इनका आँचर के नीचे जवन सुख के अनुभुति होखेला ऊहे स्वर्ग के सुख हऽ। रोजी-रोटी के मजबूरी आउर भविष्य के सुरक्षा खाति तनि बेसी कमाये के आशा में ना चाहते ढेर लोग अपना माई आ माटी से दूर बा । एह कमी के ना भरल जा सकेला बाकि मातृभाषा से दूरी के पाटे के काम आखर कर रहल बा।

आखर के नेंव भी एही उद्देश्य के पूरा करे खाति राखल गइल बा। आखर रउआ सभे से बा आ रउआ सभे खाति बा। इ राउर आपन मंच हऽ जहाँ रउआ आपन माई, माटी आ मातृभाषा भोजपुरी से जुड़ल अनुभव, कथा कहानी, व्यंग्य, संस्मरण, रिपोतार्ज, गीत-गज़ल, कविता, चित्रकारी भेज सकत बानी।

भोजपुरिया क्षेत्र नवम्बर महीना मे अपना पीढी दर पीढी से चलल आ रहल लोक आस्था के माहन परब छठ पुजा के मनावे जा रहल बा। नवम्बर मे ही दिवाली, गोधन कुटाला आ पीड़ीया परब भी परेला। माने नवम्बर महीना भोजपुरियन खाति बहुत खास महीना ह। बाल दिवस भी एही महिना में आई।

एह से आखर के अगिला अँक (नवम्बर 2015) खाति विषय बा - भोजपुरी भाषा आ साहित्य मे सांस्कारिक, सांस्कृतिक चेतना आ भोजपुरी मे बाल साहित्य। एह सब विषय के केंद्र मे राखि के रउवा सभ के लेख कविता गीत गजल आदि के स्वागत बा।

रउवा सभ से निहोरा बा कि आपन अगिला लेख एहि बिंदुअन प केंद्रित कई के लिखी जवना से बेसी से बेसी लोग भोजपुरी भाषा, क्षेत्र, इतिहास ,संस्कृति , संस्कार , साहित्य आ वर्तमान से आपन परिचय करा सको। अगर एह मुख्य विषयन से हटि के भी कुछ लेख कविता गीत गजल बा त भेजी।

रचना भेजे के कुछ जरुरी नियम -

- आपन मौलिक रचना युनिकोड फॉन्ट/कृतिदेव फॉन्ट में टाइप करके भेजीं।
- रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार अपने से प्रूफ रीडिंग जरुर कर लीं। कौमा, हलंत, पूर्णविराम पे विशेष ध्यान दीं। रचना में डॉट के जगहा सिर्फ पूर्णविराम राखीं।
- ध्यान रहे राउर रचना में कवनो असंसदीय आ अश्लील भाषा भा उदाहरण ना होखे।
- राउर रचना के स्वीकृति के सूचना मेल भा मैसेज से दियाई।
- रचना के साथे आपन पासपोर्ट साइज के फोटो आ आपन परिचय (नाम, पता, कार्य आ आपन प्रकाशित किताबन के बारे में यदि होखे त) जरुर भेजीं।
- रचना भेजे के पता बा-

aakharbhojpuri@gmail.com

- पत्रिका खातिर राउर हाथ के खींचल फोटोग्राफ, राउर बनावल रेखाचित्र, कार्टून जे विभिन्न विषय के अनुरूप होखे, उहो भेजीं।
- छोट-छोट लईकन के कलाकारी के भी प्रोत्साहित करे खातिर स्थान दियाई। ओहनी के लिखल रचना भा चित्र भेजीं|

www.bhojpurisahityangan.com

आखर

भोजपुरी ई -पत्रिका

ISSN 2395-7255

ISSN 2395-7255

www.aakhar.com www.facebook/Aakhar @aakharbhojpuri